श्री व्रतोद्यापन रहस्यम्

भाषा टीका



लेखक :पं० शिव स्वरुप ''याज्ञिक''

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री व्रतोद्यापन रहस्यम्

भाषा टीका

लेखक

पं० शिवस्वरूप याज्ञिक जी

भास्कर प्रयाग, भटवाड़ी जनपद-उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

मूल्य 250/-

प्रकाशक:

बी०एस० प्रमिन्दर प्रकाशन, दिल्ली-51

मुख्य वितरक:

कर्मसिंह अमरसिंह,

पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार

फोन-01334-225619

प्रकाशक :
बी०एस० प्रमिन्दर प्रकाशन, दिल्ली-51

मुख्य वितरक :
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
हरिद्वार-उत्तराखण्ड
फोन-01334-225619

प्रथम संस्करण सन् 2011

लेखक
पं० शिवस्वरूप याज्ञिक

मूल्य 250/-

व्रतोद्यापन रहस्यम् की अनुक्रमणिका

सम्मति-पत्र

प्रिय,

पं० शिव स्वरूप प्रसाद 'याज्ञिक' जी,

आप द्वारा जहां यज्ञ अनुष्ठानों द्वारा सनातन धर्म की शास्त्रीय मर्यादाओं का प्रचार प्रसार हो रहा है, वहीं अनुष्ठानपरक ग्रन्थों का संकलन और सम्पादन हो रहा है, यह अच्छी परम्परा है, इसी क्रम में **'सम्पूर्ण पूजा रहस्यम्'** जिसमें पूजन हवन जपार्थ मंत्र और स्तोत्र भरे हैं। **'सम्पूर्ण हवन रहस्य'** में यज्ञ विधि के साथ वेदी निर्माण की विधि सचित्र प्रकाशित है तथा **'सम्पूर्ण गृह नक्षत्र शांति रहस्य'** पुस्तक में वास्तु शास्त्र, नवग्रह भान्त्रि, नक्षत्र भान्त्रि के साथ-साथ लोकाचार की सनातन परम्परा में समान देवताओं के पूजा का विधान बहुत गम्भीरता से प्रस्तुत किया गया है। मैं इस प्रकार की सनातन परम्पराओं के लिये हो रहे कार्यों के लिये अपनी सम्मतिपूर्वक इन्हें आशीर्वाद देता हूँ।

स्वामी माधवाश्रम जी महाराज

आशीर्वाद-पत्र

पं० शिव स्वरूप यज्ञिक भास्कर प्रयाग (भटवाड़ी)"

उत्तरकाशी।

आपके द्वारा सम्पादित रुद्राष्टाध्यायी" स्रोत, स्तुति एवं आरती सहित किताब का अध्ययन किया, बहुत प्रसन्नता हुई, ज्ञात हुआ है कि इसी प्रकार आप द्वारा सम्पादित अन्य किताबें भी हैं। भगवान केदारनाथ जी से प्रार्थना करूंगा कि भविष्य में भी आप इसी प्रकार से भगवान की सेवा अपने इन्हीं लेख रचनाओं के साथ करते रहेंगे। भगवान केदारनाथ जी से आप तथा आपके सम्पूर्ण परिवार की यश, कीर्ति तथा मंगलमय की कामना करता हूँ। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

राजशेखर लिंग

मुख्य पुजारी

श्री केदारनाथ मंदिर, केदारनाथ, उत्तराखण्ड

जय श्री राधे

देवक्यां पालितो गर्भे, लालिताङ्के. यशोदया।
यशमेय्या युतो बालो, गोपालो रमतां हृदि॥

वैदिक काल से अर्वाचीन काल तक ईश्वरोवासना के विभिन्न उपायों में स्त्रोत, कवच सहस्त्रनाम गृह नक्षत्र शान्ति के अनेकों ग्रन्थ अब तक प्रकाशित हुए वर्तमान में भड़वाड़ी ग्राम निवासी **"शिवस्वरूप जी याज्ञिक"** जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ विद्वान कर्मकाण्ड कराने वाले ब्राह्मणों के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

पं० परमान्नद शास्त्री
ब्रह्मकुण्ड
वृन्दावन-जि. मथुरा, यू.पी.

श्री

सम्मानीय पं श्री शिवस्वरूप याज्ञिक" जी

आपके द्वारा अनेकों ग्रन्थों से संग्रह कर के संकलित रूप में जिन ग्रन्थों की रचना की गई है वह अत्यन्त सराहनीय कार्य है।

काशी के अधिपति श्री विश्वनाथ से प्रार्थना है कि आगे भी आपका यह सराहनीय लोकोपयोगी कार्य चलता रहे।

शुभाशंसा
पं० श्री कामेश्वर नाथ त्रिपाठी
राजमंदिर काशी

शुभकामना

सेवा में,

परम श्रद्धेय श्री शिवस्वरूप याज्ञिक
भटवाड़ी (उत्तरकाशी)

महोदय,

यह जानकर अपार प्रसन्नता हुई कि आपने श्री दुर्गासप्तमी पुस्तक लिखी है तथा यह पुस्तक समस्त धर्म परायण जनता के लिये उपयोगी होगी।

शक्ति का लौकिक अर्थ बल ताकत व सामर्थ्य है शक्ति नाम की वस्तु प्रत्येक मनुष्य अनुभव करता है, कोई भी कार्य शक्ति के बिना सम्पन्न नहीं हो सकता।

कलिकाल में भयानक पापों से बचने व अपने जीवन के कल्याण के लिये और अनिष्ठों को दूर करने के लिये चण्डी और विनायक की आराधना आस्थावादी विचारधारा के लिये आवश्यक मानी गई हैं (कलीं चण्डी विनायकै) मां के स्वरूप में प्राय: ममतामयी भावनाएं अधिक होती है, मां के स्वरूप से ही सच्चा आराधक सब कुछ पा जाता है और तभी अपने जीवन में अभ्युदय का मार्ग पाता है, तन्त्र मंत्र व यन्त्र भी जगत के अमंगलों को दूर करने में सहायक होते हैं किन्तु इनका उपयोग अनजाने धातक भी हो सकता है, अत: कलिकाल उसके पापाचार स्वरूप से बचने के लिये भक्ति ही सर्वोत्तम साधन है।

जगत के निर्मित सच्चिदानन्द पर ब्रह्म की जो सर्वोत्तम साधन है वही शक्ति तत्व भगवती है तथा श्री याज्ञिक" ने श्री दुर्गा सप्तसती के लिये बहुत उपयोगी है तथा अपने नाम शिव स्वरूप के अनुरूप भगवती की कृपा पात्र बने इस सत्प्रयास के लिये मैं आपको बधाई व शुभकामना देता हूँ।

कालिका प्रसाद सेमवाल
प्रान्तीय संगठन मंत्री, उत्तरांचल
अखिल भारतीय भारतवर्षीय धर्मसंघ
अनन्त श्री ब्रह्मलीन धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज द्वारा संस्थापित

॥ श्री गोकुल चन्द्रमसे नमः ॥

श्रीमद्भागवत ज्योतिष कर्मकाण्ड कार्यालय

आचार्य पं० मृदुल कृष्ण शास्त्री
श्रीमद् भागवत चञ्परीक बालशुक

आचार्य पं० विष्णुकान्त शास्त्री
याज्ञिक रत्न कर्मकाण्डाचार्य"

श्रीमद् भगवत चरणारविन्द प्रसादप्तये कर्मकाण्डादीनि बहुनि साद्यनामि प्रतिपाद्यन्ते श्रुत्यादिभिः योगिनः कर्म कुर्वत्ति कर्मणैव हि संसिद्धिः यज्ञार्था त्कर्मणोऽन्मत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः इत्यादि प्रयोग बाहुल्यात। कनिचित संकलितानी पुस्तकान अवलोकितानीमया, तेन प्रमुदितः विद्वद्वरेण्यं पं. शिवस्वरूप याज्ञिक" महानुभावमाशिषा संवर्द्धयामि। अग्रेसिऽदि सनातन धर्मरक्षायै लेखक प्रकाशकादिभिः सत्प्रयासो विधेमः।

सर्वेभद्राणि पश्यन्तु।

पं० विष्णुकान्त शास्त्री
श्री धाम वृन्दावन, मथुरा

श्री हरिः

विदितमेतद् भगवतो निःश्वासभूत मन्त्र ब्राह्मणात्मक वेदस्याशीति सहस्र सङ्ख्यक कर्मकाण्ड प्रतिपादक मंत्राः सर्वजगत्ताप न्याय प्रशमयितुं लोकोयकर्तुञ्चप्रवृत्ताः। 'कुर्वन्नेवह कर्माणि' कुरू कर्मैवन्त्यादि श्रुति स्मृत्यादिषु कर्मकाण्ड माहात्मय प्राचुर्य प्रदृश्यते यद्यपि कर्मकाण्डस्य पूजाविधानस्यनास्त्यन्त स्तथापि सनातन धर्मेकनिष्ठाधिकारि विद्वभ्दिः काले-काले स्व स्वाधिकार सामर्थ्यानुसारं तत्तद् विषयक ग्रन्थाः प्रकाश्यन्त एव। एतत्सरण्यामेव जिज्ञासूनामुषकाराया नैक शास्त्र निष्णातैः पं. शिवस्वरूप याज्ञिक" महाभागैः संकलितानि पुस्तकानि प्रबन्धान्मव लोक्तातीव मोदमानो लेखक पाठकानां दीर्घायुषे भगवन्तं प्रार्थयामि, ग्रन्थान, ग्रन्थकारान् प्रकाशक महोदयानन्याश्च साहाध्यानभिनन्दामि शुभाशंसमा च संवर्द्धयामि, शुभमिति।

पं० गंगाधर पाठकः वेदाचार्यः
श्रीधाम वृन्दावनवास्तव्य मैथिलः
मो० 9430964633
सं० 2065 देवोत्थानि एकादशी

निवेदन

नर शरीर के समान कोई दूसरा शरीर नहीं है। चर-अचर सभी जीव नर शरीर की याचना करते हैं और यही शरीर उद्धार का हेतु भी है। मानव माया से प्रेरित होकर संसार में आकर उस परम ब्रह्म को भूल जाता है। जिसने हमें इस संसार में नरतन देकर भव उद्धार का सेतु बनाया था। क्योंकि विषय रूपी कुपथ्य ऋषियों के हृदय में भी अंकुरित होता है, विषय अनुराग होने से प्राणी शोक हर्ष भय प्रीति वियोग के दुख से और भी दुखी होते हैं।

मानव शरीर में मोह ममता ईर्ष्या हर्ष लोभ विषाद दरिद्रता अहंकार दंभ कपट मान तृष्णा मत्सर अविवेक स्वयं ही निवास करते हैं जिसको दूर करने के लिए तथा देह की शुद्धता के लिए पूजन व्रत उपवास आवश्यक कर्म हैं जिससे मन निर्मल होकर आध्यात्म शान्ति को प्राप्त करता है तथा धर्माचरण के प्रभाव से सात्विक मनुष्य श्रद्धारूपी भाव से निर्मल मन की सहायता द्वारा मन का निग्रहकर निर्मल बुद्धि प्राप्त कर निष्काम भाव हो ज्ञान को प्राप्त कर जीवन धन्य कर कृतार्थ हो जाता है।

व्रत उद्यापन जीवन को उपयोगी बनाने वाले तथा ग्रहजनित दोषों को मिटाने के लिए सफल प्रयोग हैं। जब बुद्धि निर्मल हो भाव सात्विक हो मन में शान्ति का प्रवेश हो उन क्षणों में किये कार्य पुण्य वर्धक होते हैं जो व्रतादि करने से सहज ही प्राप्त हो जाते हैं तथा व्रतादि उपवास करने से शरीर निर्मल होकर भगवान प्राप्ति का साधन बन जाता है जो मानव शरीर के मानिसक और शारीरिक स्थास्थ्य के लिए आवश्यक भी है।

प्रस्तुत पुस्तक में ब्राह्मणों के हितार्थ व्रतोद्यापन के सामान्य धर्म, व्रत उपयोगी वस्तु, देवताओं के उपचार देवपूजा के अंग व्रतादि उद्यापन के नियम पूजन, हवन सहित पुस्तक में देकर पुस्तक की उपयोगिता बढ़ जायेगी ऐसा मेरा विश्वास है। विद्वान सुयोग्य ब्राह्मण इसे अपनाकर मेरे इस परिश्रम को सफल करेंगे तथा अपने विचारों से मुझे अवगत करेंगे। इसी विश्वास के साथ। आपका अनुचर

पं० शिवस्वरूप 'याज्ञिक'
भास्कर प्रयाग, भटवाड़ी जनपद- उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड।
मो०-9411515592

॥ व्रतियों के लिए सामान्य धर्म ॥

क्षमा सत्यं दयादानं शौचमिन्द्रिय निग्रह।
देवपूजाग्नि हवनं सन्तोषः स्त्येयवर्जनम्॥१॥

(हेमद्रौ भविष्ये)

किसी भी व्रत में क्षमा, सत्य, दया, दान, शौच, इन्द्रिय निग्रह, देवपूजा, अग्नि हवन, सन्तोष अस्तेय यह दश तरह का धर्म का पालन सब व्रतों में करना चाहिए।

व्रताद्यारम्भे वृद्धिश्राद्धं कार्यम् तदाह शातातपः।
नानिष्ष्या तु पितृ श्राद्धे कर्म किंचित समारभेत्॥२॥

(शातातप)

व्रतादिकों के आरम्भ में नांदीमुख श्राद्ध को अवश्य करें। नांदी मुख श्राद्ध में बिना पितरों का पूजन कर किसी भी कार्य को प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

श्रद्धावान् पापभीरुश्च मददम्भ विवर्जित।
पूर्व निश्चियमाश्रित्य यथावत्कर्म कारकः॥३॥

(स्कन्द पुराण)

जिस पुरुष में श्रद्धा है जो पापों से डरता है, जिसमें दम्भ और मद नहीं है निश्चय कर्म को जो पूरा करता है, व्रताधिकारी है॥३॥

देशो नदी गया शैलो गंगानर्मदपुष्करम्॥४॥

वाराणसी, कुरुक्षेत्र प्रयाग जम्बुकेश्वर आदि व्रत करने के लिय पुण्य क्षेत्र है॥४॥

पूर्व व्रतं गृहीत्वा यो नाचरेत्काम मोहितः।
जीवन्भवति चाण्डालोमृते श्वाऽभिजायते॥५॥

(मदनरत्ने)

जो पुरुष पहले व्रत ग्रहण करके काममोहित हो उसका त्याग कर देवें, वह जीता हुआ ही चाण्डाल है तथा मृत्युपरान्त कुत्ता होता है॥५॥

दिनत्रयं न भुञ्जीत मुण्डनं शिरसोऽथवा।
प्रायश्चितमिद कृत्वा पुनरेवव्रतीभिवेत्॥६॥

(स्कन्द पुराण)

व्रत भंग होने पर तीन दिन का उपवास करें अथवा शिर का मुण्डन कर (प्रायश्चित) पुनः व्रत को करना चाहिए॥६॥

उपावृत्तस्यपापेभ्यो यस्तुवासो गुणै सह।
उपवासः स विज्ञेयः सर्वभोग विवर्जित॥७॥

(कात्यायन)

पापों से निवृत्त हुये पुरुष का जो गुणों के साथ वास है वह उपवास कहलाता है। उपवास में भोगों का त्याग किया जाता है॥७॥

उपवासे तथा श्राद्धे न कुयाद्दन्त धावनम्।

पर्णादिना विशुद्धेत जिव्होलेखः सदैव हि॥८॥

(पैठीनस)

उपवास और श्राद्ध में दान्तुन (काष्ठ की) नहीं करना चाहिए। जिव्हा आदि को सदैव पत्ते आदि से साफ करना चाहिए॥८॥

असकृज्जलपानं च सकृत्ताम्बूल चर्वणात्।
उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्च मैथुनात्॥९॥

(देवलस्मृति)

एक बार छोड़कर ज्यादा पानी पीने से, एक बार भी पान खानें से दिन के सोने और मैथुन से उपवास नष्ट हो जाता है॥९॥

अष्टौ तान्य व्रतघ्नानि आपोमूलं फलं पयः।
हविर्ब्राह्मणकाम्या च गुरोर्वचनमौषधम्॥१०॥

(स्कन्द)

जल, फल, पय, ब्राह्मणकाम्या, हवि, गुरु के वचन और औषध ये आठों व्रत को नष्ट नहीं करते अर्थात इन्हें व्रत में ग्रहण किया जा सकता है॥१०॥

सदोपवीतिना भाव्यं सदावद्धशिखेन च।
विशिखो व्युपवोतिच यत्करोति न तत्कृतम्॥११॥

(छन्दोगपरिष्टे)

उपवीत से रहते हुये कभी भी चोटी खुली नहीं रखनी चाहिए। जो मनुष्य बिना चोटी में गांठ दिये अथवा बिना यज्ञोपवीत के जो शुभ कर्म करता है वह न किये हुए के बराबर है॥११॥

व्रीहिषष्टिकमुद्गा श्च कलायाः सलिलं पयः।
श्यामाकाश्चैव नीवारा गोधूमाद्या व्रते हिताः॥१२॥

(अग्निपुराण)

जौ, शाठी, चावल, मूंग तथा कलाय, पानी, दूध, श्यामाक, नीवार और गेहूं पाराणय के लिये हितकर हैं॥१२॥

॥ यज्ञोपयोगी वस्तु ॥

यज्ञ, व्रत, उद्यापन जप, पूजनादि आदि में कई वस्तुओं की आवश्यकता होती है। जिनमें प्रमुख निम्न वस्तुयें उपयोग में लाई जाती हैं।

१. पंचरत्न :-

सुवर्णं रजतं मुक्ता राजवर्तं प्रवालकम्।
रत्न पंचकमाख्यातं शेष वस्तु ब्रवीम्यहम्॥

(आदित्य पुराण)

कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम्।
एतानि पंचरत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः॥

(समयप्रदीप)

सोना, चांदी, मोती, मूंगा और लाजवर्त ये पांच रत्न कहे हैं। अन्य वस्तुओं को आगे कहेंगे॥

अभावे सर्व रत्नानां हेम सर्वत्र योजयेत्॥

स्मृत्यन्तर में लिखा है कि सब रत्नों के अभाव में सब जगह सोने को काम में लाना चाहिए॥

२. नव महारत्न :-

मुक्ताफलं हिरण्यं वैदूर्यं पद्मरागकम्।
पुष्परागं च गोमेदं नीलंगारूत्मतं तथा॥
प्रवाल युक्तानि महरत्नानि वै नवः॥

(विष्णु धर्मोत्तर)

मुक्ता, सोना, वैदूर्य, पद्मराग, पुष्पराग, गोमेद नील, गारुत्मत और प्रवाल इनको नव महारत्न कहा गया है।

३. पंचपल्लव :-

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोध पल्लवाः।
पंचभंगा इतिख्याता सर्वकर्मसु शोभनाः॥

(ब्रह्माण्ड पुराण)

पीपर, गूलर, प्लक्ष, आम और वड के पेड़ के पत्तों को पंचपल्ल्व कहते हैं।

४. पंचगव्य :-

गौमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसार्पि यथा क्रमम्।।

(स्कन्दपुराण)

गौमूत्र, गोबर, दूध, दही और गऊ का घी मिलाकर पंचगव्य कहा जाता है।

५. पंचगव्य मात्रा :-

गौमूत्रंभागश्चार्द्ध शकृत्क्षीरस्य चत्रयम्।
द्वय दध्नो धृतस्यैकमेकश्च कुशवारिजा:।।

(विष्णु धर्मोत्तर)

पंचगव्य जितना बनाना हो उसमें आधा भाग गौमूत्र तीन भाग गोबर, तीन भाग दूध, दोभाग दही ओर एक भाग घी तथा एक भाग कुश जल का होना चाहिए।

६. पंचामृत :-

पंचामृतं दधि क्षीरं सिता मधु घृतं स्मृतम्।

(हेमाद्रौ)

आज्यंक्षीरमधु तथा मधुर त्रयमुच्यते।।

(मदन रत्ने)

दही, दूध, खांड, शहद और घी ये पांचों मिलकर पंचामृत कहलाते हैं। घी, दूध, शहद इन तीनों को मधुत्रय कहते हैं।

७. चतु:समः-

कस्तूरिकायां द्वौ भागौ चत्वारश्चन्दनस्य च।
कुंकुमस्य त्रयश्चैकः शशिनः स्याचतुसम।।

(गरुड़पुराण)

दो भाग कस्तूरी, चार भाग चन्दन, तीन भाग कुंकुम और एक भाग कर्पूर ये चारों मिलकर चतुस्सम कहलाते हैं।

८. सर्वगन्ध :-

कर्पूरश्चन्दनं दर्पः कुंकुम च समासकम्।
सर्वगन्धमिति प्रोक्तं समस्तु सुरभूषणम्।।

(गरुड़पुराण)

कपूर चन्दन कस्तूरी कुंकुम जब इन चारों को बराबर लिया जाता है तब इसे सर्वगन्ध कहते हैं। यह सब देवताओं का आभूषण है।

९. यक्षकर्दम :-

कस्तूरीह्यगुरुश्चैव कर्पूरचंदन तथा।
कंकोलं चभवेदेभीः पंचभिर्यक्षकर्दम।।

(गरुड़पुराण)

कस्तूरी, अगरू, कर्पूर, चन्दन, कंकोल पांचों को मिलाकर यक्षकर्दम कहा जाता है।

१०. सर्वोषधि :-

कुष्ठं मांसी हरिद्रे द्वे मुरा शैलेय चन्दनम्।
वचा चम्पकमुस्तं च सर्वोषध्योदश स्मृताः।।

(छन्दोगपरिशिष्टे)

कूट, कंकोल दोनों हल्दी मुरा, शैलेय चन्दन, वचा, चम्पक मुस्त इन दशों को सर्वोषधी कहते हैं।

११. सौभाग्याष्टक :-

इक्षवस्तृणराजं च निष्पावाजाजिधान्यकम्।
विकारवच्च गोक्षीरं कुसुमं कुंकुमं तथा।।
लवणं चाष्टमं तत्र सौभाग्याष्टकमुच्यते।।

(पद्मपुराण)

इख, तृणराज, निष्पाव, जीरा, धान्य, दही, कुसुम, कुंकुम, लवण इनको सौभाग्याष्टक कहते हैं।

१२. अर्घ्याष्टांग :-

आप क्षीरं कुशाग्राणी दध्यक्षततिलास्तथा।
यवाः सिद्धार्थकाश्चेतिह्यर्घ्योऽष्टाङ्ग प्रकीर्तितः॥

(पद्मपुराण)

पानी, दूध, कुशा का अग्रभाग, दही, चावल और तिल जौ और सफेद सरसों सबको मिलाकर अष्टांग अर्घ्य कहा जाता है।

१३. सप्तमृतिका :-

गजाश्वरथवल्मीकसंगमादध्रगोकुलात्।
मृदमानीय कुंभेषु प्रक्षिपेच्चत्वरात्तथा॥

(मत्स्यपुराण)

जिस स्थान पर घोड़ा बंधे, जहां रथ चलता हो, इन स्थानों की मिट्टी, वामी की मिट्टी, नदियों के संगम की मिट्टी, तालाब की मिट्टी, गऊ बांधने के स्थान की मिट्टी, चौराहे की मिट्टी इन स्थानों से सात जगह की मिट्टी को सप्त मृतिका कहते हैं।

१४. सप्तधातु :-

सुवर्ण रजतं ताम्रमारकूटं तथैव च।
लोहं त्रपु तथा सीसं धातव, सप्तकीर्तिकाः॥

(हेमाद्रि)

सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल, लोहा, त्रपु रांगा और शीशा ये सात धातु हैं।

१५. कौतुक :-

दूर्वा यवांकुराश्चैव बालकं चूतपल्लवा।
हरिद्राद्वयसिद्धार्थ शिखिपत्रोरगत्व चः॥

(भविष्य पुराण)

दूव, जौ के अंकुर, खस की जड़, आम की डाल, दोनों हल्दियां, सफेद सरसों, मोरपंख, सांप की कांचुली इन्हें कौतुक कहते हैं।

१६. सप्तधान्य :-

यवगौधूम धान्यानि तिला कङ्गुस्तथैव च।
श्यामकं चीनकं चैव सप्तधान्या मुदाहृतम्॥

(षटत्रिशंद ग्रन्थ)

यव गोधूम, धान, तिल, कंगु, श्यामाक (कोदो) और चीनक इन सातों को सप्त धान्य कहते हैं।

१७. अष्टादश धान्य :-

व्रीहिर्यवास्तिलाश्चैव यावनालास्तथैव च।
शतानीकाः कुलित्थाश्च कङ्गुकाः कोरदूषका॥
माषमुद्गमसूराश्च निष्पावाः श्याम सर्षपाः।
गोधूमाश्चणकाश्चैव नीवाराढक्य एवच॥
एवं क्रमेण जानीया द्धान्यष्टा दशैव तु।

(स्कन्दपुराण)

व्रीहि, यव, तिल, रामदाना, मटर, कुलित्थ, कंगु, कोदो, माष, मूंग, मसूर, निष्पाव, श्याम, सर्षप, गोधूम, चना, नीवार, और आढकी ये क्रम से गिनने पर अठ्ठारह हो जाते हैं।

१८. कलश प्रमाण :-

हेमराजत ताम्राश्च मृन्मया लक्षणान्विताः
यात्रोद्वाह प्रतिष्ठादौ कुम्भास्युरभि सेचने॥

(विष्णु धर्मे)

सोना, चांदी ताम्बे और मिट्टी के अपने लक्षणों के अनुसार यात्रा विवाह और प्रतिष्ठा आदि में अभिषेक हेतु होते हैं।

१९. प्रतिमा निर्माण :-

सौवर्णी राजती ताम्री वृक्षजा मार्तिकी तथा।
चित्रजा पिष्टलेपोत्था निजवित्तानुसारतः॥

(भविष्ये)

अपनी शक्ति के अनुसार प्रतिमा सोने, चांदी, ताम्बे की बनवानी चाहिये यदि वह भी न हो सके तो मिट्टी की बनवा लें या चित्रपट को ही पूज दें अथवा पिष्टलेप से ही काम कर लेवें।

२०. प्रतिमा प्रमाण :-

अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिर्यावदेवतु।
गृहे तु प्रतिमाकार्या नाधिकाः शस्यतेवुधै।।

(मात्स्ये)

अंगूठे के प्रमाण से लेकर एक बिलस्त तक लम्बी मूर्ति का घर में पूजन करना चाहिए इससे अधिक प्रमाण की मूर्ति का पूजन विद्वान लोग शुभ कारक नहीं बताते।

२१. यथा वस्तु न मिलने पर :-

यथोवत्तवस्त्व संपतौ ग्राह्यं तदनकारियत्।
यवाभावे च गोमूधा ब्रीह्यभावे च तण्डुलाः।।

(मदन रत्ने)

जो चीज कही गयी हो वह न मिले तो उस जैसी वस्तु को ले लेना चाहिए जैसे- जौ न हो तो गेहूं से व्रीहि न हो तो तण्डुलों से काम करना चाहिए।

२२. द्रव्याभाव प्रतिनिधि :-

दध्यलाभे पयोग्राह्य मध्वलाभे तथा गुडः।
घृते प्रतिनिधिः कार्यः पयोवा दधि वा नृप।।

(हेमाद्रौ)

दही न मिले तो दूध तथा मधु के अभाव में गुड़ से काम करना चाहिए। यदि घी न मिले तो दूध से काम लेना चाहिए।

२३. हवन के लिये आज्य :-

आज्य होमेषु सर्वेषु गव्यमेव भवेद्घृतम्।
तदभावे महिष्यास्तु अजामाविक मेव तु।।
तदभावे तु तैलं स्यात्तदभावे तु जार्तिलम्।
तदभावे तु कौसुम्भं तदभावे तु सार्षपम्।।

(देवलः)

जहां आज्य का होम है वहां गौ का ही घृत लेना चाहिए। यदि गौ का घृत न मिले तो भैंस का, यदि भैंस का घृत न मिले तो बकरी का, यदि बकरी का घृत न मिले तो भेड़ का घी वर्तना चाहिए। यदि वह भी न हो तो तिल का तेल, यदि तिल का तेल भी न हो तो जार्तिल का तेल इस के अभाव में कौसुंभ का तेल तथा इसके अभाव में सरसों का तेल को प्रयोग करना चाहिए।

२४. समिधा :-

पलाशाश्वत्थखदिरबडोदुम्बराणाम्।
तदभावे कण्टकवर्जसर्ववनस्पतीनाम्॥

(कात्यायन)

पलाश, अश्वत्व खदिर वट उदुम्बर ये समिधा हैं इनके अभाव में कांटेदार (समिधा)को छोड़कर सब वनस्पतियां ले लेनी चाहिए।

२५. अमृतधूप :-

अगरुश्चन्दनं मुस्ता सिह्लकं वृषणं तथा।
समभागेस्तु कर्तव्योधूपोऽयममृताह्वयः॥

(अथेध्माः)

अगरु, चन्दन, मुस्ता, सिह्लक, कस्तूरी इन पांचों को बराबर लेकर जो धूप बनाया जाता है उसे अमृत धूप कहते हैं।

२६. दशांग धूप :-

षड्भाग कुण्टं द्विगुणो गुडश्च लाक्षात्रयं पंचनखस्य भागाः।
हरीतकीसर्जरसः समांसी भागैकमेंक त्रिलवं शिलाजम्॥
घनस्यचत्वारि पुरस्य चैको धूपो दंशांग कथितो मुनीन्द्रैः॥

छः भाग कुष्ठ, बारह भाग गुड़, तीन भाग लाक्षा, पांच भाग नख हरीतकी, राल, जटामासी ये तीनों एक-एक भाग तथा शिलाजीत चार भाग, कपूर एक भाग, गूगल एक भाग इनके मिश्रण से बनाये गये धूप को दशांग धूप कहते हैं ऐसा बड़े-बड़े मुनि कहते हैं।

॥ इति यज्ञोपयोगी वस्तुवर्णन ॥

॥ देव उपचार ॥

१. तीस उपचार :-

अर्घ्यं पाद्यआचमनं मधुपर्कमुपस्पृशम्।
स्नानं नीराजनं वस्त्र माचमनंचोपवीतकम्॥
पुनराचमभूषे च दर्पणालोकनं ततः।
गन्धपुष्पै धूपदीपौ नैवेद्यं च ततः क्रमात्॥
पानीयं तोयमाचमनं हस्तावासस्ततः परम्।
ताम्बूलमनुलेपं च पुष्पदानं ततः पुनः॥
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं स्तुतिश्चैव प्रदक्षिणाः।
पुष्पांजलि नमस्कारावष्ट त्रिंशत्समीरिता॥

(ज्ञानमालायाम)

अर्घ्यं, पाद्यं, आचमन, मधुपर्क, उवटन, स्नान, आरती, वस्त्र, आचमन, उपवीत, पुनराचमन, अलंकार, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, पानीय, तोय, आचमन, करोद्वर्तन, पान, अनुलेपन, पुष्पदान, गीत, वाद्य, नृत्य, स्तुति, प्रदक्षिणा, पुष्पांजलि नमस्कार, इस प्रकार तीस उपचार हैं।

२. षोडश उपचार :-

आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनीयकम्।
मधुपर्कासनस्नानवसनाभरणानि च॥
सुगन्ध सुमनोधूपो दीपमन्नेन भोजनम्।
माल्यानुलेपने चैव नमस्कार विसर्जने॥

आसन, स्वागत, अर्घ्यं, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वसन, आभरण, सुगन्ध, फूल, धूप, दीप अन्न भोजन, माल्यअनुलेपन, नमस्कार और विसर्जन ये सोलह उपचार कहलाते हैं।

३. दशउपचार :-

अर्घ्यं पाद्यमाचमन स्नानं वस्त्र निवेदनम्।
गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचारादशक्रमात्॥

अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, निवेदन गन्ध से लेकर नैवेद्य तक क्रम से दश उपचार होते हैं।

४. रात्रि में देव अर्चन :-

आसनस्नान वस्त्राणि भूषणं च विवर्जयेत्।
रात्रौदेवार्चने तैश्च पदार्थैर्द्वादशै क्रमात।।

(कपिल)

जब रात को देव पूजन करना हो तो आसन, स्नान, वस्त्र और आभूषण इन उपचारों को न करें बाकी बारह उपचारों को करना चाहिए। इन अनुपयुक्त उपचारों को कपिल देव जी ने कहा है।

देवपूजन अंग

१. पाद्य के अंग :-

दूर्वा च विष्णुक्रान्ता च श्यामाकं पद्ममेव च।
पाद्याङ्गानि च चत्वारि कथितानि समासतः।।

दूर्वा, विष्णुक्रान्ता, श्यामक और पद्म ये चार संक्षेप में पाद्य के अंग बताये गये हैं।

२. आचमन के अंग :-

कर्पूरमगरुं पुष्पं द्रव्याचमनीयके।

कर्पूर, अगरु और पुष्प इनको आचमनी में डालकर आचमन कराना चाहिए।

३. अर्घ्य के अंग :-

सिद्धार्थमक्षतं चैव दूर्वा च तिलमेच च।
यवगन्ध फलं पुष्पमष्टाङ्ग त्वर्घ्यमुच्यते।।

सिद्धार्थ, अक्षत, दूर्वा, तिल, यव, गन्ध, फल और पुष्प इन सबको अर्घ्य पात्र में डालकर अर्घ्य देना चाहिए।

४. उद्वर्तनपदार्थ :-

रजनी सहदेवीच शिरीषं लक्षणाप च।
सदभद्राकुशग्राणि उद्वर्तन मिहोच्यते।।

(शारदा तिलक)

हल्दी सहदेवी,शिरिष, लक्षणा, सदाभद्रा और कुशाग्र ये सव वस्तुयें उद्धर्तन में ग्रहण की जाती हैं।

५. द्रव्याभाव :-

अक्षता गन्ध पुष्पाणि स्नानपात्रे तथा त्रयम्।
उपचार द्रव्याभावे अक्षताश्चप्रतिनिधिः।
तथाचमनपात्रेऽपि दद्यराजातीफलं मुने।
लवङ्गमपि कङ्कोलशस्तमाचमनीय के।।

(अगस्त्यसंहिता)

द्रव्य अभाव में साफ किये हुए तंडुल लेने चाहिए। आचमन पात्र में जातीफल, लवंग और कंकोल डालना चाहिए। द्रव्य के अभाव में उस द्रव्य का स्मरण करके धुले चावल प्रयोग करना चाहिए।

६. मूर्तिस्नान निर्णय :-

प्रतिमा पट्टयंत्राणां नित्यं स्नानं न कारयेत्।
कारयेत् पर्व दिवसे यदावा मलधारणम्।।

(प्रयोगपरिजात)

प्रतिमा के वस्त्र और यंत्रों को रोज स्नान नहीं कराना चाहिए। जिस दिन कोई पर्व हो उस दिन या मैले हो गये हों तो धोना चाहिए।

७. विष्णु आदि देवताओं की पूजन वर्ज्य सामग्री :-

नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुं न तुलस्यां गणाधिपम्।
न दुर्वया यजेद्देवीं. बिल्वंपत्रैश्च भास्करम्।।
उन्मतमर्कपुष्पंच विष्णोर्वर्ज्यं सदा बुधै।।

(ज्ञानमालायाम्)

अक्षतों से विष्णु का तथा तुलसीदल से गणपति का, दुर्वा सें देवी का तथा बिल्वपत्रों से कभी सूर्य का पूजन नहीं करना चाहिए धतूरे और ऑक के फूल कभी भी विष्णु भगवान पर नहीं चढ़ाने चाहिए।

८. अक्षत :-

अक्षतास्तु यवाप्रोक्ताः इति पदार्थां दर्शे उक्तात्वा।
द्यवानामेवायं प्रतिषेधोनं तुण्डलानाम्।

पदार्थां दर्श में लिखा है कि यवों को अक्षत कहते हैं। फिर यहां से निषेध यव के अक्षतों का ही होगा न कि चावलों का।

९. शंख अभिषेक :-

महाभिषेक सर्वत्र शंखनैव प्रकल्पयेत्।
सर्वत्रैव प्रशस्तोब्जः शिवसूर्यार्चनं बिना।।

(आचारमयूख)

सब जगह शंख से ही महाअभिषेक होना चाहिए। शिव और सूर्य पूजन को छोड़कर सब जगह शंख प्रसस्त है।

।। व्रतादि उद्यापन ।।

१. बिना उद्यापन :-

कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौयदुदीरितम्।
उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निष्फलंभवेत्।।

(पृथ्वीचन्द्रोदय)

व्रत की समाप्ति पर जो कहा गया है वह उद्यापन अवश्य करना चाहिए। क्योंकि बिना उद्यापन के व्रत निष्फल हो जाता है।

२. व्रत उद्यापन :-

यत्रचोद्यापनं नोक्तं व्रतानुगुणतश्चरेत्।
वित्तानुसारतोदद्यादनुक्तोद्यापने व्रते।।
गां चैव कांचनं दद्याद् व्रतस्य परिपूर्यते।।

(नन्दीपुराण)

जिस व्रत का उद्यापन न कहा गया है उसका उद्यापन उस व्रत के अनुसार कर लेवें तथ अपनी श्रद्धानुसार दान भी कर दें। गौ और सोना व्रत की पूर्ति के लिए दान करें।

३. उद्यापन समय :-

आदौ मध्ये तथाचान्ते व्रतस्योद्यापनं भवेत्।
तद्व्रतोद्यापनं कार्यं सम्पूर्ण फल माप्नुयात्।।

व्रतों के आदि मध्य और अन्त में उद्यापन होता है, उद्यापन करने से ही व्रत का संपूर्ण फल प्राप्त होता है। अन्यथा नहीं।

४. कुश ग्रहण :-

मासे नभमावस्यां तस्यां द्र्भोच्चयोमतः।
आयातयामास्ते दर्भा नियोजाश्च पुनः पुनः।।

(हेमाद्री)

(भाद्रपद) की अमावस्या कुश ग्रहण काल है अर्थात् इस अमावस्या को कुश ग्रहण करने चाहिए। वे कुश पर्युषित दोष को प्राप्त नहीं होते। अर्थात् वैदिक कार्यों में बार-बार लिये जा सकते हैं।

५. दर्भ भेद :-

कुशाः काशा यवा दूर्वाउशीराश्च सकुदंकाः।
गोधूमा व्रीहयो मुंजा दर्भासवल्वजला।।

कुश, काश,जौ दूव, खस, कुन्द के पुष्प, गौमूत्र, धान और मूंज ए बल्वज सहित दश दर्भ कहलाते हैं।

६. जपदशांश :-

जपाद्दशाशतोहोमस्तथा होमाच्च तर्पणम्।
होमाशक्तौ जपं कुर्याद्धोम संख्या चतुर्गुणम्।।

(धर्मसिंधु)

जप का दशांश हवन और हवन का दशांश तर्पण करें। हवन की शक्ति न हो तो होम (दशांश) की संख्या से चतुर्गुण जप करें।

।। ऋत्विग वरण ।।

१. ऋत्विग :-

बालाग्निहोत्रिणं विप्रं सुरूपं च गुणान्वितम्।
सपत्निकं च सम्पूज्य भूषयित्वा च भूषणैः।।

(पद्मपुराण)

अनेक सद्गुणों से युक्त परम सुन्दर छोटी अवस्था से अग्निहोम करने वाला सपत्नीक विद्वान ब्राह्मण की पूजाकर अनेक तरह के आभूषणों से सुसज्जित करे।

२. वरण :-

वस्त्रयुग्मं तथोष्णीषे कुण्डले कण्ठभूषणम्।
अङ्गुलीभूषणं चैव मणिबन्धस्य भूषणम्॥
एतानि चैव सर्वाणि प्रारम्भे धर्म कर्मणाम्।
पुरोहिताय दत्त्वाय ऋत्विग्भ्यः संप्रदापयेत्॥

(लिंगपुराण)

जिन ब्राह्मणों का वरण किया गया हो उनमें पहले पुरोहित को दो वस्त्र, पाग, कानों के दो कुण्डल,कंठ का भूषण, अंगुलियों के भूषण, मणिबन्ध का भूषण और आच्छादन पट सब कार्यों के प्रारम्भ में ही देकर फिर अन्य ऋत्विजों को भी ये सब चीजें देनी चाहिए।

३. ऋत्विज पूजन :-

सम्पूज्य मधुपर्केण ऋत्विजः कर्मकारयेत्।
अपूज्य कारयन् कर्म किल्विषेणैव युज्यते॥

(विश्वामित्र)

मधुपर्क आदि से ऋत्विजों की पूजा कर के पीछे उनसे कार्य कराना चाहिए बिना पूजे कार्य कराने से कराने वाले को पाप लगता है।

।। पूजन कार्य में विशेष ।।

जिसे देवता का व्रत करना है प्रातः स्नान समय उसका ध्यान अवश्य करना चाहिए व्रत के देवता का पूजन मंत्र जाप स्तोत्र पाठ तथा कथा श्रवण रात्रि जागरण हवन करने से विशेष फल की प्राप्ति होती है।

पूजन प्रारम्भ में गणेश वरुण नान्दी श्राद्ध मातृका पूजन वसु ग्रह पूजन तथा व्रत के देवता का पूजन ब्राह्मणों के पूजन वरण के बाद किया जाता है। रात्रि जागरण कर दूसरे दिन पुनः आवाहित देवताओं का पूजन कर अग्नि प्रतिष्ठापित करें पुनः हवन कार्य किया जाता है। आवाहित देवताओं को उनके मंत्र द्वारा आहुति देकर व्रत के देवता को 108 आहुतियां दी जाती हैं इसके भद्रण्डल देवताओं को भी आहुति देकर पूर्णाहुति का कार्य किया जाता है। व्रत की पूर्ति के लिए श्रेयस्कर शैय्यादान, प्रतिमायुत पीठ दान, गौदान व्रत के उद्यापन में आचार्य को दिये जाते हैं। व्रतों के उद्यापन में ब्राह्मणों को भोजन से सन्तुष्ट करना तथा उनसे आशीर्वाद लेना भी व्रतोद्यापन का अंग है। पूजन के लिए जो संकल्प किया जाता है प्रधान संकल्प लिख दिया है जिस देवता का व्रतोद्यापन करना हो उस देवता का संकल्प में नाम उच्चारण करना चाहिए तथा ब्राह्मण वरण देवता पूजन व्रतोद्यापन, हवन, शय्यादान, गौदान में संकल्प अवश्य ही कहना चाहिए।

।। अथ पूजन प्रारम्भ ।।

प्रातःकाले शुभग्रह अनुकूल समये शुभ दिने शुभ लग्ने च कृतनित्यक्रियो यजमानः शुभासने, प्राङमुख उपविश्यः स्वदक्षिणतः पत्नींचोपवेश्य।

प्रथम गणेश वन्दना करें।

सर्व स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं।
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्ध मधुपव्यालोल गण्डस्थलं।।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं।
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिंसिद्धिप्रदंकामदम्।।

हरि वन्दना :-

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्विभ्रते।
दैत्यं दारयते वलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।।
पोलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते।
म्लेच्छान् मूर्छयते दशाकृति कृते कृष्णाय तुभ्यं नमः।।

गंगा ध्यान :-

पापापहारि दुरितारि तरंगधारी।
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारी।।
झंकारकारि हरिपादरजोऽपहारि।
गांग पुनातु सततं शुभ कारिवारि।।

गंगा ध्यान कर आचमन :-

केशवाय नमः। नारायणायनमः।
माधवाय नमः।। गोविन्दाय नमः हस्तप्रक्षालनम्।।
वामहस्त गंगोदकं सकुश दक्षिण हस्तेन-

बायें हाथ में जल लेकर दायें हाथ की अनामिका अंगूठे से अभिमंत्रित करे।

ॐ अपवित्रः पवित्रोर्वा सर्वावस्थांगतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षः सः वह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

जल छिड़क दें-

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।

भूतोत्सारणम्- ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाँ सहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि।।

सरसों मंत्रित कर दिशाओं में छिड़के-

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

दिशाओं में गन्धाक्षत छोड़ दें-

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषांमविरोधेन यज्ञकर्म समारभेत्।।

आसन पूजन करें :-

अस्य श्री आसन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि सुतल छन्दः आसनोपवेशने पूजने विनियोगः।

जल छोड़कर पृथिवी का पूजन।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः। पृथ्व्यै नमः। आधार शक्ते नमः। शेष नागायनमः। कूर्मासनायः नमः। कमलासनाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना करे-

पृथिवी त्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृताः।
त्वं च धारय मां भद्रे पवित्रं कुरुचासनम्।।

घण्टा पूजन :-

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्वृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दाँस्यङ्गानि यजूँषि नाम। साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्या शफाः सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत॥

घण्टा को-गन्धक्षता चढ़ाकर बजा देवें-

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्।
सर्व भूत हितार्थाय घण्टा नादं करोम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थ गरुडाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पं समर्पयामि गरुड़ मुद्रां प्रदर्श्य घण्टां वादयित्वा वामपार्श्वे स्थापयेत्।

गरुड़ मुद्रा दिखाकर बायी तरफ पुष्पासन के ऊपर रख देवें।

शंख पूजन :-

अग्निऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्॥ त्वं पुरा सागरोत्पनो विष्णुनां विधृत करे। नमन्ति सर्व देवश्च पांचजन्य नमोऽस्तुते ॥ शंखं वादयित्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शंखस्थ देवतायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धक्षत पुष्पं समर्पयामि॥ धूप पात्रये नम-ऋताषाडऋत धामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौष धयौऽप्यसरसो मुदो नाम। स नऽ इन्द्रं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा। गन्धर्व देवाय धूप पात्रायै नमः सर्वोपचारार्थे पूजयामि।

।। सूर्य पूजन ।।

सूर्य पूजन निम्न मंत्रों से करे-

ध्यान :-

नमो नमस्तेऽस्तु सदा विभावसो। सर्वात्मने सप्तहयाय भानवे।।
अन्नन्तशक्तिर्मणि भूषणेन। ददस्व भक्तिं मम मुक्तिभव्याम्।।
आवाहयेतं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्ववाहं द्विमणि ग्रहेशं। सिन्दूर वर्णं प्रतिमाव भासं, भजामि सूर्यं कुलवृद्धि हेतवः।।

पूजन :-

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

अर्घ्य :-

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशी जगत्पते।
अनुकम्पाहि मां भक्या गृहाणार्घ्य दिवाकर।।
अर्घ्य देवे।

ॐ आदित्याय नमः, रवयेनमः, भानवे नमः, गंन्धाक्षतंपुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि। नमस्करोमि।

प्रार्थना :-

एक चक्र रथोयस्य दिव्य कनक भूषितः।
स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः।
आदित्याय नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिनेदिने।
जन्मान्तर सहस्त्रेषु दारिद्र्यं नोऽपजायते ।
नमोधर्मविधात्रेहि नमो कर्मसु साक्षिणे।
नमो प्रत्यक्ष देवाय भाष्कराय नमो नमः।।
परिक्रमा कर लेवें।
अर्घ्य के शेष जल से सामग्री पर छींटे देवे।

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः तस्माऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।

अर्घ्य के दिये जल को आँखों पर लगाये-

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँशृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शत मदीनाः श्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

भस्म धारण करने का मंत्र :-

ॐ अग्निरिति भस्म। वायुरिति भस्म। जलमिति भस्म। स्थलमिति भस्म। व्योमिति भस्म। सर्व ँहवा इदं भस्म। मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि।।

रुद्राक्ष धारण करने का मंत्र :-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यौर्मुक्षिय माऽमृतात्।

शिखा बान्धने का मंत्र :-

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे।

अथ षडंगन्यास :-

ॐ भूः हृदयाय नमः। ॐ भुवः शिरसे स्वाहा। ॐ स्वः शिखायै वषट्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं कवचाय हुं। ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय बौषट्। ॐ धियोयोनः प्रचोदयात्। अस्त्राय फट्।

प्राणायाम :-

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

नमस्कार :-

उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वत मूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योमनुज्ञातां गच्छदेवि यथा सुखम्।।
यस्यस्मृत्वा च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

दीप पूजन :-

ॐ अग्नि ज्योंति ज्योंतिरग्निः स्वाहा। सूर्योज्योतिर्ज्योंतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योर्तिवर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य सूर्योः ज्योतिः स्वाहा। सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना करे-

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षीह्यविघ्नकृत।
यावत कार्य समाप्तिः स्यातावदत्र स्थिरौ भव।।

श्री भैरव प्रार्थना :-

तीक्ष्ण द्रंष्ट्रं महाकाय कल्पान्तदहनोपम्।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।

ब्राह्मण पूजनम् :-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐ ब्राह्मण मद्य विदेयं पितृमन्त पैतृमत्य मृषिमाषेय सुँधातु

दक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्र गच्छत प्रदातार माविशत्।। ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनु वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णुरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः प्रजन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। नमोऽस्तनंन्ताय सह मूर्तये सहस्त्रपादाक्षसिरोरुवाहवे। सह स्त्र नाम्ने पुरुषाय साश्वते सहस्त्रकोटि युगधारणे नमः।।

नमः ब्रह्मण्य देवाय गौ ब्राह्मण हिताय च।
जगद्हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।
ब्राह्मणं जंगमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतं।
तेषां वाक्योदकेनैव शुद्यन्ते मलिनाः जनाः।।

ब्राह्मणों का पूजन गन्धाक्षत आदि से कर लेवें।

प्रार्थना :-

देवाधीनं जगत्सर्व मंत्राधीनं च देवता।
ते मंत्र ब्राह्मणाधीनं तस्मात् ब्राह्मण देवता।।
यदर्चनं कृतं विप्रं तव विष्णुस्तद् रूपिणः।
प्रार्थना मम दीनस्य विष्णुवेतु समर्पणम्।।

यजमान का तिलक ब्राह्मण इन मंत्रों द्वारा करे-

ॐ युंजन्तिव्रध्नंमरुषंचरंतंपरितस्तुषः रोचन्तेरोचनादिवि।
युजन्त्यस्यकाम्याहरी विपक्षसारथे। शोणाधृष्णूनृवाहसा।।

आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु इष्टकामार्थसिद्धये।।
अक्षतं विप्रहस्ताश्च यो गृणान्ति नरः सदा।
चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयुर्विद्यायशो वलम्।।

इस मंत्र से स्त्रियों का तिलक करे-

ॐ श्री श्चते लक्ष्मींश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूप-
मश्विनौव्यात्तम्। इष्णंन्निषाणामुम्म इषाणसर्वलोकम्मइषाण॥
ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयतिकश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम्॥

से कन्या का तथा निम्न मंत्र से विधवा का तिलक करे-

ॐ तद्विष्णो परमं पदॐसदापश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुरा ततम्॥

यावत् गंगा कुरुक्षेत्रे यावत् तिष्ठति मेदिनी।
यावत् राम कथालोके तावत् जीवतु बालकाः॥

मंत्र से बालक का तिलक करे।

॥ शान्ति पाठ ॥

हाथ में पुष्प अक्षत लेवें

ॐ आनोभद्राः क्रतवोयन्तुविश्वतोदब्धासोअपरीतासउद्भिदः।
देवानोयथासदमिद्वृधे ऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे॥१॥
देवानाम्भद्रा सु मतिर्ऋृजूयतांन्देवाना ँरातिरभिनोनिवर्तताम्।
देवानाॐसख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तुजीवसे॥२॥
तान्पूर्वयानिविदा हूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं व्वरुण ँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥३॥
तन्नो व्वातो मयोभुव्वातुभेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिताद्यौः।
तद् ग्रावाणःसोमसुतोमयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतंन्धिष्ण्यायुवम्॥४॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिंन्धियंजिन्वमवसे हूमहे व्वयम्।
पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुर्दब्धः स्वस्तये॥५॥
स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु॥६॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानोविदथेषुजग्मयः।
अग्निजिह्वा-मनवःसूरचक्षसोव्विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह॥७॥

भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयाम देवाभद्रं पश्येमाक्षभियजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तु ष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।८।।
शतमिन्नुशरदोऽअन्ति देवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम्।
पुत्रासोयत्रपितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतार्युगन्तोः।।९।।
अदिति र्द्योरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।।
विश्वेदेवाऽ अदितिःपंच जनाऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्।।१०।।
द्यौः शान्तिरन्तिरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः।। वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्ति
र्ब्रह्मशान्तिः सर्व्व ँ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि।।११।।
यतोयतः समीहसेततोनोऽअभयं कुरु शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।१२।।
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्नऽआ सुव।।१३।।
गणाना न्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति
ँ हवामहेनिधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे व्वसो मम।।
आहमजानिगर्भधमात्वमजासिगर्भधम् ।।१४।।
अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयतिकश्चन।।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम्।।१५।।
मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं। तंन्नोत्वरिष्ठं यज्ञ ँ समिमं दधातु।।
विश्वे देवासऽइह मादयन्तामोऽ३प्रतिष्ठ।।१६।। शुशान्तिर्भवतु।।

चतुर्दश नमस्कार :-

ॐ श्रीमन्नमहागणाधिपतये नमः।
ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यांनमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।
ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यांनमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यांनमः।
ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्योनमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।
ॐ कुलदेवताभ्योनमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।
ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्योः नमः।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्योनमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

संकल्प :-

अद्यैत्यादि० अस्मिन् व्रतोद्यापन कर्मणी गणपति पूजनं करिष्ये।

।। गणेश-गौरी पूजनम् ।।

लाल अक्षत और दूर्वा लेकर गणेश का ध्यान करे-

रक्तवर्णाक्षतं दुर्वांकुरं गृहीत्वा गणपतिं ध्यायेत्।
ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगज कर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।1।।
धुम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।2।।
विद्यारंम्भेविवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।3।।
शुक्लाम्बरं धरं देव शशिवर्णं चतुर्भजं।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये।।4।।
अभिप्सितार्थ-सिध्यर्थं पूजितोयः सुरासुरैः।
सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।5।।
यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूति ध्रुर्वा नीतिर्मतिर्मम।।6।।
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वरा।
देवादिशन्तुन सिद्धि ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा।।7।।
विनायक गुरुं भानुं ब्रह्मा विष्णु महेश्वरान्।
सरस्वती प्रणाम्यादौ सर्वकार्यार्थ-सिद्धये।।8।
तदैव लग्नं सुदिनं तदैव तारावलं चन्द्रवलं तदैव।
विद्यावलं दैववलं तदैव लक्ष्मीपतेस्तेऽऽघ्रियुगंस्मरामि।।9।।

ॐ सर्व मंगल मांगल्ये। शिवे। सर्वार्थ साधिके !
शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि! नमोऽस्तुते।।10।।

दूर्वा अक्षत चढ़ा देवे।

विनियोग :-

गणानां त्वेति प्रजापति ऋषिः यजुश्छन्दो
गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने पूजने विनियोगः।

गणेश स्थापन करे-

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ
हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम।
आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

आवाहनम् :-

एह्येहि हेरम्ब महेश पुत्र समस्त विघ्नौघविनाशदक्ष।
मांगल्य पूजा प्रथमं प्रधानं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

पुष्पासनम् :-

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व शान्ति करंशुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाणं परमेश्वर।।

पाद्यम् :-

गंगोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्यसंयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय अर्पयामि सुरेश्वर।।

अर्घ्यम् :-

स्वर्णपात्र स्थितं तोयं गंन्धपुष्पादिभिर्युतम्।
सहिरण्य ददाम्यर्घ्यं गृहाणं गणनायक।।

स्नानीयजलम् :-

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
स्नानार्थ मया दतं गृहाण गजकर्णक॥

पयस्नानम् :-

ॐपयः पृथिव्याम्पयऽऔषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे-
पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥

दधि स्नानम् :-

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नोमुखा करत्प्रण आयू ँ षितारिषत्॥

घृतस्नानम् :-

ॐघृतंघृतपावानः पिवतव्वसांवसापावानः पिंवतान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा।
दिशः प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा॥

मधुस्नानम् :-

मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥
ॐ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिव रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता॥
ॐमधुमान्नोवनस्पतिर्म्मधुमाँ ऽऽ अस्तुसूर्य्यः॥ माध्वीर्गावोभवन्तु नः॥

शर्करास्नानम् :-

ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्येसन्तꣳ समाहितम्। अपाꣳ
ँरसस्ययोरसस्तंवो। गृह्णाम्युतममुपयामगृहीतोऽसिन्द्रायत्वा-
जुष्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥ उद्वर्तनस्नानम्- नानासुगन्ध
द्रव्यं च चन्दनं केशरं युतम्। उद्वर्तनंमया दतं गृहाण गणनायक॥

शुद्धस्नानम् :-

कावेरी नर्वदा वेणी तुंगभद्रा सरस्वती।
गंगा च यमुना सा वाः स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्॥

वस्त्रम् :-

रक्ताम्बरंधराधीशं पाशाऽकुश धरेश्वरः।
युग्मं वस्त्रं मयादत्तं गृहाणं परमेश्वरः॥

यज्ञोपवीतम् :-

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
सुवर्णमूलैरचितं उपवीतं गृहाण मे॥

गन्धम् :-

श्री खंड चन्दनं दिव्यं केशरादि समन्वितं।
गन्धं गृहाण देवेश मम सौख्य विवर्धयः॥

अक्षतम् :-

अक्षतं निर्मलं शुद्धं रक्त चन्दन मिश्रितं।
मयानिवेदिता भक्त्या गृहाणं गजकर्णकः॥

पुष्पम् दूर्वा :-

पाटलामल्लिका दूर्वा शतपत्राणि विघ्नहृत्।
सुपुष्पाणि गृहाण त्वं विवुधप्रियसर्वतः॥

धूपम् :-

वनस्पति रसोद्भूतोगन्धाढ्योगन्ध उत्तमः।
आघ्रेय सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

दीपम् :-

साज्यं च वर्तिका युक्तं वह्निनां योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्येतिमिरापहम्॥

नैवेद्यम्-

शर्करा घृत संयुक्तं मधुरं स्वादु उत्तमम्।
नानाविधिं गृहाणेदं नैवेद्यं कृपया प्रभो॥

दक्षिणाम् :-

हिरण्यं गर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।
अनन्तं पुण्यं फलदं मतः शान्ति प्रयच्छ मे।

फलम् :-

इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरतस्तवः।
तेन मे सफलावाप्ती भवे जन्मनि जन्मनि॥

ताम्बूलम् :-

पूगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

विशेषार्घ्यम् :-

रक्ष रक्ष गणाध्यक्षः रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानां अभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात्।१॥
द्वैमातुर कृपा सिन्धो षाणमातुरग्रज प्रभो।
वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद॥२॥
गृहाणार्घ्यमिदं देव सर्व देव नमस्कृतम्।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदामम॥३॥

प्रार्थना :-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय॥
नागाननाय सुरयज्ञविभूषिताय गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय॥
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्त प्रसन्न वरादाय नमो नमस्ते॥
नमस्ते ब्रह्म रूपाय विष्णु रूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्र रूपाय करिरूपाय ते नमः॥
विश्वरूप स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक॥
लम्बोदरं! नमस्तुभ्यं सततं मोदकं प्रियः।
निर्विघ्नं कुरु में देव! सर्व कार्येषु सर्वदा॥
अनया पूजया श्री गणेशः सांगं सपरिवारः प्रीयताम् न ममः॥

॥ अथसंकल्प ॥

हाथ में तिल जल तथा वरण द्रव्य रखे-

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोतमस्य तत्सत् पृथिव्यां श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे सप्तमे वैवस्वत् मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे पंचाशत् कोटियोजनविस्तीर्ण भूमण्डलान्तर्गत सप्तद्वीपमध्यवर्तिनी जम्बूद्वीपे भरतखंडे तत्राऽपि परमपुनीते भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत काशी कुरुक्षेत्र पुष्कर प्रयागादि नाना तीर्थ युक्त 'अमुक' जनपदे तत्जनपदान्तर्गते अमुक ग्रामे श्री गंगा यमुनयोर अमुक दिग्विभागे देव अग्नि ब्राह्मणानां सन्निधो श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्यसमयतो प्रभवादि षष्ठि संवत्सराणां मध्ये अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुकराशि स्थिते सूर्ये, चन्द्रे गुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण विशिष्ठे अस्मिन् शुभ क्षणे अमुक गोत्रोत्पनः अमुक शर्म्मा (वर्मागुप्त वा दासो) सपरिवारस्य सभार्यस्य मेषादि मीन पर्यन्तं समस्तभय व्याधी जरा पीड़ा दुरितोप शमनार्थ श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थ अस्माकं सर्वेषां सकुटुम्बानां

क्षेमस्थैर्यायुरारोग्य एश्वर्य दीर्घायुः विपुल धनधन्य-स्थिरलक्ष्मींपुत्रपौत्रद्यभिवृद्धिपूर्वकं मम इह जन्मनिं जन्मान्तरेवा कृतकायिक वाचिक मानसिकसांसर्गिक समस्तपाप क्षयार्थब्राह्मणद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ गणपत्यादि पंचाग देवता पंचोपचारेण षोडषोपचारेण पूजनं करिष्ये। साक्षतजलंक्षिपेत्। अथवा-अमुक देवता प्रीत्यर्थं अमुक व्रतोद्यापनं स्वयं ब्राह्मण द्वारा वा करिष्ये। अथवा-अमुक गोत्रोत्पन्नान अमुकशर्म्मणो विप्रानेभिर्गन्धक्षत-पुष्पताम्बूलमुद्रिकासनमालावासोभिर्जापकत्वेन (पाठकत्वेन) युष्मानहं वृणे। इति वृता। वृतास्मः प्रतिवचनम्। ततः पृथक-पृथक दक्षिण हस्ते सूत्रं वध्नीयात्।

सूत्र बाधने का मंत्र-

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षामाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणां श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥
ततः विप्रो यजमानहस्तेऽपि रक्षासूत्रं वध्नीयात्

यजमान के हाथ में सूत्र बांधने का मंत्र-

ॐ यदावध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ँशतानिकाय सुमनस्यमानाः।
तन्मऽआ वध्नामि शतशारदायायुष्मांजरदष्टिर्यथासम्॥

॥ इति संकल्प ॥

॥ अथ कलश पूजनम् ॥

भूमि का स्पर्श करके निम्न मंत्र पढे-

भूमिस्पर्श :-

ॐ भूरसि भूमिसरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीं मा हिꣳसीः॥

फिर भूमि पर धान्य रखे

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनां पयोऽसि॥

धान्य के ऊपर कलश रखे

स्थापनम् :-

ॐआजिघ्र कलशं मह्या त्वां विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः॥

कलश में जल डाले -

जलम् :-

ॐ वरुण स्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभ सर्जनी स्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋत् सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदन मासीत्॥

गन्धम् :-

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
इश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

सर्वोषधी :-

ॐ या औषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनैनु बभ्रुणामह ँ शतं धामानि सप्तच॥

दुर्वांकुरम् :-

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहेण शतेन च॥

कुशांकुरम् :-

पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यछिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥

सप्तमृत्तिका :-

ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्म सप्रथाः॥

पूगीफलम् :-

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ँहसः॥

पंचरत्नम् :-

ॐपरिवाजपतिः कविरग्निर्हव्या न्य क्रमीत्।
दधद्रत्नानि दाशुषे॥

दक्षिणाम् :-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥

पंचपल्लव :-

ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता।
गोभाजइत्किलासथयत् सनवथ पुरुषम्॥

पूर्णपात्रम् :-

ॐपूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जँ शतक्रतो॥

वस्त्रम् :-

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उश्रेयान भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मानसा देवयन्तः॥
ततः वस्त्रावेष्टितं नारिकेलफलं पूर्णपात्रोपरि न्यसेत्॥
ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामु म्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण॥

विनियोग :-

तत्वायामिति शुनषेफ ऋषि त्रिष्टुप्छन्दो वरुणोदेवता वरुणावाहनेपूजने विनियोगः।

आवाहनम् :-

तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ स मा न आयुः प्रमोषीः॥

से आवाहन कर पूजन करे।

वरुण कलश देवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे आसनं पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं वस्त्रं गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।

पूजन सामग्री चढ़ाकर कलश में देवताओं का ध्यान करें।

कलशस्योपरि ब्रह्मा विष्णु रुद्रादि देवता

आवाहनम् :-

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ गणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीप वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः ॥

प्रार्थना करे-

ॐ देवदानव सम्वादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोसि तदाकुम्भविधृतो विष्णुना स्वयम्।
त्वतोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिता।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणां प्रतिष्ठिताः॥
शिव स्वयं त्वमेवासि विष्णु त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैत्रिका॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः।
त्वत् प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भवः॥
सानिध्यं कुरु मे देवः प्रसन्नो भव सर्वदा॥

नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय-सुश्वेत हाराय सुमंगलाय।
सुपाश हस्ताय झषासनाय जलाधि नाथाय नमो नमस्ते॥
अनया पूजया वरुण कलश देवता प्रीयन्ताम् न मम॥

॥ इति वरुण कलश पूजनम् ॥

।। अथ पुण्याह वाचनम् ।।

प्रथम यजमान ब्राह्मणो का पूजन करे तत्पश्चात यजमान कहे–

ॐ शिवा आपः सन्तुः। यजमान ब्राह्मणो को जल देवे।

विप्रा– ॐ सन्तु शिवाः आप, ब्राह्मण जल लेवे।

यजमान– ॐ सौमनस्य मस्तु, यजमान ब्राह्मणों को पुष्प देवे।

विप्रा– ॐ अस्तु सौमनस्यम्, ब्राह्मण पुष्प लेवे।

यजमान– ॐ अक्षताः पान्तु, यजमान ब्राह्मणों को अक्षत देवे।

विप्रा– ॐ मांगल्य मस्तु, ब्राह्मण अक्षत लेवे।

यजमान– ॐ गन्धाः पान्तु, यजमान ब्राह्मणों को गन्ध देवे।

विप्रा– ॐ आयु स्मस्तु, ब्राह्मण गन्ध लेवे।

यजमान– ॐ पुष्पाणि पान्तु, यजमान ब्राह्मणों को पुष्प देवे।

विप्रा– ॐ सोश्रियमस्तु, ब्राह्मण पुष्प लेवे।

यजमान– ॐ ताम्बूलानि पान्तु, यजमान ताम्बूल देवे।

विप्रा– ॐ ऐश्वर्य मस्तु, ब्राह्मण ताम्बूल लेवे।

यजमान– ॐ दक्षिणाः पान्तु, यजमान ब्राह्मणो को दक्षिणा देवे।

विप्रा– ॐ बहुधनंचास्तु, ब्राह्मण दक्षिणा लेवे।

पुनः यजमान आचार्यादि ब्राह्मणों को प्रणाम कर प्रार्थना करें।

श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु।

विप्रा– तथास्तु।।

यजमान– यत्कृत्वा सर्व वेद–यज्ञ–क्रिया कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादि कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वणा शीर्वचनं बह्वर्षिभिः। समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

विप्रा– वाच्यताम्, इस प्रकार ब्राह्मण कहे।

यजमान– व्रत–नियम तपः स्वाध्याय क्रतुदमदान–विशिष्ठानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

विप्रा– समाहित मनसः स्मः।

यजमान- प्रसीदन्तु भवन्त।
विप्रा- प्रसन्नास्मः।

ततो यजमानः अवनिकृत जानुमण्डलः कमल मुकुल सदृश अंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना सुवर्ण (ताम्र) कलशं धारयित्वा भूमौ स्थापिते पात्रद्वये प्रथमपात्रेकिञ्चितउदकं पातयेत् तथा ब्राह्मण वदेयुः।

इसके पश्चात् यजमान उकडू बैठकर दोनों हाथों को कमल के समान अंजली बनाकर हाथों पर कलश रखे तथा कलश को शिर से लगावे। ब्राह्मण दो पात्रों को रखे तथा प्रथम पात्र में थोड़ा जल डाले। और प्रथम पात्र के जल से यजमान को सपरिवार छींटे लगावें।

ब्राह्मणः - शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवंकर्म्मास्तु कर्मसमृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु, वेद समृद्धिरस्तु, शास्त्रसमृद्धिरस्तु, पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु धन-धान्य समृद्धिरस्तु इष्टंसम्पदस्तु।

दूसरे पात्र के जल को यजमान के ऊपर घुमाकर बाहर फेंके।

अरिष्टनिरसनमस्तु यत्पापमरोगमऽशुभम्ऽकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु। पुनः प्रथम पात्र से-यच्छ्रेयस्तदस्तु। उत्तरेकर्मणि निर्विघ्नमस्तु उत्तरोत्तराः हरहरभिवृद्धिरस्तु उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्तां तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रहलग्नादि देवताः प्रीयन्ताम्। दुर्गा पांचाल्यौ प्रीयन्ताम् अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। वशिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। अरुन्धती पुरोगाः

एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रियन्ताम्। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। अम्बिका सरस्वत्यौ प्रीयेन्ताम्। श्रद्धामेधे प्रीयन्ताम्। भगवती कात्यायनीप्रियन्ताम्। भगवती माहेश्वरी प्रीयन्ताम्। भगवती ऋद्धिकरी प्रीयन्ताम्। भगवती वृद्धिकरी प्रियन्ताम्। भगवती सिद्धि करी प्रीयताम्। भगवती पुष्टिकरी प्रीयन्ताम्। भगवती तुष्टिकरी प्रियन्ताम्। भगवन्तौ विघ्न विनायकौ प्रीयेन्ताम्। सर्वाः कुलदेवताः प्रियन्ताम्। सर्वाः ग्रामदेवताः प्रियन्ताम्। सर्वाः इष्ट देवताः प्रियन्ताम्। पुनः द्वितीय पात्र से जल यजमान के ऊपर घुमाकर बाहर फेंके। हताश्च ब्रह्मद्विषः हताश्च परिपन्थिनः। हताश्च विघ्नकर्तारः। शत्रवः पराभवंयान्तु शाम्यन्तु घोराणि। शाम्यन्तु पापानि साम्यत्वीतयः। पुनः प्रथम पात्र से- शुभानि वर्द्धन्ताम् शिवाः आपः सन्तु शिवा ऋतवः सन्तु शिवा अग्नयः सन्तु शिवा आहुतयः सन्तु शिवा ओषधयः सन्तु शिवा वनस्पतयः सन्तु शिवा अथितयः सन्तु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः प्रजन्यो वर्षतु फलवत्यो न औषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पन्ताम्। शुक्रांगारक-बुद्ध-बृहस्पति- शनैश्चर- राहु-केतु-सोम सहिता आदित्यपुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम्। भगवान्-नारायणः प्रीयन्ताम्। भगवान् प्रजन्यः प्रीयताम्। भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु॥

ततौ यजमानः कलशं भूमौ निधाय प्रथम पात्रीय जलेन यजमानस्य सपरिवारस्य शिरः संमृज्य द्वितीय पात्र जलं एकान्ते पातयेत्।

यजमान कलश को भूमि पर रखे, ब्राह्मण प्रथम पात्र के जल से यजमान का सपरिवार अभिषेक कर दूसरे पात्र के जल को एकान्त में गिरा देवे। पुनः यजमान ब्राह्मण से प्रार्थना पूर्वक कहे-**ॐ ब्राह्मं पुण्यं महद्यंच्च सृष्ट्युत्पादन कारकम्। वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥ भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुक व्रतोद्यापन कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मणाः- ॐ पुण्याहम् पुण्याहम् पुण्याहम्॥ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीह्मिमा॥

यजमान- ॐ पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम्। ऋषिभिः सिद्ध गन्धर्वैस्ततकल्याणं ब्रुवन्तु नः॥ भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यगृहे अमुक कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणा- ॐ कल्याणम्, कल्याणम्, कल्याणम्॥ ॐ यथे मां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्यांँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादौ नमतु॥

यजमान- ॐ सागरस्य च या लक्ष्मी महालक्ष्म्यादिभिः कृताः। सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां तामृद्धि ब्रुवन्तु नः॥ भो ब्राह्मणाः मम सपरिवारस्य गृहे ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु॥

ब्राह्मणा- ॐ ऋध्द्यताम्, ऋध्द्यताम्, ऋध्द्यताम्।। सत्रस्यऽ ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिर-मृताऽअभूम्। दिवं पृथिव्याऽअध्यारुहामाविदाम देवान् स्वर्ज्योतिः।।

यजमान- स्वस्तिस्तुया विनाशाख्या नित्यं मंगलदायिनी। विनायक प्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे स्वस्ति भवन्तो बुवन्तु।।

ब्राह्मणा- ॐ आयुस्मते स्वस्ति, आयुस्मतेस्वस्ति, आयुस्मते स्वस्ति।। ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमान- समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्द कारका। हरि प्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मण मम सकुटम्बस्य सपरिवारस्य गृहे श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणा- ॐ अस्तु श्री, अस्तु श्री, अस्तु श्री।। ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णनिषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण।। विप्रेभ्यो दक्षिणादानम्।।

ॐ अद्यः कृतैतपुण्याहवाचन कर्मणः सांगता सिद्धयर्थ तत्सम्पूर्णफल प्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति हिरण्यादि दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजेत्। इति पुण्याहवाचनम्।।

।। अथ ॐ कारदेवता पूजनम् ।।

ओंकार में ब्रह्मा विष्णु शिव का ध्यान करे—

ओंकार बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमोनमः।।

ओंकारस्थित ब्रह्माविष्णुर्महेश्वराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत् पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि। ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरुस्ताद्वि सीमतः सुरुचोवेनऽआवः। सबुधन्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाँ सुरे स्वाहा।। ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। ॐकार के ऊपर उक्त तीन मंत्रों से ब्रह्मा-विष्णु शिव का पूजन कर के फिर निम्न मंत्र से प्रार्थना करे

आकाशात् पतितं तोयं यथागच्छतु सागरे।
सर्वदेवं नमस्कारं केशवं प्रतिगच्छति।।

।। इति ॐकार देवता पूजनम् ।।

।। अथ सप्तघृतमातृका पूजनम् ।।

ध्यान - या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धि।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

पूजन करे-
श्री देव्यैभ्योनमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं हिरण्यं च समर्पयामि। ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्रणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णंन्निषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण॥

ॐ श्रियैनमः। ॐलक्ष्म्यैनमः। ॐ धृत्यैनमः।
ॐ मेधायैनमः। ॐ स्वाहायैनमः।
ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ सरस्वत्यैनमः।
श्री लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तेता घृतमातरः॥

से प्रार्थना करे।

।। इति सप्तघृतमातृका पूजनम् ।।

।। अथ वसुधारा पूजनम् ।।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेणशत धारेणसुप्वा कामधुक्षः॥ वसुधारा देवताभ्योनमः सम्पूज्य। आवाहन आसनं पाद्यं अर्घ्यं पंचामृत स्नानं जल स्नानं वस्त्रं यज्ञोपवीतं चन्दनं अक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं हिरण्यदक्षिणां च समर्पयामि।
प्रार्थना-दिव्यवस्त्रा दिव्य देहा दिव्यमाला विभूषिता।
वसवष्टौ महाभाग वरदाः सन्तु मे सदा ॥

।। इति वसुधारा पूजनम् ।।

।। संक्षिप्तनान्दी श्राद्ध ।।

नान्दी श्राद्ध में विश्वेदेवा की दो कुशा पर गाठ देकर पत्ते पर रख देवे तथा दूसरे पत्ते पर माता पितामही प्रपितामही के निमित्त तीन कुशाओं को गाठ मार कर रखे। तीसरे पत्ते पर पिता पितामह प्रपितामह के निमित्त, चौथे पत्ते पर, मातामही प्रमातामही वृद्धप्रमातामही पाँचवे पर मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता मह हेतु कुल मिलाकर चार पत्तों पर तीन तीन कुशा एवं एक पत्ते पर दो कुशा विश्वेदेवा हेतु रख कर संकल्प करे। **तत्सदद्य मासोतमेऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुककर्मांगीभूतं आभ्युदयिक श्राद्धमहं करिष्ये।**

पूजन - ॐ सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः पाद्यं स्वाहा अनामयं च वृद्धि। ॐ अमुक गोत्रः मातृपितामही प्रपितामह्य नान्दीमुख्याः ॐ भूर्भुवः स्व इदं वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धि। अमुकगोत्रः पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दी मुखाः।। ॐ भूभुर्वः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहा नामयं च वृद्धि। अमुक गोत्रः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीसहिताः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्व इदं पाद्यं स्वाहा नामयं च वृद्धि। ॐ श्रीगणेशाम्बिके भूर्भुवः स्व इदं वः पाद्यं स्वाहा नामयं च वृद्धिः।

इस प्रकार कह कर पत्तों के ऊपर रखी कुशाओं पर जल डाले। इसके उपरान्त प्रत्येक पत्तों पर गन्ध पुष्प आदि डाले। दीपक दिखावें नैवेध एवं दक्षिणा आदि भी चढ़ावें।

पुनः युग्म ब्राह्मण हेतु आमान्न संकल्प करे-

सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवा नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः

युग्म ब्राह्मण भोजन पर्यन्तं दास्यमानमन्न यथाशक्ति सोपस्करं स्वाहानामयंच वृद्धिः युग्म भोजन आमानं नैवेद्यं तन्निष्क्रयं दक्षिणां च दातुसमुत्सृजेत्।

प्रार्थना- माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही।
पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः॥
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः।
एते भवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मंगलम्॥
अनेनकर्मणाः नान्दीमुख देवताः प्रीयन्ताम् न ममः॥

॥ इति संक्षिप्त नांदी श्राद्धम् ॥

॥ अथ षोडश-मातृका पूजनम् ॥

गौर्यादि षोडश मातृका का पुष्प लेकर ध्यान करें।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुल देवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोड़श॥
गौर्याऽदि षोडश मातृका देवताभ्योनमः ध्यानं समर्पयामि॥

प्रतिष्ठापनम्-

ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीद् सदन मातरं पुरः। पितरं चप्रयन्त्स्वः। ॐ गंगणपतयेनमः आवाहयामिस्थापयामि पूजयामि। ॐ गौर्ये नमः आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि,। पद्मायै नमः आवाहयामि स्थापयामिः पूजयामि। शच्यैनमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। मेधायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। सावित्र्यैनमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। विजयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

जयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। देवसेनायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। स्वाहायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। मातृभ्योनमः आवाहयामि स्थापयामि पूजायामि। लोकमातृभ्योनमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। धृत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। पुष्ट्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। तुष्ट्यैनमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। कुल देवतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। गौर्याद्या षोडश मातृका गणपति सहिताः सुप्रतिष्ठताः वरदाः भवन्तु। गौर्यादिषोडश मातृकादेव्यैभ्यो नमः गन्धाक्षंत पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां ताम्बूलं फलं च समर्पयामि॥

प्रार्थना-

ॐ ब्रह्माणी कमलेन्दु सौम्यवदनां माहेश्वरी लीलया।
कौमारी रिपुदर्प नाशनकरी चक्रायुधा बैष्णवी॥
वाराही घनघोर घुरघुरुमुखी चैन्द्रिच वज्रायुधा।
चामुण्डा गण नाथ रुद्र सहिता रक्षन्तु मां मातरः॥

॥ इति मातृका पूजनम् ॥

।। अथ नवग्रह पूजनम ।।

वर्तुलाकृति सूर्य पूजन करे-रक्त पुष्पाक्षतैरावाहयेत्।
जपा कुसुमसंकाश काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिसर्व पापघ्नं सूर्यआवाहयाम्यहम्।।
ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।
ॐ भूभुर्वः स्व कलिंगदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण
सूर्यायः नमः आवाहयाम्मि, स्थापयामि, पूजयामि।
अर्ध चन्द्राकृतिसोम पूजन करे- श्वेतपुष्पाक्षतैरावाहयेत्-
दधि-शंख-तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
ज्योत्सनापतिं निशानाथं सोममावाह्याम्यहम्।।
ॐ इमं देवाऽअसपत्न ँसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ट्याय
महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमम मुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै
विशऽ एष वोऽमी राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ
राजा।। ॐ, भुर्भुवःस्वः यमुनातीरोद्भवः आत्रेयसगोत्रः
शुक्लवर्ण सोमायनम, आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
त्रिकोणाकृति भौम पूजन करे-रक्त पुष्पाक्षतैरावाहयेत्।
धरणी गर्भ सम्भूतं विद्युत् कान्ति सम-प्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौमं आवह्याम्यहम्।।
ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम्।
अपा ँ रेता ँ सिजिन्वति।। भूर्भुवः स्वः अवन्ति देशोद्भव भारद्वाज
गोत्र रक्तवर्ण भौमायनमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
वाणाकार बुध पूजन करे- हरितपुष्पाक्षतैरावाहयेत्।
प्रियङ्गु कलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेत बुधमावाहयाम्यहम्।।
ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं
च। अस्मिन्त्सधस्थेऽध्युतरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण बुधाय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
चतुष्कोणाकृति बृहस्पति पूजन करे पीत, पुष्पाक्षतैरावाहयेत्।
देवानांञ्च ऋषिणांच गुरु काञ्चन सन्निभम्।
बन्द्य भूतं-त्रिलोकानां गुरुआवाहयाम्यहम्।।
ॐ बृहस्पते ऽ अति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽ ऋतप्रजात् तदस्मासु द्रविणंधेहि चित्रम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धु देशोद्भव आंगिरसगोत्र पीतवर्ण बृहस्पतये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

पञ्चकोणाकृति शुक्र पूजन करें-श्वैत पुष्पाक्षतैरावाहयेत्।
हिम-कुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्।।
ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा ब्व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु।। ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकट देशाद्व भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण शुक्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।

धनुराकारशनि पूजन करे- कृष्णपुष्पाक्षतैरावाहयेत।
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्ड सम्भूतं शनिआवाहयाम्यहम्।।
ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्र वन्तु नः।। ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण शनैश्चराय नमः आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।

शूर्पाकार राहु पूजन करे-कृष्णपुष्पाक्षतैरावाहयेत्।
अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिहिका गर्भसम्भूतं, राहुमावाहयाम्यहम्।।
ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया

वृत्ता।। ॐ भुर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण राहवेनमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

ध्वजाकार केतु पूजन करे-**धूम्र पुष्पाक्षतैरावाहयेत्। पलाश पुष्प सङ्काश तारकाग्रह मस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकम् घोरं केतुमावाहयाम्यहम्।। ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुष द्भिरजायथा।। ॐ भूर्भुवः स्व अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनीसगोत्र धूम्रवर्ण केतवेनमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। सूर्यादिनवग्रह देवताभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं हिरण्य दक्षिणां च समपर्यामि। ॐ ग्रहा ऊर्जा हुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वो ऽ हमिषमूर्जँ समग्रभमुपयामगृहीतो ऽ सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। सम्पृचौ स्थः सं मा भद्रेण पृङक्त विपृचौ स्थो वि मा पाप्मना पृङक्तम्।। तत्रैव मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरिका भद्रिका उल्का, शिद्धा, संकटा, अष्ट योगिनिभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा च समर्पयामि।**

पूजन कर प्रार्थना करे-

प्रार्थना :-

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मंगलं मङ्गलः।
सद्बुद्धि बुधौ गुरुश्च गुरूतां शुक्रः सुखं शं शनि।।
राहुर्वाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलोस्योन्नतिम्।
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।
आयुश्च विद्या च तथा सुखंच धर्मार्थलाभौबहुपुत्रतांच।
शत्रुक्षयं राजसु पूज्यतांच तुष्टा ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु।।
ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतु सर्वेग्रहाः शान्तिकराभवन्तु।।
अनेन पूजनेन नवग्रह देवता प्रीयन्ताम् नममः।।

।। इति नवग्रह पूजनम् ।।

।। अथ अधिदेवता पूजनम् ।।

ॐ त्र्यम्बकायै नमः। ॐ अम्बिकायैनमः। ॐ स्कंदायै नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐकालायनमः। ॐ चित्रगुप्तायनमः।। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्य दक्षिणांच समर्पयामि।

।। प्रत्यधिदेवता पूजनम्।।

ॐ अग्नयेनमः। ॐ अद्भ्यः नमः। ॐ पृथिव्यैनमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ इन्द्राण्यैनमः। ॐ प्रजापतये नमः। ॐ सर्पेभ्यः नमः। ब्रह्मणे नमः।। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतं पुष्पं धूप-दीप--नैवेद्यं दक्षिणा च समर्पयामि।

।। पंचलोकपाल पूजनम्।।

ॐ गणपतये नमः। ॐ दुर्गायै नमः।
ॐ वायवे नमः। ॐ अन्तरिक्षायनमः।
ॐ अश्विभ्यां नमः।

गणपत्यादि पंचलोकपाल देवताभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

॥ सर्वतोभद्रदेवतास्थापनम् ॥

एक समचौरस वेदी पर सर्वतो भद्र का निर्माण कर कलश स्थापित कर ब्रह्मादि देवताओं का आवाहन करें-

१. मध्ये कर्णिकायाम् :-

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि (आवाहयामि स्थापयामि सब देवताओं के नाम का उच्चारण करने के बाद कहते रहे)

२. उत्तरेवाप्याम्-ॐ भू० सोमाय नमः सोमं.........।

३. ईशन्यां खण्डेन्दौ-ॐ भू० ईशानाय नमः।

४. पूर्ववाप्याम्- ॐ भू० इन्द्राय नमः।

५. आग्नेयां खण्डेन्दौ- ॐ भू० अग्नये नमः।

६. दक्षिणेवाप्याम्- ॐ भू० यमाय नमः।

७. नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ- ॐ भू० निर्ऋतये नमः।

८. पश्चिमे वाप्याम्- ॐ भू० वरुणाय नमः।

९. वायव्यां खण्डेन्दौ- ॐ भू० वायवे नमः।

१०. वायु-सोमयोर्मध्ये- ॐ भू० अष्टवसुभ्यो नमः।

११. सोमेशानयोर्मध्ये- ॐ भू० एकादश रुद्रेभ्यो नमः।

१२. ईशानेन्द्रमध्ये- ॐ भू० द्वादशादित्येभ्यो नमः।

१३. पूर्वाग्नयोर्मध्ये- ॐ भू० अश्विभ्यां नमः।

१४. अग्नि यममध्ये- ॐ भू० विश्वेदेवेभ्यो नमः।

१५. यम-निर्ऋति मध्ये- ॐ भू० सप्त यक्षेभ्योनमः।

१६. निर्ऋति-पश्चिम मध्ये- ॐ भू० अष्टकुल नागेभ्योनमः।

१७. वरुण-वायु मध्ये-ॐ भू० गन्धर्वप्सरसे नमः।

१८. ब्रह्म-सोममध्ये- ॐ भू० स्कन्दाय नमः।
१९. स्कन्दोत्तरतः- ॐ भू० वृषभाय नमः।
२०. वृषवोत्तरे- ॐ भू० शूलाय नमः।
२१. तदुत्तरे- ॐ भू० महाकालाय नमः।
२२. ब्रह्मेशानमध्ये-ॐ भू० प्रजापतिभ्यो नमः।
२३. ब्रह्मेन्द्र मध्ये- ॐ भू० दुर्गायै नमः।
२४. तत्पूर्वे- ॐ भू० विष्णवे नमः।
२५. ब्रह्माग्निमध्ये- ॐ भू० स्वधायै नमः।
२६. ब्रह्म-यम मध्ये- ॐ भू० मृत्युरोगेभ्यो नमः।
२७. ब्रह्म-निर्ऋतिमध्ये- ॐ भू० गणपतये नमः।
२८. ब्रह्म-वरुण मध्ये- ॐ भू० अद्भ्यो नमः।
२९. ब्रह्मण वायु मूले- ॐ भू० मरुद्भ्यो नमः।
३०. ब्रह्मणपाद मूले- ॐ भू० पृथिव्यै नमः।
३१. तदुत्तरे- ॐ भू० गंगानदीभ्यो नमः।
३२. तदुत्तरे- ॐ भू0 सप्त सागरेभ्यो नमः।
३३. कर्णिका परिधौ- ॐ भू० मेरवे नमः।
३४. ततः वाह्यपरिधौ सोमादि क्रमेण- ॐ भू० गदायै नमः।
३५. ईशान्याम्- ॐ भू० त्रिशूलायै नमः।
३६. पूर्वे- ॐ भू० वज्राय नमः।
३७. आग्नेयाम्- ॐ भू० शक्तये नमः।
३८. दक्षिणे- ॐ भू० दण्डाय नमः।
३९. नैर्ऋत्याम्- ॐ भू० खड्गाय नमः।
४०. पश्चिमे- ॐ भू० पाशाय नमः।

४१. वायव्याम्- ॐ भू अंकुशाय नमः।
४२. तद्बाह्ये रक्तपरिधौ सोमादि क्रमेण-ॐ भू० गौतमाय नमः।
४३. ईशान्याम्- ॐ भू० भारद्वाजाय नमः।
४४. पूर्वे- ॐ भू0 विश्वामित्राय नमः।
४५. आग्नेयाम्- ॐ भू० कश्यपाय नमः।
४६. दक्षिणे- ॐ भू० जमदग्नये नमः।
४७. नैर्ऋत्याम्- ॐ भू० वशिष्ठाय नमः।
४८. पश्चिमे- ॐ भू० अत्रये नमः।
४९. वायव्याम्- ॐ भू० अरुन्धत्यै नमः।
५०. तद्बाह्ये कृष्णपरिधौ-पूर्वे- ॐ भू० एन्द्रयै नमः।
५१. आग्नेयाम्- ॐ भू० कौमार्यै नमः।
५२. दक्षिणे- ॐ भू० ब्राह्मयै नमः।
५३. नैर्ऋत्याम्- ॐ भू० वाराह्यै नमः।
५४. पश्चिमे- ॐ भू० चामुण्डायै नमः।
५५. वायव्ये- ॐ भू० वैष्णव्यै नमः।
५६. उत्तरे- ॐ भू० माहेश्वर्यै नमः।
५७. ईशान्याम्- ॐ भू० वैनायक्यै नमः।

सर्वतोभद्र देवताओं का पूजन गन्ध अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य, दक्षिणा से कर लेवे।

प्रार्थना-

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

॥ इति सर्वतोभद्र देवता पूजनम्॥

।। एकलिंगतोभद्र स्थापनम्।।

१. ॐ असितांग भैरवाय्नमः। आवाहयामि स्थापयामि। पूजयामि। २. ॐ रुरु भैरवाय नमः। ३. ॐ चण्ड भैरवाय नमः। ४. ॐ क्रोध भैरवायनमः। ५. ॐ उन्मत भैरवायनमः। ६. ॐ कपाल भैरवायनमः। ७. ॐ भीषण भैरवायनमः। ८. ॐ संहारभैरवायनमः। ९. ॐ भवायनमः। १०. ॐ शवार्यनमः। ११. ॐ पशुपतये नमः। १२. ॐ ईशानाय नमः। १३. ॐ रुद्रायनमः। १४. ॐ उग्राय नमः। १५. ॐ भीमायनमः। १६. ॐ महतेनमः। १७. ॐ अनन्ताय नमः। १८. ॐ वासुकये नमः। १९. ॐ तक्षकायनमः। २०. ॐ कुलिशाय नम। २१. ॐ कर्कोटकाय नमः। २२. ॐ शंखपालाय नमः। २३. ॐ कम्बलाय नमः। २४. ॐ अश्वतराय नमः। २५. ॐ शूलायनमः। २६. ॐ चन्द्रमौलिनेनमः। २७. ॐ चन्द्रमसेनमः। २८. ॐ वृषभध्वजाय नमः। २९. ॐ त्रिलोचनाय नमः। ३०. ॐ शक्तिधराय नमः। ३१. ॐ महेश्वराय नमः। ३२. ॐ शूलपाणये नमः। आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

।। देव प्रतिष्ठा प्रयोग ।।

जिस देवता का व्रतोद्यापन करना हो उस देवता की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा गणपति आदि पञ्चांग देवता पूजन करके संकल्प करें।

देशकालौ संकीर्त्य विष्णु शिव वा दुर्गादि मूर्तिनां न्यूनातरिक्त दोष परिहारार्थे देवकलासानिध्यार्थं शिवः विष्णुवा दुर्गा प्रतिष्ठा करिष्ये।

।। अथ अग्न्युतारणम् ।।

प्रतिमा (मूर्ति) को निम्न मन्त्रों द्वारा स्नान करवायें पहले कुशा के जल से- **पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुना- म्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्यते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्द्द केयम्।।**

भस्मस्नानः- ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोत इषवे नमः वाहुभ्यां मुतते नमः।।

मृतिकास्नान :- ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधानिदधे पदम् समूढ़ मस्य पाᳬं सुरे स्वाहा।। गोयम स्नान : गन्ध द्वारा दुराधर्षां नित्यपुष्ठां करीषिणीम्। इश्वरीं सर्व भूतानां तामिहो पह्वयेश्रियम्।।

पय स्नान :- ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तिरक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

दधिस्नान :- ॐ दधिक्राणो अकारिणं जिष्णो रसस्ववाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रण आयू ᳬ षितारिषत्।।

मधु स्नान :- ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्तिसिन्धवः माध्वीर्नः सन्तोषधीः मधुनक्तमुतोषषोमधुमत्पार्थिवᳬरजः मधु द्योरस्तुनः पिता।। मधुमान्नो वनस्पर्तिमधुमांऽस्तुसूर्यः।। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

शकर स्नान :- ॐ अपाꣳरस मुद्वयसꣳ सूर्येसन्तꣳ-समाहितम् अपा ꣳरस्ससस्यंवोरसस्तं वो गृह्णाम्युतमुपयाय गृहीतो सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णांमेषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतम्॥

घृत स्नान :- ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनि घृतम्बस्यधाम अनुष्वध मादयस्य स्वाहा कृतं वृषभ भक्षिहव्यम्।

धान्य स्नान :- ॐ धान्यमसिधिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानायत्वा दीर्घामनु प्रषीतिमायुषेधां देवोवः सविता हिण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वद्दिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनां पयोऽसि। सर्वोषधीस्नान -या औषधीः पूर्वोजाता देवेभ्यस्त्रियुगपुरा। मनेनु बभ्रुणामहꣳ शतंधामानि सप्तच॥

कुशोदक स्नान - ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्वाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥

उपरोक्त स्नान करवाकर पुनः विष्णु प्रतिष्ठा में पुरुष सूक्त से शिव प्रतिष्ठा में रुद्र सूक्त से और दुर्गा प्रतिष्ठा में श्रीसूक्त से निरन्तर जल धारा देते रहें। इस प्रकार अग्न्युताराण करके जलाधिवास करें।

पहले जल पूजन करें-

ॐ तत्वायामि ब्राह्मणा वन्दमानस्तदासास्ते यजमानोहविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ समान आयुः प्रमोषीः॥

वरुण पूजन करके फिर मूर्ति को जल में सुला देवें। (जल में मूर्ति का वास एक रात अथवा समयानुसार रखें) पुनः मूर्ति को जल से उठाकर निम्न मंत्र बोलें-

ॐ उतिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्र यन्तु मरुतः सुदानव ऽ इन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥

घृतादिवास :- ॐ ॐ घृतंम्मिमिक्षे घृतमस्ययोनिग्घृतेश्रितो घृतम्बस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ व्वक्षि हव्यम्॥

पुनः मूर्ति को घृत से उठाकर अन्न में रखें-

धान्याधिवास :- ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय-त्वोदानाय त्वा व्यानायत्वा दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवोवः सविता हिरण्यपाणि प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनां पयोऽसि।

प्रतिमा को धान्य से निकालकर पुनः सुन्दर वस्त्रों के भीतर रखें:-

सय्याधिवास :- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरुथमासदतस्ववासोऽ अग्ने विश्वरूप ॐ सव्ययस्व विभावसो॥

सय्याधिवास से मूर्ति को उठाकर पुनः निम्न मंत्र बोलें-

ॐ उतिष्ठ तिष्ठगोविन्द उतिष्ठ गरुड़ध्वज। उतिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मंगलं कुरु॥

अथप्राण प्रतिष्ठासंकल्प :- अथपूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषण विशिष्ठायां शुभ पुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थंमम सकल कुटुम्बानां क्षेम आयु आरोग्यं एश्वर्याभिवृद्धयर्थ सकलकामना सिद्धयर्थं अुमक मूर्तिनां प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये॥

मूर्ति पर जलधारा डालें :-

ॐ समुद्रस्य त्वाकयाग्ने परिव्यायामसि।
पावको अस्मभ्य ँ शिवोभव॥१॥
ॐ हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परि व्ययामसि।
पावको अस्मभ्य ँ शिवोभव॥२॥
ॐ उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा।
अग्नेपितमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि
सेमं नो यज्ञं पावकवर्ण ँ शिवकृधि॥३॥

अपामिदंन्ययन समुद्रस्य निवेयनशनम्। अन्यास्ते अस्मतपन्तु

हेतयः पावको अस्मभ्य ँ शिवोभव॥४॥ अग्नेवापक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षिच॥५॥ सा नः पावक दीदिवोऽग्ने देवा२ऽइहावह। उपयज्ञ ँ हविश्चनः॥६॥ पावकया यश्चिन्तयन्त्या कृपा क्षामन् रुरूच उषसो न भानुना। तूर्व्वन यामन्नेतशस्य नू रणऽ आयो घृणेनततृषाणो अजरः॥७॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ँ शिवोभव॥८॥ नृषदे वेडप्सुषदे वेड् वर्हिषदे वेड्। वनसदे वेट् स्वर्विदेवेट्॥९॥ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानाँ संवत्सरीणमुप भागमासते। आहुतादो हविषो यज्ञे अस्मिन्त्स्वयं पिवन्तु मधुनो धृतस्य॥१०॥ ये देवा देवस्वधि देवत्व मायन्ये ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽ अस्य। येभ्योनऽ ऋते पवते धाम किंचन न ते दिवो न पृथिव्याऽ अधिस्नुषु॥११॥ प्राणदाऽ अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः। अन्यास्ते ऽअस्मत्त पन्तु हेतयः पावको ऽ स्मभ्यँ शिवोभव॥१२॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्म विष्णु रुद्राऋषय सामाथर्वाणि छन्दासि। क्रियामयवपुः प्राणख्या देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकम् प्राण प्रतिष्ठायां विनियोगः।

मूर्ति का स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र बोले-

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः अस्य मूर्तिनां प्राणाइह तिष्ठन्तु। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हंसः अस्य मूर्तिनां सर्वेन्द्रियाणि तिष्ठन्तु। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हंसः अस्य मूर्तीनां वाड्मनश्चक्षु श्रोत्रजिह्वा घ्राण प्राणाइहागत्य चिरं तिष्ठन्तु। अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यैप्राणा क्षरन्तु च। ॐ अस्यै

देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।। ॐ मनो जू तिर्जुषता माज्जस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमंन्तंनोत्वरिष्ठं यज्ञ ँ समिर्मन्दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामो३ प्रतिष्ठं। एष वै प्रतिष्ठिनाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवतिं। अब मूर्ति के कान में गायत्री जपें।

अथ नेत्रोन्मीलनम्- ॐ व्वृतिस्यासिकनीनकश्चक्षु र्द्धाऽअसि चक्षुम्मे देहि।।

अब नूतन मूर्ति का पूजन षोऽशोपचार से करके नूतन मूर्ति की संस्कार सिद्धि हेतु पद्रह बार ॐकार बोलें। **पुनः मूर्तिनां जातकर्मादि पंचदश संस्कारान् सम्पादये।**

पुनः प्रार्थना करें- **स्वागतं देव देवेश मद्‌भाग्यात्त्वमिहागतः। प्राकृतं त्वमदृष्टवा मां वालवत्परिपालय।।१।। धर्मार्थ कामशिद्ध्यर्थं स्थिरोभव शुभाय नः। सान्निध्यं तु सदा देव स्वार्चायां परिकल्पयः।।२।। भगवन् देव देवश त्वं पिता सर्व देहिनाम्। येनरूपेण भगवन् त्वयाव्याप्तं चराचरम्।।३।। ज्ञानतोऽज्ञानतो वापियावद् विधिरनुष्ठितः। स सर्वस्त्वं प्रसादेन समग्रो भवता ममः।। ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पण मस्तु।।**

।। इति प्राण प्रतिष्ठा प्रयोगः ।।

॥ नवरात्र व्रत ॥

नवरात्र व्रत करने से सम्पूर्ण आपत्तियों का नाश, मानसिक शान्ति, दीर्घायुः, विपुल धन सन्तान प्राप्ति, स्थिर लक्ष्मी, शत्रु पराजय तथा अभिष्ट सिद्धि के लिए नवरात्र व्रत किया जाता है।

यह नवरात्र व्रत वर्ष में चार बार मनाया जाता है। चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तक यह व्रत किया जाता है। आश्विन में विजय दशमी को शास्त्रों ने उद्यापन का विधान बताया है। यह व्रत शाक्त शैव वैष्णव एवं हिन्दू मात्र द्वारा किया जाता है। नौ दिनों तक देवी का पूजन, हवन तथा चण्डी पाठ किया जाता है जो स्वयं पाठ या व्रत हवन नहीं कर सकते वह ब्राह्मण द्वारा करवा सकते हैं। परन्तु शरीर साध्य उपवासादि तो स्वयं ही करने होते हैं।

नवराात्र विधान निर्णय -

पूर्व विद्वा तु या शुक्ला भवेप्रतिपदाश्विनी नवरात्र व्रतं तस्यां न कार्य शुभमिच्छता॥ "देवी पुराण" पूर्व विद्वा अर्थात् अमावस्य युक्त प्रतिपदा हो तो शुभ चाहने वाले को उसमें नवरात्र प्रारम्भ नहीं करने चाहिए।

न दर्श कलया युक्ता प्रतिपच्चण्डिकार्चने।
उदये द्विमुहूर्ताऽपि ग्राह्य सोद्यकारिणी॥ "देवी पुराण" जिस प्रतिपदा में अमावस्य की एक कला भी मिल गई हो वह चण्डिका के पूजन में उपयुक्त नहीं है। परा उदय काल में दो घड़ी भी प्रतिपदा हो तो वह उदय करने वाली है। उसमें दुर्गा पूजन करना चाहिए।

चित्रा वैधृति युक्ताचेत् प्रतिपच्चण्डिकार्चेने।
तयोरन्ते विधातव्यं कलशस्थापनं गुह॥ 'देवी पुराण'

हे गुह ! चण्डिका के पूजन की प्रतिपदा चित्रा और वैधृति से युक्त हो तो उसे समाप्त होने पर ही कलश स्थापना करनी चाहिए।

भविष्य पुराण में कहा है कि चित्रा और वैधृति में ही सारी प्रतिपदा हो तो तीन अंशों को छोड़कर चौथे अंश में पूजनादि करना चाहिए। रात्रि में घटस्थापना नहीं करना चाहिए। पर दिन प्रतिपदा न हो तो अमावस युक्त ग्रहण कर लेना चाहिए।



।। दुर्गा पूजन ।।

अग्न्युतारण की हुई प्रतिमा को अथवा दुर्गा मूर्ति को वेदी के ऊपर रख हाथ में रक्त पुष्प लेकर भगवती दुर्गा का ध्यान करे-

ध्यानम्-

ॐ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः।
शंखचक्रधनुः शरांश्चदधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।।
आमुक्तांगद हारकंकणरणत्काञ्चीरणन्नू पुरा।
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला।।1।।
या माया मधुकैटभ प्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी।
या धूम्रेक्षण चण्डमुण्डमथिनी या रक्तबीजासिनी।।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या सिद्ध लक्ष्मीपरा।
सा दुर्गा नवकोटि मूर्ति सहिता मां पातु विश्वेश्वरी।।2।।

रक्त पुष्प दुर्गा देवी पर चढ़ा देवे।

आवाहन :-

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।
संसार जननीं सत्यां कामदां करुणाकराम्।
अनन्त शक्ति सम्पन्ना दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

दुर्गा देवी पर अक्षत डाल आवाहन करें।

आसन :-

ॐ तामं ऽ आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।
रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यंकरं शुभम्।
आसनं च मयादत्तं गृहाणं परमेश्वरी।।

माँ दुर्गा को सुवर्ण का अथवा पुष्प आसन अर्पण कर दें।

पाद्य :-

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद-प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।
उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय गृहाण जगदम्बिका।।

शुद्ध जल को पैर धोने के लिए अर्पण करें।

अर्घ्य :-

कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामाद्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
स्वर्ण पात्र स्थितं तोयं गन्धपुष्प फलान्वितम्।
सहिरण्य ददाम्यर्घ्यं गृहाण परमेश्वरी।।

अर्घ्य में जल भर गन्ध पुष्प फल दक्षिणा सहित अर्पण करें।

आचमन :-

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं
श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये
अलक्ष्मिर्मे नश्यतां त्वां वृणो मि।।
सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
स्नानार्थ मया दत्तं गृहाण परमेश्वरी।।

आचमन जल सुगन्धियुक्त कर अर्पण कर देवें।

पयस्नान :-

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥
कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं तव हेतुश्च पयस्नानं मयार्पितम्॥

दुर्गा देवी को स्नान के लिए पय चढ़ाकर आचमन जल अर्पण कर देवें।

दधि स्नान :-

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः।
सुरिभ नो मुखा करत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत्॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देवि! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवती दुर्गा देवी को दही से स्नान करवाकर पुनः जल से स्नान करवायें।

घृत स्नान :-

ॐ घृतं घृत पावानः पिबत वसां वसापावानः
पिबतान्तरिक्षस्यहविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश
ऽआदिशोविदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा॥
नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

भगवती दुर्गा देवी को घी से स्नान करवाकर पुनः जल से स्नान करवायें।

मधु स्नान :-

ॐ मधु व्वाता ऽ ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्तोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः। मधु

द्यौ रस्तु नः पिता।। मधुम्मान्नोव्वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्य्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। वृक्ष पुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी का मधु से स्नान कर पुनः जल से स्नान करवायें।

शर्करा स्नान :-

ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्य्ये सन्त ँ समाहितम्। अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युतममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनि रिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्।। इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को शर्करा से स्नान करवा पुनः जल से स्नान करवायें।

पंचामृत स्नान :-

आदित्यवर्णेतपसोऽधिजातोवनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्य अलक्ष्मीः।।

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत् सरित्।
पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करा युतम्।
पंचामृतं मयाऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को पंचामृत से स्नान करवा पुनः जल से स्नान करवायें।

गन्धोदक स्नान :-

गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
मलयाचल सम्भूतं चन्दनाऽगरुसम्भवम्।

गन्धोदक मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को गन्ध, जल से स्नान करवा पुनः जल से स्नान करवायें।

उबटन :-

ॐ अ ं शुना ते अ ं शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽ अच्युतः।।
नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनी युतम्।
उद्वर्तनं मया दतं स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।।

भगवती दुर्गा को उबटन करवा पुनः जल से स्नान करवाये।।

शुद्ध स्नान :-

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरुणते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभो रूपाः पार्जन्याः।।

कावेरी नर्मदा वेणी चन्द्रभागा सरस्वती।
गंगा च यमुना ऽ सां वाः स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को तीर्थो के जल से शुद्ध स्नान करवायें।

वस्त्र :-

उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिंददातु मे।।
सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारिणे।
मयोपपादिते तुभ्यं गृहाण परमेश्वरी।।

दुर्गा देवी को वस्त्र अर्पण कर एक आचमन जल छोड़ दें।

कज्जल :-

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्ये सुभगेशान्तिकारिके।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्ना गृहाण परमेश्वरी।।

दुर्गा देवी की आंखों में कज्जल लगायें।

सुगन्धि द्रव्य :-

चन्दनागरु कपूर्रं कुंकुमंरोचनं तथा।
कस्तूर्यादि सुगन्ध्या च सर्वांगेषु विलेपनम्॥

दुर्गा देवी का इत्र आदि सुगन्धि द्रव्यों से विलेपन कर देवें।

अबीर गुलाल :-

अबीर गुलालं परिद्रव्यै निर्मितं चूर्णउत्तमम्।
अबीर नामक चूर्णं गन्धचारूपगृह्यताम्॥

दुर्गा देवी को अबीर गुलाल चूर्ण चढ़ा देवें।

आभूषण :-

स्वभाव सुन्दरांगायै नानादेवाश्रये शुभा।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यस्तव अर्चयै॥

दुर्गा देवी को नाना प्रकार के आभूषण अर्पण कर दंवे।

हार कंकण :-

हार कंकण केयूर मेखला कुण्डलादिभि।
रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥

दुर्गा देवी को हार कंकण आदि अर्पण कर देवें।।

गन्ध :-

गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं महादेवी चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

दुर्गादेवी को गन्ध लगावें।

अक्षत :-

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रियाऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा न विष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी॥

अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणि समन्वितान्।
गृहाणेन महादेवी देहि मे निर्मलां मतिम्।।

दुर्गा देवी को अक्षत लगा देवे।

पुष्प :-

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः।।
मन्दार-पारिजातादि- पाटली केतकानि च।
जाति-चम्पक-पुष्पाणि गृहाण परमेश्वरी।

(दुर्गा देवी को नाना प्रकार के पुष्प अर्पण करें)

पुष्प माला :-

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भ्रम कर्दम।
श्रियंवासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।
पद्म शंखज-पुष्पादि शतपत्रैर्विरर्चितम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाणत्वं सुरेश्वरि।।

दुर्गा देवी को पुष्पमाला अर्पण कर देवें।

धूप :-

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वसमे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।
दशांग-गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरु संयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या गृहाण परमेश्वरी।।

माँ दुर्गा को धूप दिखायें।

दीपक :-

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमयिं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

साज्यं वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्य तिमिरापह॥

दुर्गा देवी को दीपक दिखाये।

नैवेद्य :-

आर्द्रां यः करिणीं यष्टीं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥
अन्नं चतुर्विधं स्वादु-रसैः षड्भि समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मे ह्यचलां कुरु॥

दुर्गा देवी को नैवेद्य अर्पण कर एक आचमन जल छोड़ देवें।

दक्षिणा :-

हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
पूजाफल समृद्ध्यर्थ तवाग्रे स्वर्णमीश्वरी।
स्थापितं तेन मे प्रीत्या पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

ताम्बूल :-

ताम्य आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्याऽश्वान् विन्देयपुरुषानहम्॥
पूगीफल महाद्दिव्यं नागवल्लि-दलैर्युतम्।
एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ऋतुफल :-

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणिः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ँ हसः॥
फलेन फलितं देवि त्रैलोक्यं स चराचरम्॥
तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णासन्तु मनोरथाः॥

मां दुर्गा को फल चढ़ाये।

क्षत्र :-

ॐ ध्रुवाऽसि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया।

दुर्गा को छत्र डुलाये।

चामर :-

अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतं चम्बीव सोमः।
वाजसनि ॐ रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्॥

चामर ढुलायें।

दर्पण :-

ॐ रजता हरिणीः सीसा युजो युजन्ते कर्मभिः।
अश्वस्य वाजिनस्त्वचि सिमाः शम्यन्तु शम्यन्तीः॥
दर्पणं निर्मलं दिव्यं परिविम्बोसिविग्रहे।
कुरु दृष्टि महाभागं आदर्शं दर्शयाम्यहम्॥

दुर्गा देवी को दर्पण दिखायें।

अंग पूजन :-

ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि। ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ पूजयामि। ॐ मङ्गलायै नमः जानुद्वयं पूजयामि। ॐ कात्यायन्यै नमः उरुद्वयं पूजयामि। ॐ भद्रकाल्यै नमः कटिं पूजयामि। ॐ कमल वासिन्यै नमः नाभिं पूजयामि। ॐ शिवायै नमः उदरं पूजयामि। ॐ क्षमाये नमः हृदयं पूजयामि। ॐ कौमार्ये नमः स्तनौ पूजयामि। ॐ उमायै नमः हस्तौ पूजयामि। ॐ महागौर्ये नमः दक्षिण वाहुं पूजयामि। ॐ वैष्णव्यै नमः वामवाहु पूजयामि। ॐ रमायै नमः स्कन्धौ पूजयामि। ॐ स्कन्दमात्रे नमः कण्ठं पूजयामि। ॐ महिषासुर मर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि। ॐ सिंह

वाह्निन्यै नमः मुखं पूजयामि। ॐ माहेश्वर्ये नमः शिरः पूजयामि कात्यायन्यैनमः सर्वाङ्गं पूजयामि।।

उपरोक्त प्रत्येक नाम से गन्धाक्षत पुष्प धूपादि अर्पण कर देवें।

कर्पूर आरती–घी के दीपक अथवा कर्पूर जलाकर घण्टा आदि बजाते हुए दुर्गा देवी के चरणों में चार बार, नाभि देश में दो बार मुख पर एक बार और समस्त अंगों में सात बार आरती घुमायें।

मंत्र :–

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्।।1।।
ॐ आ रात्रि पार्थिव ꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदा ꣳसि बृहति वितिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।2।।
ॐ इद ꣳ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ꣳ सर्वगण ꣳ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।3।।
चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्नि स्तथैव च।
त्वमेव सर्वज्योतीषिं आर्तिक्य प्रतिगृह्यताम्।।

प्रार्थना :–

मंत्रहीनं क्रियाहीनं यत्कृतं चण्डिकास्तवम्।
सर्वे सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे।।

मंत्रपुष्पाञ्जलि :–

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्रपूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः।।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषऽआन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति तदप्येषश्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामाप्रेर्विश्वेदेवा सभासद इति।।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति। सम्पतत्रैद्यावा भूमि जनयन् देव एकः।।

ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमारि धीमहि।
तन्नो दुर्गेः प्रचोदयात्।।

ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै च विद्महे। महाशक्त्यै च धीमहि।
तन्नोदेवी प्रचोदयात्।।

सेवन्तिका- बकुल- चम्पक- पाटलाब्जैः
पुन्नाग- जाति- करवीर- रसाल- पुष्पैः।
विल्व-प्रवाल-तुलसी दल मञ्जरीभिः
त्वां पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद।।
नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालो भवानि च।
पुष्पाञ्जलिं मयादत्तं गृहाण परमेश्वरी।।

मां दुर्गा देवी को पुष्पाञ्जलि देकर परिक्रमा कर लेवें-

प्रदक्षिणा -

ॐ सप्तास्यासन्नपरिधयस्त्रिः सप्त समिधः
कृताः देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषं पशुम्।।

।। इति दुर्गा पूजनम् ।।

॥ नवकन्या पूजनम् ॥

नवरात्र व्रत में कन्या पूजन का विधान है व्रती उन कन्याओं का पूजन करे जो दो वर्ष से लेकर दश वर्ष की आयु की हो। सम्पूर्ण मनोरथ सिद्धि के लिए ब्राह्मण कन्या का, यश प्राप्ति के लिए क्षत्रिय कन्या का, सन्तान प्राप्ति के लिए शूद्र की कन्या का पूजन विधान बतलाया गया है। भगवान शंकर प्रोक्त मंत्रों से नवकन्या का पूजन करना चाहिए कन्या पूजन कर बटुक पूजन करें-

कन्याओं का आवाहन :-

मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मी मातृणां रूपधारिणीम्।
नव दुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्॥

आवाहन कर निम्नलिखित एक-एक मंत्र बोलकर एक-एक कन्या का गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, भक्ष्य, भोज्य, वस्त्र, अलंकार आदि से पूजन करें-

१. कुमारी पूजन मंत्र :-

जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्ति स्वरूपिणी।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥

२. त्रिमूर्ति पूजन मंत्र :-

त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्ग ज्ञानरूपिणीम्।
त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम्॥

३. कल्याणी पूजन मंत्र :-

कालात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कल्याण जननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥

४. रोहिणी पूजन मंत्र :-

अणिमादि गुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम्।
अनन्तशक्तिकां लक्ष्मी रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥

५. कालिका पूजन मंत्र :-

कामाचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम्॥

६. चण्डिका पूजन मंत्र :-

चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभञ्जिनीम्।
पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम्॥

७. शाम्भवी पूजन मंत्र :-

सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मी शाम्भवीं पूजयाम्यहम्॥

८. दुर्गा पूजन मंत्र :-

दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःख विनाशिनिम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्॥

९. सुभद्रा पूजन मंत्र :-

सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रा पूजयाम्यहम्॥

॥ इति नवकन्या पूजनम्॥

॥ बटुक पूजन ॥

कर कलित-कपालः कुण्डली-दण्डपाणि-
स्तरुण-तिमिरनील- व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमय-सपर्याद् विघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति बटुकनाथ सिद्धिदः साधकानाम्॥

॥ इति बटुक पूजनम् ॥

।। रामनवमी व्रतोद्यापन ।।

चैत्र शुक्ला तु नवमी पुनर्वसुयुतायदि।
सैव मध्याह्न योगेन महापुण्य तमा भवेत्।।

"अगस्त्य संहिता"

यदि चैत्र शुक्ल नवमी पुनर्वसु नक्षत्र युक्त हो और वही मध्याह्नके समय रहे तो बड़े भारी पुण्य वाली होती है। इस व्रत को मध्याह्न व्यापिनी दशमी विद्धा नवमी में करना चाहिए तथा अष्टमी विद्धा नवमी में वैष्णवों को छोड़ देना चाहिए।

भगवान राम पूजन

भगवान राम की स्वर्ण प्रतिमा का पूजन प्राण प्रतिष्ठा पूर्वक करना चाहिए।

आवाहन - भगवान राम की पूजा से पहले लक्ष्मण, शत्रुघ्न भरत का भी आवाहन करना चाहिए।

लक्ष्मण आवाहन :-

श्री लक्ष्मण नमस्तुभ्यंमिहागच्छ सहप्रियः।
याम्यभागे समातिष्ठ पूजनं संगृहाणमे।।
सपत्निकाय लक्ष्मणाय नमः।।

शत्रुघ्न आवाहन :-

श्री शत्रुघ्न नमस्तुभ्यंमिहागच्छ सहप्रियः।
पीठस्य पश्चिमेभागे पूजनं स्वीकुरुष्व मे।।
सपत्निकाय शत्रुघ्नाय नमः।।

भरत आवाहन :-

श्री भरत नमस्तुभ्यंमिहागच्छ सहप्रियः।
पीठकस्योत्तरे भागे तिष्ठपूजां गृहाण मे।।
श्री सपत्निकाय भरताय नमः।।

हनुमत् आवाहन :-

श्रीहनुमन्नमस्तुभ्यमिहागच्छ कृपानिधे।
पूर्वभागे समातिष्ठं पूजनं स्वीकुरु प्रभो।।
हनुमतये नमः।।

भगवान राम का ध्यान :-

शान्त शाष्वतमप्रेयमनघं निर्वाण शान्ति प्रदं।
ब्रह्माशंभुफणीन्द्र सेव्य मनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्।।
रामाख्यां जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यंहरिं।
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपाल चूडामणिम्।।

आवाहन :-

आवाहयामि विश्वेशं जानकीवल्लभं प्रभुम्।
कौशल्या तनयं विष्णुं श्रीरामं प्रकृतेः परम्।।
श्रीरामागच्छभगवन् रघुवीर नृपोत्तम्।।
जानक्या सह राजेन्द्र सुस्थिरोभवसर्वदा।।

मंत्र से आवाहन करें।

आसन :-

राजाधिराज राजेन्द्र रामचन्द्रमहीपते।
रत्न सिहासनं तुभ्यं दास्यामि स्वीकुरुप्रभो।।

मंत्र से आसन दें।

पाद्य :-

त्रैलोक्य पावनानन्त नमस्तेरघुनायक।
पाद्यं गृहाण राजर्षे नमोराजीवलोचन।।

मंत्र से पैर धोवें।

अर्घ्य :-

परिपूर्ण परानन्द नमोरामाय वेद्यसे।
गृहाणार्घ्यं मयादतं कृष्ण विष्णो जनार्दन।।

मंत्र से अर्घ्य देवें।

आचमन :-

नमः सत्याय शुद्धाय नित्याय ज्ञान रूपिणे।
गृहाणाचमनं नाथ सर्वलोकेक नायक।।

मंत्र से आचमन देवें।

मधुपर्क :-

नमः श्री वामदेवाय तत्त्वज्ञानस्वरूपिणे।
मधुपर्क गृहाणेदं जानकी पतये नमः।।

मंत्र से मधुपर्क देवें।।

पंचामृत स्नानम् :-

पंचामृतं मयानीतं पयोदधि घृतं मधु।
शर्कराचेति तद्भक्त्या दतंते प्रतिगृह्यताम्।।

पंचामृत से स्नान करावें।

शुद्धोदकस्नान :-

ब्रह्माण्डोदर मध्यस्थैस्तीर्थैश्च रघुनन्दन।
स्नापयिष्याम्यहं भक्त्या त्वं प्रसीद् जनार्दन्।।

शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

वस्त्र :-

तप्त कांचन संकाशं पीताम्बरमिदं हरे।
त्वं गृहाणजगन्नाथ रामचन्द्रं नमोस्तुते।।

वस्त्र समर्पणं करें।

गन्ध :-

कुंकुमागरुकस्तूरी कर्पूरोन्मिश्रचन्दनम्।
तुभ्यं दास्यामि राजेन्द्र श्रीराम स्वीकुरुप्रभो।।
गन्धानुलेपन कर देवें।

अक्षत् :-

अक्षताः परमा दिव्याः रक्तचन्दन मिश्रितम्।
तुभ्यं दास्यामि भोनाथः रामचन्द्र नमोस्तुते।।
अक्षत अर्पण कर देवें।

पुष्प :-

कदम्ब करवीरैश्च कुसुमैः शत पत्रकेः।
नीलाम्बुजै र्बिल्वपत्रैः पुष्पमाल्यैश्चराघवः।।
पुष्प अर्पण कर देवें।

अथ अंग पूजा :-

श्री राम चन्द्राय नमः पादौ पूजयामि।।
श्री राजीवलोचनय नमः गुल्फौ पूजयामि।।
रावणान्तकाय नमः जानुनी पूजयामि।।
वाचस्पतये नमः ऊरू पूजयामि।।
विश्वरूपाय नमः जंघे पूजयामि।।
लक्ष्मणाग्रजाय नमः कटीं पूजयामि।।
विश्वमूर्तये नमः मेढ्रं पूजयामि।।
विश्वामित्र प्रियाय नमः नाभिंपूजयामि।।
परमात्मनै नमः हृदयं पूजयामि।।
श्री कण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि।।
सर्वास्त्रधारिणे नमः बाहू पूजयामि।।
रघूद्वहाय नमः मुखं पूजयामि।।

पद्मनाभाय नमः जिह्वां पूजयामि॥
दामोदराय नमः दन्तान् पूजयामि॥
सीतापतयै नमः ललाटं पूजयामि॥
ज्ञान गम्याय नमः शिरः पूजयामि॥
सर्वात्मने नमः सर्वाङ्गं पूजयामि॥

धूपः-

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
धूपं गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्धयः॥
मंत्र से धूप दिखावें।

दीपक :-

ज्योतिषां पतये तुभ्यं नमो रामायऽवेधसे।
गृहाणदीपकं चैव त्र्यैलोक्य तिमिरापहम्॥
मंत्र से दीपक दिखावें।

नैवेद्यं :-

इदं दिव्यान्नमृतं रसैः षड्भिः समन्वितम्।
रामचन्द्रेश नैवेद्यं सीतेश प्रतिगृह्यताम्॥
नैवेद्य अर्पण कर देवें।

फल :-

इदं फलं मया देव स्थापितंपुरस्तव।
तेन मे सफला वाप्तिर्भवे जन्मनि जन्मनि।

ताम्बूल :-

नागवल्ली दलैर्युक्तं पूंगीफल समन्वितम्।
ताम्बूलं गृहतां राम कर्पूरादि समन्वितम्॥
ताम्बूल अर्पण कर देवें।

दक्षिणा :-

हिरण्यं गर्भ गर्भस्तं हेमबीज विभावसो।
अनन्तं पुण्य फलदा मतः शान्ति प्रयच्छ मे।

दक्षिणा चढ़ा देवें।

नीराजन :-

मंगलार्थ महीपालनीराजनमिदं हरे।
संग्रहाण जगन्नाथ महीपाल नमास्तुते।

निराजन कर लेवें।

प्रदक्षिण :-

यानिकानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे।।

राम नवमी को यथा विधि जागरण कर दशमी को हवन करें। पंचांग हवन के बाद 108 राम मन्त्र से खीर की आहुति देकर पूर्णाहुति आरती विसर्जन कर देवें।

प्रतिमा दान मंत्र :-

इमां स्वर्णमयिं रामप्रतिमां समलंकृताम्।
चित्रवस्त्रयुगच्छनां रामोऽहंराघवात्मने।
श्रीराम प्रीतये दास्ये तुष्टो भवतु राघव।।
तत्र प्रसादं स्वीकृत्य कृयते पारणं मया।
व्रतेनानेन सन्तुष्ट स्वामिन्भक्तिं प्रयच्छ मे।।

भगवान राम का महामंत्र :-

समस्त विपदाओं का नाश आयु वृद्धि के लिए यह मंत्र अत्यन्त ही उपयोगी है। इस मंत्र की एक माला प्रत्येक दिन करने से सर्व सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

वन्दौं राम नाम रघुवर को हेतु कृशानुभानु हिमकरको।
मंत्रमहामणि विषयव्याल के। मेटत कठिन कुअंक भाल के।।
राम रामेति रामेति रमेरामो मनोरमे। सहस्रनाम ततुल्यं रामनाम वरानने।

श्रीराम प्रार्थना

ॐ रक्ताम्भोज दलाभि राम नयनं पीताम्बरालंकृतम्।
श्यामाङ्गं प्रसन्नवदनं श्री सीतया शोभितम्।।
कारुण्यामृत सागरं प्रियगणे भ्रात्राविन्भावितम्।
वन्दे विष्णु शिवादि शैव्य मनिषंभक्तेष्ट सिद्धिप्रदम्।।१।।
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्री रामं भूयो भूयोनमाम्यहम्।।२।।
लोकाभिरामं रणरंग धीरं राजीवनेत्रंरघुवंश नाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्री रामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।३।।

।। इति रामनवमी व्रतोद्यापनम् ।।

।। ब्रह्मा कृत मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान की स्तुति ।।

जय-जय सुरनायक जन सुख दायक प्रणत पाल भगवन्ता।
गौ द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधु सुता प्रिय कन्ता।।
पालन सुरधरणी अद्भुत करणी मरम न जानई कोई।
सो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई।।
जय-जय अविनाशी सब घट वासी व्यापक परमानन्दा।
अविगत गोतितं चरित पुनीतं माया रहित मुकुन्दा।।
जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनि वृन्दा।
निसवासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानन्दा।।
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ उधारी चिंता हमारी जानिय भगत न पूजा।।
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन खंडन विपत्ति बरूथा।
मन वच क्रम वानी छाड़ि सयानी शरण सकल सुर जूथा।।
सारद श्रुतिशेषा रिषिय अशेषा जा कहं कोउनहिं जाना।
जेहि दीन विचारें वेद पुकारे द्रवउ सो श्री भगवाना।।
भव वारिधि मंदर सब विधि सुन्दर गुन मंदिर सुख पुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर जयत नाथ पद कंजा।।

।। इति ब्रह्मा कृत भगवान स्तुति।।

कौशल्या कृत भगवान राम की स्तुति

भये प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप विचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी।
भूषण बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी।१॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरि केहि विधि करौ अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता॥
करुणा सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥२॥
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम-रोम प्रति वेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहे॥
उजपा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहे।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥३॥
मातापुनि बोली सो मति डोली तजहुतात यह रूपा।
की जै सिसुलीला अति प्रियशीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुर भूपा।
यह चरित्र जे गावहि हरिपद पावहि ते न परहिं भव कूपा॥

बिप्र धेनु सुर सन्त हित लीन मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गोपाल॥

॥ इति कौशल्या कृत राम स्तुति ॥

।। भगवान श्रीराम- स्तुति ।।

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन हरण भव भय दारुणं।
नवकंज लोचन, कंज-मुख कर कंज पद कंज दारुण।।
कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद-सुन्दरं।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि-शुचि नौमि जनक सुतावरं।।
भज दीनबंधु निदेश दानव-दैत्यवंश निकंदनं।
रघुनंद आनंदकंद कौशलचंद्र दशरथ-नंदनं।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम-जित-खर-दूषणं।।
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु,कामादि-खल-दल-गंजनं।।
मनु जाहिं राचउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर सांवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भांति गौरि असीस,सुनि सिय सहित हिय हरषीं अली।
तुलसी भावानिहि पूजि-पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।

सो०-

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।
सियावर चन्द्र की जय! पवन सुत हनुमान की जय !!
बोलो भाई सब सन्तन की जय!!

।। शिव कृत राम स्तुति ।।

राम रमा रमनं समनं, भवताप भया कुल पाहिजनं।
अवधेश सुरेश रमेश विभो, शरनागत मांगत पाहि प्रभो।।
दशशीश विनाशन बीस भुजा, कृत दूरी महा महि भूरि रुजा।
रजनीचर वृन्द पतंग रहे, सरपावक तेज प्रचण्ड दहे।
महिमंडल मंडन चारुतरं, धृत सायक चाप निषंग बरं।।
मदमोहमहा ममता रजनी, तमपुंज दिवाकर तेज अनि।
मनजात किरात निपात किए, मृग लोग कुभोग सरेन हिए।
हतिनाथ अनाथनि पाहि हरे, विषयावन पांवर भूलि परे।।
बहुरोग वियोगहि लोग हुए, भवदंध्रि निरादर के फल ए।
भव सिंधु अगाध परे नर ते, पद पंकज प्रेम नजे करते।।
अति दीन मलीन दुखी नितहीं, जिन्हके पद पंकज प्रीति नहीं।
अवलंब भवंत कथा जिन्ह के, प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के।।
नहिराग न लोभ न मान सदा, तिन्ह के सम वैभव वा विपदा।
एहि ते तब सेवक होत मुदा, मुनि त्यागत जोग भरोस सदा।।
करि प्रेम निरंतर नेमलिए, पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ।।
सममानि निरादर आदरहीं। सव संत सुखी बिचरंति मही।।
मुनिमानस पंकज भृंग भजे, रघुवीर महारनधीर अजे।।
तवनाम जपामि नमामि हरी। भवरोग महागद मान अरि।।
गुन शील कृपा परमा यतनं, प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं।।
रघुनंद निकंदय द्वन्द्वघनं, महिपाल बिलोकय दीन जनं।।

बार-बार बर मांगहुँ हरषि देहु श्रीरंग,
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग।।
वरनि उमापति रामगुन हरषि गये कैलाश,
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब विधि सुखप्रद वास।।

।। इति शिव कृत राम स्तुति सम्पूर्णम्।।

।। आरती मर्यादा पुरुषोत्तम की ।।



आरती कीजै श्री रघुवर की।
सत चित आनन्द शिव सुन्दर की।।टेक।।
दशरथ -तनय कौशिला-नन्दन,
सुर-मुनि-रक्षक दैत्य- निंकदन,
अनुगत-भक्त भक्त-उर-चन्दन,
मर्यादा पुरुषोत्तम वरकी।। आरती कीजे...............।
निर्गुन-सगुन अरूप-रूपनिधि,
सकल लोक-वन्दित विभिन्न विधि,
हरण शोक-भय,दायक सब सिधि,
मायारहित दिव्य नर-वरकी।। आरती कीजे........।।
जानकिपति सुराधिपति जगपति,
अखिल लोक पालक त्रिलोक गति,
विश्ववन्द्य अनवद्य अमित-मति,
एकमात्र,गति सचराचरकी।। आरती कीजे...........।।
शरणागत-वत्सल-व्रतधारी,
भक्त कल्पतरु-वर पावनकारी,
वानर-सखा दीन- दुख- हरकी। आरती कीजे.....।।

।। इति आरती भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम राम की ।।

।। नृसिंह चतुर्दशी ।।

यह व्रत वैशाख शुक्ल चतुर्दशी के दिन होता है प्रदोष काल व्यापिनी में इस व्रत को करना चाहिए। स्कन्द पुराण में कहा गया है कि वैशाख शुक्ला सोमवार चतुर्दशी के दिन प्रदोष के समय नृसिंह का अवतार हुआ था। चतुर्दशी यदि त्रयोदशी युक्त हो तो उसका त्याग कर परा को ग्रहण करना चाहिए। यह व्रत भगवान नृसिंह को प्रसन्न करने वाला है। उद्यापन में स्वर्ण सिंह प्रतिमा का दान करना चाहिए। फल की प्राप्ति चाहने वाले को गौ-भूमि, तिल सुवर्ण का दान देना चाहिए। सप्त धान्य एवं वस्त्रों सहित शय्या दान देकर ब्राह्मणों को भोजन एवं दक्षिणा से सन्तुष्ट करना चाहिए।

।। अथ श्री नृसिंह पूजन ।।

ध्यान :-

कोपादालोल जिह्वं विवृत निजमुखं सोमसूर्याग्नि नेत्रम्।
पादादानाभिरक्त प्रभ मुपरिसितं भिन्न दैत्येन्द्र गात्रम्।।
शंखं चक्रं च पाशांकुश कुलिशगदादारुणाना युद्ध हस्तं।
भीमं तीक्ष्णाग्रदंष्ट्रं मणिमय विविधा कल्पमीडे नृसिंहम्।।

भगवान नृसिंह को पुष्प अर्पण कर आवाह्न करें-

आवाहन :-

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्त्रपात्।
सभूमिॐसर्वतस्पृत्त्वा त्यतिष्ठदशांगुलम्।।
आवाहनं समर्पयामि।।

आसन :-

पुरुषऽएवेदॐ सर्वंयद्भूतंयच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेन्नाति रोहति।।
आसनं समर्पयामि।।

पाद्य :-

ॐ एतावानस्य महिमातोज्यायांश्च पूरुषः।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि॥
पाद्यं समर्पयामि॥

अर्घ्य :-

त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा भत्पुनः।
ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनान शनेऽअभि॥
अर्घ्यं समर्पयामि॥

आचमन :-

ततो विराडजायत विराजोऽअधिपूरुषः।
सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः॥
आचमनं समर्पयामि।

स्नानीय जल :-

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृष दाज्यम्।
पशूँस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये॥
स्नानीय जलं समर्पयामि॥

पयस्नान :-

ॐ पयः पृथिव्यां पय औषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे
पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥
पयस्नानं समर्पयामि॥

दधिस्नान :-

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ँषि तारिषत्॥
दधिस्नानं समर्पयामि॥

घृतस्नान :-

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसं वसापावानः।
पिवतान्त रिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। घृतस्नानं समर्पयामि।।

मधुस्नान :-

मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्तोषधिः। मधुनक्तमुतोसषो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः मधु द्यौ रस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां २ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। मधुस्नानं समर्पयामि।।

शर्करास्नान :-

अपाꣳरसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम् अपाꣳरससस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णामेषते योनि रिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्।। शर्करास्नानं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नानं :-

पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोत सः।
सरस्वती तु पंचधा सोदेशेऽभवत्सरित्।।
पंचामृतस्नानं समर्पयामि।।

शुद्धोदक स्नान :-

शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणि वालस्तऽआश्विनाः।। श्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः।। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।।

वस्त्र :-

सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमासदयत्स्वः।
वासोऽअग्नेविश्वरूपꣳसंव्य यस्व विभावसो।।
वस्त्रं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीत :-

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्य प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥

गन्ध :-

त्वांगन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥
गंधं समर्पयामि॥

अक्षत :-

अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत।
अस्तोषतस्वभानवो विप्रान विष्ट्ठयामतीयोजान्विन्द्र ते हरी॥
अक्षतं समर्पयामि॥

पुष्प :-

ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः॥
पुष्पं समर्पयामि॥

धूप :-

धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं यो ऽ स्मान् धूर्वति।
तं धूर्व यं वयं धूर्वामः देवानामसि वह्नितम
ॐसस्नितमं पप्रितम जुष्टतम देवहूतमम्॥
धूपं आघ्रापयामि॥

दीप :-

चन्द्रमाःऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
रयिंपिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहॐहरिरेति कनिक्रन्दत्॥
दीपं दर्शयामि॥

नैवेद्य :-

अन्नपतेऽन्नस्यनो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्र दातारं तारिष ऽ ऊर्जं नो देहि द्विपदे चतुष्पदे।।
नैवेद्यं निवेदयामि।।

ताम्बूल :-

उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः।
श्येनस्येव ध्रजतोऽअङ्कसं परि दधिक्राव्णः स होर्जातरित्रतः स्वाहा।।
ताम्बूलं समर्पयामि।।

ऋतुफल :-

याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्चपुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूता स्तानो मुचंन्त्व ँ हसः।।
ऋतुफलं समर्पयामि।।

दक्षिणा :-

यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषुनो दधत्।।
दक्षिणां समर्पयामि।।

प्रार्थना :-

सत्यज्ञानसुख स्वरूपममलं क्षीराब्धिमध्ये स्थलं।
योगारूढंमति प्रसन्न वदनं भूषा सहस्त्रोज्वलम्।।
त्र्यक्षं चक्रपिनाक साभयवरान्बिभ्राणमर्कच्छविं।
क्षत्रीभूत फणीन्द्रमिन्दधवलंलक्ष्मीन्टसिंहभजे।।

हवन :-

अग्नि स्थापन कर आवाहित देवताओं को आहुति प्रदान कर नृसिंह गायत्री से १०८ आहुती खीर से देकर आरती करे।

नृसिंह गायत्री-

वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्ण दष्ट्राय धीमहि।
तन्नो नृसिंह प्रचोदयात।।

।। आरती श्री नृसिंह जी की ।।

जय नरसिंह हरे हरिजय नर सिंह हरे।
भक्त जनों के कारण अद्भुत रूप धरे।। जय नर०।।
सिंह रूपधर अपना निज जन दुख हर्ता।। स्वमि०
खम्ब मध्य प्रकट भये सेवक सुखकर्ता।। जय नर०
नर और सिंह रूप धर प्रकट भये स्वामी।। स्वमि०
निर्भय हुए भक्त जन भय पाये कामी।। जय नर०
प्रकट भये प्रह्लाद के कारण सबको दर्श दिया।। स्वमि०।
नर और हरि बनकर संकट दूर किया।। जय नर०।।
दैहिक दैविक भौतिक पाप कटे सारे।। स्वमि०।
रक्षक निज भक्तन के दानव दल मारे।। जय नर०।।
शरण रहस्य प्रदाता भव बन्धन हारी।। स्वमि०।।
दुखहारी सुखकारी गदा चक्र धारी।। जय नर०।।
अक्षय भक्ति दयार्णव हम सबको दीजे।। स्वमि०।
पाप ताप हर नर हरि निज जन कर लीजै।। जय नर०।।
''शिव स्वरूप'' शरणागत अतिमल अघहारी।। स्वमि०।
पद सरोज रज चाहत नर हरि तनु धारी।। जय नर०।
नर सिंह प्रभु की आरती जो कोई नर गावे।। स्वमि०।
हर अज्ञान मोह तम मनवांछित फल पावै।। ॐ जय०।।

।। गंगा दशहरा व्रत ।।

ज्येष्ट शुक्ल दशमी को यह व्रत किया जाता है। इस व्रत में गंगा आदि नदियों पर जाकर स्नान दान तीर्थ तर्पण किया जाता है। विशेष गंगा का पूजन किया जाता है।

दशमी शुक्ल पक्षे तु ज्येष्ठ मासे बुधेहनि।
अवतीर्णा यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वरा।।
हरते दश पापानि तस्माद्दशहरा स्मृता।।

''वराह पुराण''

ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे दशम्यां बुध हस्तयो।
गरानन्दे व्यतीपाते कन्याचन्द्रे वृषे रवौ।।
दशयोगे नरः स्नात्वा सर्व पापै प्रमुच्यते।।

"स्कन्द पुराण"

दशहरा स्नान व्रत ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष दशमी तिथि बुधवार हस्त नक्षत्र गर आनन्द व्यतीपात कन्या का चन्द्र वृष का सूर्य इस योग में मनुष्य गंगा स्नान व्रत कर सब पापों से मुक्त हो जाता है। स्नान करते हुए गंगा जी के महामंत्र का जप शुभ फलदायी है।

मंत्र :-

ॐ भगवत्यै नारायण्यै दश पाप हरायै शिवायै।
गंगायै विष्णु मुख्यायै क्षयायै रेवत्यै भगीरथ्यै।।
नमो नमः।।

स्नान कर पाप मोक्षनी पित्रोद्धारिणी गंगा स्त्रोत गंगा स्मरण गंगा लहरी आदि का पाठ कर गंगा का पूजन करें।

।। गंगा दशहरा व्रतोद्यापनम्।।

गंगा का ध्यान

नमामि गंगे तव पाद पंकजम्। सुरासुरैर्वन्दित दिव्य रूपम्।।
भुक्ति च मुक्ति च ददासि नित्यम्। भावानुसारेण सदा नराणाम्।।
विष्णु पादाब्ज संभूता गङ्गे त्रिपथ गामिनी।
धर्म द्रवेति विख्यातः पापं मे हर जाह्नवी।।

आवाहन :-

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणिं सुवर्ण रजत स्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। गंगादेव्यै नमः आ.स.।।

आसनम् :-

ताऽआवह जातवेदोलक्ष्मी मनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ गंगादेव्यै नमः आ.स.॥ पाद्यम्-अश्वपूर्वारथमध्यां हस्तिनाद प्रवोधिनीम्। श्रियं देवि मुपह्वेश्रीर्मादेवी जुषताम्॥ गंगा देव्यैनमः पा.स.॥

अर्घ्यम् :-

कांसोऽस्मितांहिरण्यप्रकारामाद्रां ज्वलन्तीं तृप्तांतर्यन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णा तामिहो पह्वये श्रियम्॥ गंगा देव्येनमः अ.सं.॥

आचमनीयम् :-

चन्द्रा प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियंलोके देव जुष्टामुदाराम्। तां पद्मनीं शरण महं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ गंगा देव्यै नमः आ.स.॥

पयस्नानम् :-

कामधेनु समुत्पनं सर्वेषां जीवनं परम्। पवित्रं तव हेतुश्च पयस्नानं मयार्पितम्॥ गंगादेव्येनमः। प.स.॥

दधिस्नानम् :-

पयसस्तु समुद्भूतंमधुराम्लं शशि प्रभम्। दध्यानीतंमयादेवि स्नानार्थं सुरेश्वरी॥ गंगा देव्यै नमः द.स.॥

घृत स्नानम् :-

नवनीत समुत्पनं सर्व संतोष दायकम्।
घृततुभ्यं प्रदास्यामि गृहाणं भवतारिणी॥ गंगा देव्यै नमः। घृ.सं॥

मधुस्नानम् :-

नाना पुष्पं समुद्भूतं सुस्वादु मधुर मधु। तेजः पुष्ठिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ गंगा देव्यैनमः म.स.॥

शर्करास्नानम् :-

इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारकम्।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। गंगादेव्यैनमः श.सं.॥

पञ्चांमृतस्नानम् :-

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिनासह।
प्रादुर्भूतो स्मिराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे। गंगा देव्यै नमः पं०सं०॥

गन्धोदकस्नानम् :-

गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।। गंगा देव्यैनमः ग.सं.॥

उद्वर्तनस्नानम् :-

ॐ अꣳशुनाते अꣳशुः पृच्यतां परूषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः॥ गंगा देव्यै नमः ॐ उद्वर्तस्नानं समर्पयामि॥

शुद्धोदकस्नानम् :-

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥ गंगा देव्यै नमः शु.स.॥

वस्त्रम् :-

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्त्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूस्तांश्चक्रे व्वायव्व्या नारण्या ग्ग्राम्याश्चये॥ गंगा देव्यै नमः व.स.॥

उपवस्त्रम् :-

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वानिर्णुद मे गृहात्। गंगा देव्ये नमः उ.व.स.॥

गन्धम् :-

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रास्त्वांबृहपतिः। त्वामोषधेसोमो राजा विद्वान यक्ष्मादमुच्यत॥ गंगा देव्यैनमः ग.सं.॥

सिन्दूरम :-

ॐ अहिरिव भोगे: पर्य्येति वाहुंज्याया हेतिं प्परिवाधमान:। हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्द्वान् पुमान्नपुमाँ संप्परिपातु विश्वत:।। गंगा देव्यै नम: सिन्दूरं समर्पयामि।।

अक्षतम् :-

अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽ अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न विष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।। गंगा देव्यै नम: अ.सं।।

पुष्पम्:-

मनस: काममांकूतिं वाच: सत्यमशीमहि पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यश:।। गंगा देव्यै नम: पु.सं.।।

कज्जलम :-

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्ये सुभगे शान्तिकारके। कर्पूर ज्योतिरूत्पनं गृहाण परमेश्वरी।। गंगा देव्यै नम: क.सं.।।

सुगन्धिद्रव्यम् :-

चन्दनागरू कर्पूरं कुंकुमंरोचनमं तथा। कस्तूर्यादि सुगन्ध्याच सर्वाङ्गेषु विलेपनम्।। गंगा देव्यै नम: सु.द्र.स.।।

अवीर गुलालम् :-

अवीर गुलालं परिद्रव्यै निर्मितं चूर्ण उत्तमम्। अबीर नामक चूर्ण गन्धचारूपगृह्यताम्।। गंगा देव्यै नम: अ.गु.स.।।

आभूषणं:-

स्वभाव सुन्दराङ्गायै नाना देवा श्रये शुभा। भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यस्तव अर्चये।। गंगा देव्यै नम: आ.स.।।

हारकंकणः-

हार कंकण केयूर मेखला कुण्डलादिभि। रत्नाद्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।। गंगा देव्यै नमः हा.कं.स.।।

धूपम्ः-

दशाङ्गगुगुलं धूपं चन्दनाऽगरूसंयुतम्। समर्पित मया देवि गृह्यताम परमेश्वरी।। गंगा देव्यै नमः धूपं आघ्रापयामि।।

दीपम् :-

घृतवर्ति समायुक्त महातेजोमहाज्वलम्। दीप दास्यामि देवेशी सुप्रीता भव सर्वदा।। गंगा देव्यै नमः दी. दर्शयामि।।

नैवेद्यमः-

अन्नंचतुर्विधं स्वादुः रसै षडभि समन्वितं। नैवेद्यं गृहतां देवि भक्ति मे ह्यचलां कुरू।। गंगा देव्यै नमः नै.स.।। नैवेद्यन्ति आचमनीयम्।।

दक्षिणाम्ः-

ॐ हिरण्यगर्म्भः समपवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमी कस्मैदेवाय हविषा विधेम्।। दक्षिणां समर्पयामि।।

फलम्ः-

फलेन फलितं देवित्र्यैलोक्यं स चराचरम्। तस्मात्फल प्रदानेन पूर्णासन्तु मनोरथः।। गंगा देव्यै नमः फ.सं.।। ताम्वूलम्-एला लवंग कस्तूरी कर्पूरे पुष्प वासितम्। वीटिकां मुख वासार्थ अर्पयामि सुरेश्वरी।। गंगा देव्यैनमः ता.सं.।।

छत्रम् :-

ॐ ध्रुवाऽसि ध्रुवोऽयं यजमानोऽ स्मिनायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया।। गंगादेव्यै नमः छत्रम् अर्पयामि।।

चामरम्:-

अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्त्रुचीव घृतं चम्बीव सोमः। वाजसनिँ रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेही यशसं वृहन्तम्। गंगा देव्यै नमः चा.स।।

दर्पणम्:-

ॐ रजता हरिणीः सीसा युजो युज्यन्ते कर्मभिः। अश्वस्य वाजिनस्त्वचि सिमा शम्यन्तिः।। गंगा देव्यै नम। द. दर्शयामि।।

कर्पूरार्तिकम्:-

निराजनं सुमांगल्यं कर्पूरेण समन्वितम्। चन्द्राऽर्क वन्हि सदृशं महादेवि नमोऽस्तुते।।

कर्पूरार्ति कर प्रार्थना करें-

प्रार्थना-विष्णोः संगतिकारिणी हरजटाजूटाटवीचारिणी।
प्रायश्चित निवारिणी जलकणैः पुण्यौ विस्तारिणी।।
भूभृत्स्कन्दरदारिणी निज जलै मज्जजनोत्सारिणी।
श्रेयः स्वर्गविहारिणी विजयते गंगा मनोहारिणी।।

।। इति गंगा दशहरा व्रतोद्यापन ।।

कर्पूरार्त्रिकर हवन कार्य करें। अग्नि स्थापन कर आवाहित देवताओं को आहूति देकर 'गंगा देव्ये नमः' मंत्र से 108 आहूति खीर की देकर अन्य देवताओं को भी आहूति प्रदान कर पूर्णाहुति करें।

।। आरती गंगा जी की ।।

ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता।।
ॐ जय गंगे माता।।१।।

चन्द्र सी जोत तुम्हारी जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी सो नर तर जाता।।२।। ॐ जय गंगे०।।
पुत्र सगर के तारे सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि तुम्हारी त्रिभुवन सुख दाता।।३।। ॐ जय गंगे०।।
एक ही बार जो तेरी शरणागति आता।
यम की त्रास मिटा कर परमगति पाता।।४।। ॐ जय गंगे०।।
आरती मात तुम्हारी जो जन नित्य गाता।
दास वही सहज में मुक्ति को पाता।।५।। ॐ जय गंगे०।।

गंगा गायत्री :-

भागीरथ्यै च विद्महे विष्णु पद्यै च धीमहि
तन्नो गंगा प्रचोदयात्।।

।। दशहरा गंगा स्तुति ।।

ब्रह्मोवाच–नमः शिवायै गंगायै शिवदाये नमो नमः।
नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शांकर्यैते नमो नमः।।१।।
नमस्ते विश्वरूपिण्यै ब्रह्ममूर्तै नमो नमः।
सर्व देवस्वरूपिण्यै नमो भेषज मूर्तये।।२।।
सर्वस्य सर्व व्याधिनां भिषक् श्रेष्ठे नमोऽस्तुते।
स्थाणुजंगमसंभूतविषहंत्र्यै नमो नमः।।३।।
भोगोपभोग दायिन्यै भोगवत्यै नमो नमः।
मन्दाकिन्यै नमस्तेस्तु स्वर्गदायै नमो नमः।।४।।
नमस्त्रैलोक्य भूषायै जगद्धात्र्यै नमो नमः।
नमस्तेशुक्ल संस्थायै तेजोवत्यै नमो नमः।।५।।
नन्दायै लिंगधारिण्यै नारायण्यै नमो नमः।
नमस्ते विश्वमुख्यायै रेवत्यै ते नमो नमः।।६।।
वृहत्यै ते नमस्तेस्तु लोकधात्र्यै नमो नमः।
नमस्ते विश्व गीत्रायै नन्दिन्यै ते नमो नमः।।७।।
दिव्ये शिवाभृतायै च सुवृषायै नमो नमः।
शांतायै च वरिष्ठायै वरदायै नमो नमः।।८।।
उस्त्रायै सुखदोग्ध्र्यै च संजीविन्यै नमो नमः।
ब्रह्मिष्ठायै ब्रह्मदायै दुरितघ्नै नमो नमः।।९।।
प्रणतार्तिप्रभजिन्यै जगन्मात्र्यै नमोस्तुते।
सर्वात्प्रतिपक्षायै मंगलायै नमो नमः।।१०।।
शरणागतदीनार्त परित्राण परायणे।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते।।११।।
निर्लेपायै दुर्गहंत्र्यै दक्षायै ते नमो नमः।
परात्परतरे नमस्तुभ्यं नमस्ते मोक्षदे सदा।।१२।।

गंगे ममाग्रतो भूया गंगे मे देवि पृष्ठतः।
गंगे मे पार्श्वयोरेहि त्वयि गंगेस्तु मे स्थितिः॥१३॥
आदौ त्वंमंते मध्ये च सर्वं त्वं गां गते शिवे।
त्वमेव मूलप्रकृतिस्त्वं ही नारायणः परः॥१४॥
गंगे त्वं परमात्मा च शिवस्तुभ्यं नमः शिवे ॥१५॥
य इदं पठति स्तोत्रं भक्त्या नित्यं नरोपि यः।
श्रुणुच्छ्रद्धया युक्तः कायवाक्चित संभवै॥१६॥
दशधा संस्थितैर्दोषैः सर्वैरेव प्रमुच्यते।
सर्वान्कामानवाप्नोति प्रेत्य ब्रह्मणि लीयते॥१७॥
ज्येष्टे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता।
तस्यादशम्यामेतच्च स्तोत्रं गंगाजले स्थितः॥१८॥
यपठेद्दश कृत्वस्तु दरिद्रो वापि चाक्षमः।
सोऽपि तत्फल माप्नोति गंगा सम्पूज्य यत्नतः॥१९॥
अदत्ताना मुपादानं हिंसा चैवाविधानतः।
परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतम्॥२०॥
पारुष्यंमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः।
असंबद्ध प्रलापश्च वाङ्मयं स्यच्चतुर्विधम्॥२१॥
परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्ट चिन्तनम्।
वितथोभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधस्मृतम्॥२२॥
एतानि दश पापानि हर त्वं मम जाह्नवि।
दशपाप हरा यस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता॥२३॥
त्रयस्त्रिंशच्छतं पूर्वान् पितृनथपितामहान्।
उद्धरत्येव संसारान्मंत्रेणानेन पूजिता॥२४॥
नमो भगवत्यै दशपाप हरायै गंगायै नारायण्ये रैवत्यै शिवायै
दक्षाये अमृतायै विश्वरूपिण्यै नदिन्यै ते नमो नमः॥२५॥

सितमकरनिष्णा शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्सोत्-
पलामत्यभीष्टाम्। विधि हरि हर रुपां सेंदुकोटीरजुष्टां
कलि लसित दुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥२६॥ आदावादि-
पितामहस्य निगमव्यापार पात्रे जलं पश्चात्पन्नगशायिनो
भगवतः पादोदकं पावनम्॥ भूयः शम्भु जटा
विभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरिय। कन्या कल्मषनाशिनी भगवती
भागीरथी दृश्यते॥२७॥ गंगागंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां
शतैरपि। मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥२८॥

॥ दशहरा गंगा स्तुतिः सम्पूर्णम् ॥

॥ नाग पंचमी व्रत ॥

नागपंचमी का व्रत सर्पों का बिष तथा कालसर्प दोष दूर करने वाला है श्रावण शुक्ल पंचमी को यह व्रत किया जाता है। स्नान कर पंचमी के दिन गोमय से सर्प की आकृति द्वार के दोनों कोनों पर बनाये,स्वयं भगवान शिव ने पार्वती से कहा-

श्रावणे मासि पंचम्या शुक्ल पक्षे वरानने।
द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्वणाः॥

नाग पंचमी काव्रत विधान बाहर वर्ष तक करना चाहिए चांदी सुवर्ण काष्ठ अथवा मिट्टी से पांच फन वाला नाग बनाकर भक्तिभाव से उसका पूजन करना चाहिए।

॥ नाग पंचमी व्रतोद्यापनम् ॥

नाग पूजन

ध्यानः-

अनन्तं वासुकि शेषं पद्मनाभंच कंबलम्।
शंखपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा॥१॥
एतानिनव नामानि नागानां च महात्मना।

सायंकाले पठेनित्यं प्रातः काले विशेषतः।।
तस्य विष भयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।।२।।

प्रतिष्ठापनः-

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु।
येन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्योनमः।।

नागों का पूजन आह्वान, आसन,पाद्य अर्घ्य आचमन पंचामृत स्नान शुद्ध स्नान वस्त्र गन्ध अक्षत पुष्प, धूप, दीपक, दूध निर्मित नैवेद्य दक्षिणा से कर देवें-

बारह नागराजाओं का पूजन :-

१. अनन्ताय नमः २. वासुकये नमः ३. शंखाय नमः
४. पद्माय नमः ५. कंवलाय नमः ६ कर्कोटकाय नमः
७. अश्वतराय नमः ८. धृतराष्ट्राय नमः ९. शंखपालाय नमः
१०. कालिये नमः ११. तक्षकाय नमः १२. पिंगलाय नमः।।

सर्पगायत्री जप मंत्र :-

भुजंगेशाय विद्महे सर्प जाताय धीमहि। तन्नो नागः प्रचोदयात्।।

पूजन कर पायस बलि देवें :-

भो सर्प इमं बलि गृहाण ममाभ्यदयं कुरु।।

प्रार्थना :-

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनाग पुरोगमा।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा।।१।।
विष्णु लोके च ये सर्पाः वासुकि प्रमुखाश्चये।
नमोऽस्तुतेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नासन्तु मे सदा।।२।।
रुद्रलोके च ये सर्पास्तक्षक प्रमुखास्तथा।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः वरदा सन्तु मे सदा।।३।।
खाण्डवस्य तथादाहे स्वर्गं ये चे समाश्रिताः।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा।।४।।

सर्प सत्रे च ये सर्पाः आस्तीके नाभि रक्षिताः।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥५॥
मलये चैव ये सर्पा कर्कोट प्रमुखा श्च ये।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥६॥
धर्म लोकेच ये सर्पाः वैतरण्यां समाश्रिताः
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥ ७॥
ये सर्पाः पर्वतीयेषुदरीसंधिषु संस्थिता।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥८॥
ग्रामेवा यदि वारण्ये ये सर्पाः प्रचरंति हि।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥९॥
पृथिव्यां चैव ये सर्पाः ये सर्पाबिलसंस्थिता।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥१०॥

प्रार्थना पूजा कर आचार्य का पूजन कर स्वर्ण नाग प्रतिमा कलश सहित ब्राह्मण को संकल्प करें:- ॐ **अद्यैत्यादिकृतस्य पंचमी व्रतोद्यापन कर्मणः सांगता सिद्धार्थं इमं हेममंय नागं सकलंश वस्त्रं सदक्षिणंतुभ्यमहं सम्प्रददे॥ अनेन स्वर्णनाग दानेन अनन्तादयो नाग देवताः प्रीयताम्॥**

॥ प्रातः नाग स्मरण ॥

अनतं वासुकिं शेष पद्मनाभंच कंबलम्।
शंखपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।१॥
एतानि नव नामानि नागानांच महात्मना।
सांयकाले पठेनित्यं प्रातः काले विशेषतः॥
तस्य विषभयंनास्ति सर्वत्र विजयीभवेत॥२॥

रात्रि नाग स्मरण

सर्पासर्प भद्रं ते दूरगच्छ महाविष।
जन्मेजयस्य यज्ञांते आस्तीकवचनं स्मर॥१॥
आस्तीक वचनं श्रुत्वा यः सर्प न निर्वतते।
शतधा विद्यतेमूर्न्धि शिंशवृक्ष फलं यथा॥२॥
योजरत्कारुणा जातो जरत्कन्या महायशाः।
तस्य सर्पोऽपि भद्रं ते दूरंगच्छ महाविष॥३॥
एतान् गारुड़मंत्रास्तु निशायां पठते यदि।
मुच्यते सर्व बाधाभ्यो नात्रकार्या विचारणा॥४॥

॥ इति नाग स्मरण ॥

॥ श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत ॥

षोडश कलाओं से युक्त श्रीकृष्ण जी का अवतार भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को हुआ था, श्रीकृष्ण प्रीत्यर्थ यह व्रत किया जाता है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करने से करोड़ यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है।

रोहिण्या सहिता कृष्णा मासिभाद्र पदेऽष्टमी।
अर्द्धरात्रे तुयोगोऽयंतारापत्युदये तथा॥
नियतात्मा शुचिः सम्यक् पूजां तत्र प्रवर्तयेत्॥ (विष्णु धर्मोत्तर)

अर्थात् भाद्रपदमास की रोहिणी युक्त कृष्णाष्टमी आधी रात के समय हो तो समाहित चित्त वाले पवित्र पुरुषों को ऐसे समय में पूजन प्रारम्भ करना चाहिए।

अष्टमी रोहिणी युक्ताचार्ध रात्रे यदाभवेत्।
उपोष्यं तां तिथिं विद्वान् कोटियज्ञ फलंलभेत्॥

रोहिणी युक्त अष्टमी अर्द्धरात्रि व्यापिनी हो तो विद्वान लोग इस व्रत को कर करोड़ यज्ञ के फल को प्राप्त करते हैं।

।। कृष्ण जन्माष्टमी व्रतोद्यापनम् ।।

व्रती नित्य क्रियासे निवृत्त होकर जन्माष्टमी के दिन देवताओं की प्रार्थना करें :-

सूर्य सोमो यमः कालसन्ध्या भूतान्यहः क्षपा।
पवनो दिक्पतिभूमिराकाशं खेचरा नराः।।
ब्रह्म शासनामास्थाय कल्पान्तामिह संनिधिम्।।

व्रत हेतु भगवान कृष्ण का ध्यान।

वासुदेवं समुद्दिश्य सर्वपाप प्रशान्तये।
उपवासं करिष्यामि कृष्णाष्टम्यां नमस्यहम्।।१।।
अद्य कृष्णाष्टमी देवीं नमश्चन्द्रं सरोहिणीम्।
अर्चायित्वोपवासेन मोक्ष्येऽहम् परेहनि।।२।।
एनसो मोक्ष कामोऽस्मियद्गोविन्द वियोजनम्।
तन्मे मुंचतु मां त्राहि पतितं शोक सागरे।।३।।
आजन्म मरणं यावद्यन्मया दुष्कृतं कृतम्।
तत्प्रणाशय गोविंद प्रसीद पुरुषोत्तम।।४।।

पूजन के समय कलश में पूर्णपात्र के ऊपर सुवर्ण की देवकी की प्रतिमा के साथ स्ततन पान करते हुए श्री कृष्ण की सुवर्ण प्रतिमा का स्थापन करें। गणपत्यादि देवताओं के पूजनोपरांत सर्वतो भद्र मण्डल पर निम्न देवताओं का पूजन करें-

ॐ देवक्यै नमः देवकी आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।१।। ॐ श्री कृष्णाय नमः।।२।। ॐ श्रियेनमः।३।। ॐ वासुदेवाय नमः ।।४।। ॐ यशोदायै नमः।।५।। ॐ नन्दाय नमः।।६।। ॐ बलदेवाय नमः।।७।। ॐ चण्डिकायै नमः।।८।। ॐ रोहिण्ये नमः।।९।। ॐ सुभद्रायै नमः।।१०।। ॐ परितः ॐ मत्स्यादिदश रूपेभ्यो नमः।।११।। ॐ नक्षत्रेभ्यो नमः।।१२।। ॐ अश्विन्यादि सप्तविंशति नक्षत्रेभ्यो

नमः।। १३।। ॐ देवेभ्यो नमः।।१४।। ॐ नागेभ्यो नमः।।१५।। ॐ यक्ष्येभ्यो नमः।।१६।। ॐ विद्याधरेभ्यो नमः।।१७।। ॐ यमुनाय नमः।।१८।। ॐ कालियाय नमः।।१९।। ॐ कंसाय नमः।।२०।। ॐ गोभ्यो नमः।।२१।। ॐ योगनिद्रायै नमः।।२२।। ॐ चद्रमसे नमः।।२३।। ॐ सात्यकये नमः।।२४।। ॐ उद्धवाय नमः।।२५।। ॐ अक्रूराय नमः।।२६।। ॐ उग्रसेनाय नमः।।२७।। ॐ यादवेभ्यो नमः।।२८।। ॐ शंखाय नमः।।२९।। ॐ चक्राय नमः।।३०।। ॐ गदायै नमः।।३१।। ॐ पद्माय नमः।।३२।। ॐ त्रुटये नमः।।३३।। ॐ कलात्मने नमः।।३४।। ॐ अहोरात्राय नमः।।३५।। ॐ मासाय नमः।।३६।। ॐ संवत्सराय नमः।।३७।। ॐ सर्वात्मने नमः।।३८।। ॐ द्वारपालेभ्यो नमः।।३९।। ॐ पुण्यशीलाय नमः।।४०।। ॐ सुशीलाय नमः।।४१।। ॐ विजयाय नमः।।४२।। ॐ पुरतः ॐ गरुडाय नमः।।४३।।

भद्र मण्डल पर उपरोक्त देवताओं का नाम मंत्र से पूजन कर सपरिवार कृष्ण का पूजन करें।

ध्यानम् :-

नारायणाय सुरमण्डन मण्डनाय, नारायणाय सकलास्थिति-कारणाय। नारायणाय भवभीति निवारणाय, नारायणाय प्रभवाय नमो नमस्ते।। ध्येयं सदापरिभवघ्नमभिष्ट दोहं, तीर्थास्पदं शिव विरञ्चि नुतं शरण्यं। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं, वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपा ँ सुरे स्वाहा। विष्णवे नमः।। आवाहनम्। ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमि ँसर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठ द्दशांगुलम्। आवाहन मुद्रा दिखाये।

आसनम् :-

ॐ पुरुष एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति।। आसन देवें।।

पाद्यम् :-

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। पाद्य देवें।।

अर्घ्यम् :-

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।। अर्घ्य देवें।।

आचमनीयम् :-

ॐ ततो विराडजायत विराजोऽअधि पुरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः।। आचमनी चढावें।

स्नानिय जलम् :-

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।। स्ना० जल चढ़ावें।

पयस्नानम् :-

ॐ पयः पृथ्व्यां पयऔषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्।। प० स्ना० पुनर्जल स्नान करें।

दधिस्नानम् :-

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ँषि तारिषत्।।

दधि चढ़ाकर पुनः जल से स्नान करवायें।

घृत स्नानम् :-

ॐ घृतं घृतपावानः पिवत वसं वसापावानः पिवतान्त रिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशोविदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। घृत स्नानंतर पुनः जल सें स्नान करावें।

मधुस्नानम् :-

ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वौषधिः।। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँरजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमांऽऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। मधुस्नान कर पुनः जल से स्नान करावें।

शर्करास्नानम् :-

ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्ये सन्त ँ समाहितम्। अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। शक्कर चढ़ाकर पुनः जल से स्नान करावैं।

पञ्चामृतस्नानम् :-

ॐपञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।
पंचामृत चढ़ाकर पुनः जल स्नान करावैं।

वस्त्रम् :-

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ँ सि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत।।
वस्त्र चढ़ावै।

यज्ञोपवीतम् :-

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माजाता अजावयः।।
यज्ञोपवीत चढावै।।

चन्दनम् :-

तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽ अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।।
चन्दन चढ़ावें।

तिलाक्षतम् :-

अक्षन्नमिमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत अस्तोषतस्वभानवो
विप्रा न विष्ट्या मती यो जान्विन्द्र ते हरिः।

तिलाक्षत चढावें।।

पुष्पम् :-

औषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।

पुष्प चढ़ावें।

तुलसीदलम् :-

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् कि म्वाहू किमूरू पादा उच्चेते।।

तुलसी चढ़ावें।

धूपम् :-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूद्रोअजायत।।

धूप दिखावै।।

दीपम् :-

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

दीप दिखावें।

नैवेद्यम् :-

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ँशीर्ष्णो द्यौः समवर्तत पद्भ्यां
भूमिर्दिशः श्रोत्रातथा लोकांऽऽ अकल्पयन्।।

नै० सर्मपण करे।

अखण्ड ऋतुफलम् :-

याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्चपुष्पिणीः
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः।।

अखण्ड फल चढ़ावैं।

ताम्बूलपूगीफलम् :-

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वतः
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।

ता० पूंगीफल समर्पण करें।

दक्षिणां :-

यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत्।।

दक्षिणा चढ़ावें।

प्रार्थना

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्योवन्दे तमच्युतम्।।

से भगवान कृष्ण को पुष्पांञ्जलि समर्पण करें।

।। भगवान श्रीकृष्ण की आरती ।।

आरती श्रीकृष्ण कन्हैया की, मथुरा- कारागृह- अवतारी,
गोकुल जसुदा-गोद-बिहारी, नंदलाल नटवर गिरिधारी।
वासुदेव हलधर- भैय्या की। आरति०।।

मोर-मुकुट पीताम्बर छाजै, कटि काछनि, कर मुरलि विराजै,
पूर्ण सरद सीस मुख लखि लाजै, काम कोटि छवि जितवैय्या की।।
...............आरति०।।

गोपीजन-रस- रास- विलासी, कौरव-कालिय- कंस- विनाशी,
हिमकर-भानु-कृसानु- प्रकासी, सर्वभूत- हिय- बसवैया की।।
...............आरति०।।

कहुँ रन चढ़ै भागि कहुँ जावै, कहुँ नृप कर, कहुँ गाव चरावै,
कहुँ जागेस, वेद जस गावै, जग नचाय व्रज- नचवैया की।।
.............आरति०।।

अगुन-सगुन- लीला- बपु- धारी, अनुपम गीता-ज्ञान- प्रचारी,
'सेवक' सब विधि बलिहारी, बिप्र-धेनु-सुर- रखवैया की।।
.............आरति०।।

॥ अच्युताष्टकम् ॥

श्री गणेशाय नमः। अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्॥ श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।१॥ अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं माधवं श्रीधरं राधिकाऽराधितम्॥ इन्दिरामंन्दिरं चेतसा सुन्दरं देवकी नन्दनं नंदजं संदधे ॥२॥ विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे रुक्मिणीरागिणे जानकी जानये। वल्लवी वल्लभायार्चितायात्मने कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः॥३॥ कृष्ण गोविन्द हे रामनारायण श्रीपते वासुदेवाजितं श्रीनिधे। अच्युतानन्त हे माधवा धोक्षज द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक॥४॥ राक्षसं क्षोभितः सीतया शोभितो दण्डकारण्यभू पुण्यताकारण॥ लक्ष्मणे नान्वितो वानरैः सेवितोऽगस्त्य-संपूजितो राघवः पातुमाम्॥५॥ धेनुकारिष्टकाऽनिष्ट-कृद्द्वेषिणां के शिहा कंशहृद्वंशिका वादकः॥ पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो वालगोपालकः पातु मां सर्वदा॥६॥ विद्युद्योध्योतवान्प्रस्फुरद्वासस्सं प्रावृडभोदवप्रोल्लसद्विग्रहम्॥ वन्यया मालया शोभितोरः स्थलं लोहितांध्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे॥७॥ कुंचितैः कुंतलैभ्राजमानाननं रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गंडयो॥ हारके यूरकं कंकणप्रोज्ज्वलं किंकिणी मंजुलं श्यामलं तं भजे॥८॥ अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम्। वृत्ततः सुन्दरं कर्तृ विश्वंभरं तस्य व श्योहरिर्जायते सत्वरम्॥९॥

इति शंकराचार्य-विरचितमच्युताष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ श्री कमलनेत्र स्तोत्रम् ॥

श्री कमलनेत्र कटि पीताम्बर अधर मुरली गिरधरम्।
मुकुट कुण्डल कर लकुटिया, साँवरे राधे वरम्॥१॥
कूल यमुना धेनु आगे, सकल गोपी मन हरम्।
पीत वस्त्र गरुड़ वाहन, चरण सुख नित सागरम्॥२॥
करत केलि किलोल निशि दिन, कुंज भवन उजागरम्।
अजर अमर अडोल निश्चल, पुरुषोत्तम अपरा परम्॥३॥
दीनानाथ दयाल गिरधर, कंस हिरणाकुश हरणम्।
गल फूल माल विशाल लोचन, अधिक सुन्दर केशवम्॥४॥
बंशीधर वासुदेव छइया, बलि छल्यो हरि वामनम्।
जल डूबते गज राख लीनों, लंक छेद्यो रावनम्॥५॥
सप्त दीप नवखण्ड चौदह, भुवन कीनों एक पदम्।
द्रोपदी की लाज राखी, कहाँ लौ उपमा करम्॥६॥
दीनानाथ दयालु पूरण, करुणामय करुणा करम्।
कवि दत्तदास विलास निशदिन, नाम जपत नित नागरम्॥७॥
प्रथम गुरु के चरण बन्दों, यस्य ज्ञान प्रकाशितम्।
आदि विष्णु जुगादि ब्रह्मा, सेवितं शिव शंकरम्॥८॥
श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव, कृष्ण यदुपति केशवम्।
श्री राम रघुवर, राम रघुवर, राम रघुवर राघवम्॥९॥
श्रीराम कृष्ण गोविन्द माधव, वासुदेव श्री वामनम्।
मच्छ-कच्छ वाराह नरसिंह, पाहि रघुपति पावनम्॥१०॥
मथुरा में केशवराय विराजे, गोकुल बाल मुकुन्द जी।
श्री वृन्दावन में मदन मोहन, गोपीनाथ गोविन्द जी॥११॥

धन्य मथुरा धन्य गोकुल, जहाँ श्री पति अवतरे।
धन्य यमुना नीर निर्मल, ग्वाल बाल सखा वरे॥१२॥
नवनीत नागर करत निरन्तरं, शिव विरंचि मन मोहितम।
कालिन्दी तट करत क्रीड़ा, बाल अद्‌भुत सुन्दरम्॥१३॥
ग्वाल बाल सब सखा विराजे, संग राधे भामिनी।
बंशी वट तट निकट यमुना, मुरली की टेर सुहावनी॥१४॥
भज राघवेश रघुवंश उत्तम, परम राजकुमार जी।
सीता के पति भक्तन के गति, जगत प्राण आधार जी॥१५॥
जनक राजा पनक राखी, धनुष बाण चढ़ावही।
सती सीता नाम जाके, श्री रामचन्द्र प्रणमामही॥१६॥
जन्म मथुरा खेल गोकुल, नन्द के हृदि नन्दनम्।
बाल लीला पतित पावन, देवकी वसुदेवकम्॥१७॥
श्रीकृष्ण कलिमल हरण जाके, जो भजे हरिचरण को।
भक्ति अपनी देव माधव, भवसागर के तरण को॥१८॥
जगन्नाथ जगदीश स्वामी, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।
द्वारिका के नाथ श्री पति, केशवं प्रणमाम्यहम्॥१९॥
श्रीकृष्ण अष्टपदपढ़तनिशदिन, विष्णु लोक सगच्छति।
श्रीगुरु रामानन्द अवतार स्वामी, कविदत्त दास समावति॥२०॥

॥ इति श्री कमलनेत्र स्तोत्रम् ॥

॥ दूर्वाष्टमी व्रत ॥

भविष्य पुराण में भाद्रपद की शुक्लाष्टमी को दूर्वाष्टमी व्रत कहा है दूर्वाष्टमी को यदि ज्येष्ठा या मूल नक्षत्र हो तो उसका त्याग करना चाहिए। कन्या के सूर्य में भी मदन रत्न के द्वारा व्रत का निषेध कहा है। यदि भाद्रपद शुक्लाष्टमी को अगस्त्य का उदय हो तो उसे पहले कृष्णाष्टमी को ही करना चाहिए यहव्रत स्त्रियों को अवश्य ही करना चाहिए। दूर्वाष्टमी के व्रत के पुण्य का स्वयं भगवान विष्णु ने बताया।

पूजयेच्छङ्कर भक्त्या योनरः श्रद्धयान्वितः।
सयाति परमं स्थानं यत्र देव स्त्रिलोचनः॥

इस व्रत के प्रभाव से विद्यार्थी को विद्या धनार्थी को धन पुत्रार्थी को पुत्र धमार्थी को धर्म और कन्यार्थी को कन्या की प्राप्ति होती है। व्रत के दिन पवित्र नदी में शुक्ल तिलसे स्नान कर उत्तर दिशा की तरफ गई दूर्वा को प्रणाम करें तथा पूजन करें।

॥ दूर्वाष्टमी व्रतोद्यापन ॥

त्वं दूर्वेऽमृत जन्मादि वन्दितासि सुरासुरैः।
सौभाग्यं संतति देहि सर्वकार्यकरी भव॥१॥
यथा शाखा प्रशाखाभिर्विस्तृतासि महीतले।
तथा विस्तृत संतानं देहि त्वमजरा परे॥२॥

दूर्वा के वृक्ष के पास या वितस्ति प्रणाम की दूर्वा लाकर चौकी पर रखें उसके ऊपर शिव गणेश की स्थापना करें।

आवाहन :-

आगच्छ देवि दूर्वे त्वं सर्व सम्पत्प्रदायिनि।
यावद् व्रत समाप्येत तावत्त्वं संनिधा भव॥

बांस पात्र के ऊपर सप्तधान्य युक्त सुवर्ण या चांदी की दूर्वा बनाकर रखें उसका भी पूजन करें।

दूर्वा गणेश और शिव लिंग का पूजन गन्ध पुष्प धूप से कर खजूर नारिकेल और मातुलिंग के फलों से विधिपूर्वक पूजन कर दधि और अक्षत से त्रिलोचन को अर्घ्य देवें।

प्रार्थना :-

विष्णु देहि समुद्भूते दूर्वे त्वंहि प्रसीद मे।
वंदिता सर्व देवैस्तु गम्यतां निज मन्दिरम्॥

रात्रि जागरण कर प्रातः अग्नि प्रतिष्ठापन कर पंचाग हवन करें-

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहंती परुषः परुषस्परि।
एवानोदूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

उपरोक्त मंत्र द्वारा- तिल आज्य से १०८ आहुति दें तथा मण्डलस्थ देवताओं को भी एक-एक आहुति देवें।

संकल्पपूर्वक ब्राह्मण को वस्त्र सोपस्कर प्रतिमा तथा व्रत पूर्ति हेतु गाय दान देवें। बारह ब्राह्मणों को भोजन करावें इस प्रकार जो दूर्वाष्टमी व्रत को करता है उसकी प्रशंसा की गई-

दूर्वाष्टमी व्रतं पुण्यं यः करोतीह मानवः।
न तस्य क्षयमाप्नोति संततिः साप्तपौरुषी॥
नन्दते वर्द्धते नित्यं यथा दूर्वा तथा कुलम्॥

॥ इति दूर्वाष्टमी व्रतोद्यापन प्रयोगः ॥

।। महालक्ष्मी व्रतम् ।।

भाद्रपद शुक्लाष्टमी से प्रारम्भ यह व्रत सोलह दिनों तक किया जाता है। ज्येष्ठा नक्षत्र युक्त अष्टमी में यह व्रत प्रारम्भ किया जाता है।

मासि भाद्रपदे शुक्ले पक्षे ज्येष्ठा युताष्टमी।
प्रारब्धव्यं व्रतं तत्र महालक्ष्म्या यतात्मभिः।। (स्कन्द पुराण)

यदि ज्येष्ठा युक्त अष्टमी न भी तो तो भी अष्टमी के दिन व्रत करना चाहिए। तथा कृष्ण पक्ष में आने वाली चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी में पूर्ण करना चाहिए। स्नानोपरांत अष्टमी प्रातः महालक्ष्मी से व्रत निर्विघ्नतापूर्वक समाप्त करने हेतु प्रार्थना करें।

करिष्येऽहं महालक्ष्मीव्रत ते त्वत् परायण।
तद्विघ्नेन ये यातु समाप्ति त्वत्प्रसादतः।।

सोलह सूत्रों को लेकर उसमें सोलह ग्रन्थियां लगावें पूजन कर इस को शुद्ध आसन पर रख देवें लक्ष्मी पूजन के बाद इस सूत्रको पुरुष दायें हाथ स्त्रियां बायें हाथ या कण्ठ में इसे धारण करें।

।। महालक्ष्मी व्रतोद्यापन ।।

ध्यान :-

अक्षस्त्रकपरशुं गदेशु कुलिशं पद्मं धनुः ष्कुण्डिकां।
दण्डं शक्तिमसिं चचर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।।
शूलं पाश सुदर्शने चदधतीं हस्तैः प्रसनाननां।
सेवे सैरिभमर्दिनी मिह महालक्ष्मी सरोजस्थिताम्।।

आवाहन :-

महालक्ष्मी समागच्छ पद्मनाभपदादिह।
पंचोपचार पूजेयं त्वदर्थ देवि संभृता।।

स्थापन :-

आलयस्ते हि कथितः कमलं कमलालये।
कमले कमलेह्यास्मिन् स्थितित्वं कृपयाकुरु।।

आसन :-

कमले पाहि मे देवि स्वर्ण सिहासनं शुभम्।
गृहाणेदं मयादतं भक्ति युक्तेन चेतसा।।

पाद्य :-

गंगादि सलिलाधारं तीर्थ मंत्राभि मंत्रितम्।
दूरयात्रा श्रम हरं पाद्यं मे प्रतिगृह्यताम्।।

अर्घ्य :-

तीर्थोदकैः महादिव्यै पाप संहार कारकैः।
अर्घ्यं गृहाण देवेशी देवानामुपकारिणी।।

आचमनी :-

आचम्य जगदाधारे सिद्धि लक्ष्मी जगत्प्रिये।
चपले देवि ते दत्तं तोयंगृहाण नमोऽस्तु ते।।

पंचामृत स्नान :-

पयोदधि घृतं क्षीरसीतया च ससन्वित।
पंचामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे।।

शुद्धस्नान :-

तोयं तव महालक्ष्मि कर्पूरागुरु वासितम्।
तीर्थेभ्य समानीतं स्नानार्थे प्रतिगृह्यताम्।।

वस्त्र :-

सूक्ष्म तन्तु भवं वस्त्रं निर्मितं विश्वकर्मणा।
लोकलज्जाहरं देवि गृहाण सुर सत्तमे।।

चन्दन :-

मलयाचल संभूतं नानापन्नग रक्षितम्।
शीतलं बहुलामोदं चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षत:-

रंजिताः कुंकुमौ घेन अक्षताश्चाति शोभना।
ममैषादेवि दानेन प्रसन्नाभव शोभने।।

पुष्प :-

मिलत्परिमलामोदंमतालिकुल संकुलम्।
आनन्दि नन्दनोत्पन्नं पद्मायै कुसुमं नमः॥

नाम मंत्र पूजनः-

श्रियै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥१॥ लक्ष्म्यै नमः॥२॥ वरदायै नमः॥३॥ विष्णुपत्न्यै नमः॥४॥ क्षीर सागर वासिन्यै नमः॥५॥ हिरण्य रूपायै नमः॥६॥ सुवर्ण मालिन्यै नमः॥७॥ पद्मवासिन्यै नमः॥८॥ पद्म प्रियायै नमः॥९॥ मुक्ता लंकारिण्यै नमः॥१०॥ सूर्यायै नमः॥११॥ चन्द्राननायै नमः॥१२॥ विश्वमूर्त्यै नमः॥१३॥ मुक्त्यै नमः॥१४॥ मुक्तिदात्र्यै नमः॥१५॥ ऋध्यै नमः॥१६॥ समृद्धयै नमः॥१७॥ तुष्ट्यैनमः॥१८॥ पुष्ट्यै नमः॥१९॥ धनेश्वर्यै नमः॥२०॥ श्रद्धायै नमः॥२१॥ योगिन्यै नमः॥ २२॥ योगदायै नमः॥ २३॥ धात्र्यै नमः॥२४॥

महालक्ष्मी पूजन करते हुए अंग पूजन करें-

चपलायै नमः पादौ पूजयामि। चंचलायै नमः जानुनि पूजयामि। कमल वासिन्यै नमः कटिं पूजयामि। कान्त्यै नमः नाभिं पूजयामि। मन्मथ वासिन्यै नमः स्तनो पूजयामि नमः। ललितायै नमः भुजद्वयं पूजयामि। कण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि। मायाये नमः मुखं पूजयामि श्रिये नमः। शिरंपूजयामि। समायैनमः सर्वांगं पूजयामि।

धूप :-

गन्धसंभार सन्नद्ध कस्तूरी मोद संभवम्।
सुरासुरनरानन्दं धूपं देवि गृहाण मे॥

दीप :-

मार्तण्ड मण्डलाखण्ड चन्द्रबिम्बाग्नि तेजसाम्।
निधानं देवि दीपोऽयं निर्मित स्तव भक्तितः॥

नैवेद्य :-

देवतालय पाताल भूतलाधार धान्यजम्।
षोडशाकार संभारं नैवेद्यं ते नमः सदा॥

आचमन :-

स्नानादिकं विधायापि यतः शुद्धि प्रजायते।
एतदाचमनीयं च महालक्ष्मी विधीयताम्।।

ताम्बूल :-

पातालतल संभूतं वदन्नाभोज भूषणम्।
नानागुण समाकीर्णं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

दक्षिणा :-

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीज विभावसो।
अनन्त पुण्य फलदा मत्तः शान्ति प्रयच्छ मे।।

नीराजन :-

निरांजनं सुमंगल्यं कर्पूरेण समन्वितम्।
चन्द्रार्क बह्नि सदृशं महालक्ष्मी नमोऽस्तुते।।

पुष्पाञ्जलि :-

शारदेन्दु कलाकान्ति स्निग्धनेत्रा चतुर्भुजा।
पद्मयुग्मा चाभयदा वरयग्र कराम्बुजा।।

प्रार्थना :-

विष्णोर्वक्षसि पद्मेच शंखे चक्रे तथाम्बरे।
लक्ष्मी देवि यथासि त्वं मयि नित्यं तथा भव।।

सूत्र :-

उतार्य दोरकं बाहोर्ताक्षि पार्श्वे निवेदयेत्।
लक्ष्मी देवि गृहाणं त्वं दोरकं यन्मया धृतम्।।

सूत्र बाहु से खोलकर देवी लक्ष्मी पास रख देवें रात्रि में तारागण एवं चन्द्रमां को अर्घ्य देवें-

क्षीरोदार्णव सम्भूता लक्ष्मीश्चन्द्र सहोदरा।
व्रतेनानेन सन्तुष्टा भवताविष्णु बल्लभा।।

प्रातः पूजनो परान्त लक्ष्मी सूक्त से हवन करें पूर्णाहुति पर्यन्त अग्नि विसर्जन कर लक्ष्मी प्रतिमा, अन्न वस्त्र भोजन से सोलह ब्राह्मणों को सन्तुष्ट करें। बटुक तथा सौभाग्यशाली स्त्रियों का पूजन कर स्वयं भोजन कर आशीर्वाद ग्रहण करें।

।। इति महालक्ष्मी व्रतोद्यापनम् ।।

।। श्री लक्ष्मी जी आरती ।।



ॐ जय लक्ष्मी माता (मैय्या) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत हर -विष्णु धाता।।ॐ।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।।ॐ।।
दुर्गारूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता ।।ॐ।।
तुम पाताल-निवासिन, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधिकी त्राता।।ॐ।।
जिस घर तुम रहती, तंह सब सद्‌गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहि घबराता।।ॐ।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव सब तुमको आता।।ॐ।।
शुभ-गुण-मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहीं पाता।।ॐ।।
महालक्ष्मी (जी) की आरती,जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।।ॐ।।

।। महालक्ष्म्यष्टकम् ।।

श्री गणेशाय नमः।। इन्द्र उवाच।

नमस्तेऽस्तु महामाये श्री पीठे सूरपूजिते।
शंङ्ख चक्रगदाहस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।१।।
नमस्ते गरुडारूढे कोला सुरभयंकरि।
सर्वपाप हरे देवि महालक्ष्मी०।।२।।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंकरि।
सर्व दुःखरहे देवि महालक्ष्मी०।।३।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्ति प्रदायिनि।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मी०।।४।।
आद्यंतरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि।
योगजे योगसंभूते महालक्ष्मी०।।५।।
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मी०।।६।।
महापाप हरे देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मी०।।७।।
श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मात महालक्ष्मी०।।८।।
महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्य प्राप्नोति सर्वदा।।९।।
एककालं पठेनित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेनित्य धनधान्यसमन्वितः।।१०।।
त्रिकालं यः पठेनित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेनित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा।।११।।

।। इतिश्रीमहालक्ष्म्यष्टकस्तवः सम्पूर्णाः ।।

॥ लक्ष्मी स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः॥ अगस्त्य उवाच॥

पद्मे पद्मपलाशाक्षि जय त्वं श्रीपतिप्रिये।
जगन्मातर्महालक्ष्मीः संसारार्णवतारिणी॥१॥
महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरि प्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे॥२॥
पद्मालये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं शिवप्रिये।
सर्वभूतहितार्थाय वसुवृष्टिं सदा कुरू॥३॥
जगन्मार्तनमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं कृपावति।
दयावति नमस्तुभ्यं विश्वेश्वरि नमो नमः॥४॥
नमः क्षीराब्धितनये नमस्त्रलोक्यधारिणी। शक्तिवक्त्रे
नमस्तुभ्यं रक्ष मां शरणागतम्॥५॥
रक्ष त्वं देविदेविशि देवदेवशवल्लभे।
दरिद्र्यात्राहि मां लक्ष्मी कृपां कुरु ममोपरि॥६॥
नमस्त्रैलोक्यजनानि नमस्त्रैलोक्यपावनि।
ब्रह्मादयो नमन्ति त्वां जगदानन्द दायिनि॥७॥
विष्णु प्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्धिते।
आर्तिहन्त्रि नमस्तुभ्यं समृद्धि कुरु मे रमे॥८॥
पद्मवासे नमस्तुभ्यं चपलायै नमो नमः।
चञ्चलायै नमस्तुभ्यं ललितायै नमो नमः॥९॥
नमः प्रद्युम्नमातस्तें पाहि मां त्वां नमाम्यहम्।
परिपालय मां मातर्मा तुभ्यं शरणागतम्॥१०॥
शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि कमले कमलानने।
त्राहि त्राहि महालक्ष्मी परित्राण परायणे॥११॥
पाण्डित्यं शोभते नैव न शोभन्ते गुणा नरे।
शीलं चैव न शोभन्ते महालक्ष्मी त्वयां बिना॥१२॥

तावद्विराजते रूपं तावच्छीलं विराजते।
ताबद् गुणा नाराणां च यावल्लक्ष्मीः प्रसीदति॥१३॥
लक्ष्मी त्वयाऽलंकृतमा नवा ये पापैर्विमुक्ता नृप लोकमान्या।
गुणैर्विहीना गुणिनां भवन्ति विशीलिनः शीलवतां वरिष्ठां॥१४॥
लक्ष्मीर्भूषयते रूपं लक्ष्मीर्भूषयते कुलम्।
लक्ष्मीर्भूषयते विद्यां सर्वालक्ष्मीर्विशिष्यते॥१५॥
लक्ष्मी त्वद्गुणकीर्तने कमलभूर्यायावदलं जिह्याता।
रुद्राद्या रवि चन्द्रदेवपतया वक्तुं कथं पार्यते॥१६॥
मातर्मा परिपाहि विश्वजननि कृत्वा ममेष्टं ध्रुवम्।
दीनार्तिभीतं क्षुधया प्रपीडितं वासांविहीनं तव पार्श्वमागतम्॥१७॥
कृपां विधत्से मम लक्ष्मी सत्वरंधनप्रदे मां धननायकं कुरु।
मां विलोक्य जननी हरिप्रिये निर्धनं तव समीपमागतम्॥१८॥
देहि मे झटिति लक्ष्मी कराग्रं वस्त्रकांचनवरात्रमद्धुतम्।
त्वमेव जननी लक्ष्मी पिता लक्ष्मीस्त्वमेव च।
भ्रातां त्वं च सखा लक्ष्मी विद्या लक्ष्मीस्त्वमेव च॥१९॥
त्राहि त्राहि महालक्ष्मी त्राहि त्राहि सुरेश्वरि।
त्राहि त्राहि जगन्मातर्दारिद्र्यात्र्याहि वेगतः॥२०॥
नमस्तुभ्यं जगद्धात्रि विद्यात्र्यै ते नमो नमः।
धर्मध्वजे नमस्तुभ्यं नमः सम्पतिदायिनी॥२१॥
दारिद्र्यार्णाव मग्नोदहं निमग्नोऽहं रसातले।
मज्जमानं करं धृत्वाऽप्युद्धर त्वं रमे द्रुतम्ः॥२२॥
किं लक्ष्मी बहुनोक्तेन जल्पितं च पुनः पुनः।
अन्यन्मे शरणं नास्ति सत्यं सत्यं हरिप्रिये॥२३॥
एतच्छ्रुवात्ऽगतस्त्यावाक्यं हर्षपूर्णा हरिप्रिया।
उवाच मधुरां वाणी तुष्टाऽहं तव सुव्रत॥२४॥

श्रीरुवाच॥

यत्वयोक्तमिदं स्त्रोतं ये पठिष्यति मानवाः।
ते श्रृण्वन्ति महाभक्त्या तस्याहं वशवर्तिनी॥२५॥
नित्यं पठन्ति ये भक्त्याऽप्यलक्ष्मीस्तस्य नश्यति।
ऋणं नश्यति शीघ्रं च वियोगं नैव पश्यति॥२६॥
यः पठेत्प्रातरुत्थाय श्रद्धाभक्तिसमन्वितः।
गृहे तस्य सदा तिष्ठेन्नित्यं श्रीः पतिना सह॥२७॥
सुखसौभाग्यसम्पन्नो मनुष्यो बुद्धिमान भवेत्।
पुत्रवानः पशुमान श्रेष्ठो भुक्त्वा भोगां श्चमानवः॥२८॥
कीर्तिमाद्यं महाभाग्यो नारायणपदं लभेत्।
अपुत्राः पुत्रिणः सन्ति पुत्रिणः सन्ति पौत्रिणः॥२९॥
निर्धनाः सधना सन्ति जीवन्ति शरदां शतम्।
इदं स्त्रोतं महापुण्यं महालक्ष्म्याः प्रकीर्तितम्।
विष्णुप्रसाद जननं चतुर्वर्गफलप्रदम्॥३०॥
राजद्वारे जयश्चैव शत्रोश्चैव पराजयः।
भूतप्रेतिपिशाचानां व्याघ्राणां न भयं तथा॥३१॥
न शस्त्रानलतायौघाद्भयं तस्य प्रजायते।
दुर्वृतानां च पापानं बहुहानिकरं परम्॥३२॥
मन्दुराकरिशालासु गवां गोष्ठे समाहितः।
पठेत्तदोषशान्त्यर्थं महापातकनाशनम्॥३३॥
सर्वसौख्यकरं नृणामायुरारोग्यदं तथा।
अगस्तिमुनिना प्रोक्तं प्रजानां हितकाम्यया॥३४॥

॥ इत्यगस्तविचरचितं लक्ष्मीस्त्रोत्रं सम्पूर्णम् ॥

।। हरतालिका व्रत ।।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष की तृतीया को हरतालिका का व्रत होता है। इस व्रत में तृतीया एक मुर्हुत मात्र हो या उससे भी कम हो तो पहली ही ग्रहण करनी चाहिए। माधव का कथन है कि यदि चौथ के साथ यदि मुहुर्तमात्र तृतीया हो तो वह गौरी व्रत होता है। इस हरताल का व्रत प्रथम दिन तथा दूसरे दिन हवनादि करके कार्य सम्पन्न करना चाहिए। यह व्रत स्त्रियों के लिए सौभाग्य दाता है। रात्रि जागरण का विधान है दूसरे दिन व्रत का उद्यापन किया जाता है।

।। हरतालिका व्रतोद्यापन ।।

गणेशादि देवताओं का पूजन करके उमा महेश्वर का पूजन करना चाहिए।

ध्यान :-

पीत कौशेय वसनां हेमाभां कमलासनम्।
भक्तानां वरदां नित्य पार्वतीं चिन्तयाम्यहम्।।
मन्दार माला कुलितालकायै कपालमालांकित शेखराय।
दिव्याम्बराय च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।

आवाहन् :-

देवि देवसमागच्छ प्रार्थयेऽहं जगन्मये।
इमां मया कृता पूजां गृहाणसुर सत्तमे।।

आसनः-

भवानित्वं महादेवि सर्वसौभाग्य दायिके।
अनेक रत्न संयुक्तं आसनं प्रतिगृह्यताम्।।

पाद्य :-

सुचारू शीतलं दिव्य नाना गन्ध समन्वितम्।
पाद्यं गृहाण देवेशी महादेवी नमोस्तुते।।

अर्घ्य :-

श्री पार्वती महाभागे शंकर प्रियवादिनी।
अर्घ्य गृहाण कल्याणि भर्ता सह पतिव्रते।।

आचमनी :-

गंगाजल समानीतं सुवर्ण कलशे स्थितम्।
आचम्यता महाभागे रुद्रेण सहिते ऽ नघे।।

स्नान :-

गंगा सरस्वतीरेवा पयोष्णि नर्मदा जलै।
स्नापितासि मयादेवि तथा शान्ति कुरुष्व मे।।

मधु पर्क :-

दध्याज्य मधुसंयुक्तं मधुपर्कं मयानघे।
दत्तं गृहाण देवेशी भवपाश विमुक्तये।।

पय स्नान :-

सुरभिस्तन सम्भूतं सर्व देव प्रियं पयम्।
स्नानाय ते मया भक्त्या दत्तं स्वीकृतयामिति।।
पुनर्जलस्नान।।

दधि स्नान :-

चन्द्रमण्डल संकाशं सर्वदेव प्रियं दधि।
अनेन स्नापिताऽसि त्वं तेन शान्ति कुरुष्व मे।।
पुनर्जलस्नान।।

मधु स्नान :-

सर्वोषधि समुत्पन्नं पीयूष मधुरं मधु।
स्नापनाय मयादत्तं गृहाण जगदम्बिके।।
पुनर्जलस्नान।।

घृत स्नान :-

आज्यं सुराणामाहारमाज्यं यज्ञे हविर्ध्रुवम।
आज्यं गृहाण स्नानाय मया तुभ्यं निवेदितम।।

पुनर्जलस्नान।।

शर्करा स्नान :-

दक्षुदण्ड समुद्भूतां शर्करा मधुरां मधु।
स्नापनाय मयादत्तं गृहाण सुरसत्तमे।।

पुनर्जलस्नान।।

पंचामृत स्नानं :-

पयोदधि घृतचैव शर्करा मधुसंयुतम्।
पंचामृतेन स्नपनं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।।

वस्त्र :-

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारिणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससां प्रतिगृह्यताम्।।

उपवीत :-

मन्त्र मयं मया दत्तं पर ब्रह्म मयं शुभम्।
उपवीतानिदं सूत्रं गृहाण जगदम्बिके।।

कंचुकी :-

कंचुकीमुपवीतंच नानारत्नैः समन्वितम्।
गृहाणंत्वं मयादत्तं पार्वत्यै नमोस्तुते।।

गन्धम् :-

कुंकुमागरु कर्पूर कस्तूरी चन्दनैर्युतम्।
विलेपनं महादेवि तुभ्यं दास्यामि भक्तितः।।

अक्षतः-

रंजिताः कुकुमौघेन अक्षता श्चाति शोभनाः।
भक्त्या समर्पिताः तुभ्यं प्रसन्ना भव पार्वती।।

सौभाग्य द्रव्य :-

हरिद्रां कुकुंम चैव सिन्दूरं कज्वलान्वितम्।
सौभाग्य द्रव्य संयुक्तं गृहाण परमेश्वरीम्।।

पुष्प :-

सेवान्तिका वकुलचम्पक पाटलाब्जे पुन्नागजाति करवीर रसाल पुष्पैः।
विल्व प्रवाल तुलसीदल मालतीभिः त्वां पूजयामि जगदीश्वरी मे प्रसीद।।

अथ अंग पूजा :-

उमायै नमः पादौ पूजयामि। गौर्ये नमः जंघे पूजयामि पार्वत्यै नमः जानुनि पूजयामि। जगधात्र्यै नमः उरु पूजयामि। जगद्प्रतिष्ठायै नमः कटिं पूजयामि। शान्ति स्वरुपिण्यै नमः नाभिं पूजयामि भवान्यै नमः नेत्रे पूजयामि। रुद्राण्यै नमः कर्णौ पूजयामि शर्वाण्यै नमः ललाटं पूजयामि। मंगल दात्र्यै नमः शिरः पूजयामि।।

शिव अंग पूजा :-

त्र्यम्बकाय नमः पादौ पूजयामि। भैरवाय नमः गुल्फौ पूजयामि। कमारिये नमः। जंघा पूजयामि। रुद्राण्यै नागयज्ञोपवीतिने नमः उरुं पूजयामि।। रुद्राण्यै नमः कर्णौ पूजयामि। देवदेवाय नमः हृदयं पूजयामि।। ईश्वरायनमः बाहुं पूजयामि। रुद्राय नमः। हस्तौ पूजयामि। महेश्वराय नमः कण्ठं पूजयामि। व्योम केशाय नमः मुखं पूजयामि। रुद्राय नमः नासिकां पूजयामि। उमापतये नमः नेत्रे पूजयामि। पिनाकिने नमः ललाटं पूजयामि। कपालभृते नमः शिरः पूजयामि। सर्व व्यापकाय नमः सर्वांगं पूजयामि।

पत्र पूजन :-

उमाये नमः विल्वपत्रं समर्पयामि। गौर्ये नमः दूर्वा पत्रं समर्पयामि कालिकायै नमः तुलसीं पत्रं समर्पयामि। भद्रकाल्यै नमः जाती पत्रं समर्पयामि। विश्वरूपिण्यै नमः सेवन्तिका पत्रं समर्पयामि। कौमार्यै नमः वेणुं पत्रं समर्पयामि। महालक्ष्म्यै नमः निम्ब पत्रं समर्पयामि। कमलायै नमः चम्पक पत्रं समर्पयामि। कैलाश वासिन्यै नमः भृगराज पत्रं समर्पयामि। सर्व व्यापिन्यै नमः मातुलिंग पत्रं समर्पयामि॥

धूप :-

देवद्रुम रसोद्भूत कृष्णागुरु समन्वितः।
आनीतोऽयं मया धूपो भवानि प्रतिगृह्यताम्॥

दीप :-

त्वं ज्योति सर्व देवानां तेजसा तेज उत्तमम्।
आत्मज्योतिः परं धाम दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

नैवेद्यं :-

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसै षड्भिः समन्वितम्।
भक्ष्यं भोज्य समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

करोद्वर्तन :-

मलयाचल संभूतं कर्पूरेण समन्वितम्।
करोद्वर्तनं चारू गृह्यताम् जगतः पते॥

फल:-

इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतः तव।
तेन मे सफला वाप्ति भवेत् जन्मनि जन्मनि॥

पूगीफल :-

पूंगीफलं महद् दिव्य नागवल्ली दलैर्युतम्।
कर्पूरेण समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

दक्षिणा :-

हिरण्यगर्भ गर्भस्थ हेमबीजं विभावसौ।
अनन्त पुण्य फलदं मतः शान्ति प्रयच्छ मे॥

नीराजन :-

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्थैव च।
त्वमेव सर्व ज्योतीषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥

नाम पूजा :-

उमायै नमः गौर्ये नमः पार्वत्यै नमः जगद्धात्र्यै नमः। जगत्प्रतिष्ठायै नमः। शान्ति स्वरूपिण्यै नमः। हराय नमः। महेश्वराय नमः। शंभवे नमः। शूलपाणये नमः। पिनाकधृते नमः। शिवाय नमः। पशुपतये नमः। महादेवाय नमः। पुष्पांजलि समर्पयामि।

प्रदक्षिणा :-

यानि-कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

प्रार्थना :-

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्य भावेन क्षमस्व परमेश्वरी।
पुत्रान् देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि सुव्रते।
अन्याश्च सर्व कामांश्च देहि देवि नमोऽस्तुते॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरी।
भक्त्या कृतं तु यद्देवि पूजनं तव सुव्रते।
तत्सर्वं सम्पूर्णतां यातु त्वत् प्रसादात् सुरेश्वरी॥

सौभाग्यवायन संकल्प :-

अद्यैत्यादि- गुण विशिष्ठायां शुभ पुण्य तिथौ मम आत्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं उमामहेश्वर। देवता प्रीत्यर्थं ब्राह्मणाय सौभाग्य वायनं प्रदानं करिष्ये।।

ब्राह्मण प्रार्थना :-

अन्नं सुवर्ण पात्रस्थं सवस्त्रं फल दक्षिणाम्।
वायनं गौरी विप्राया ददामिप्रीतये तव।।
सौभाग्यारोग्य कामाय सर्व सम्यत् समृद्धये।
गौरी गौरीश तुष्यर्थं वायनं ते ददाम्यहम्।।

चतुर्थी प्रातः पुनः पूजन कर हवन कार्य करना चाहिए। रुद्र मंत्र :- नमस्तेरुद्र मन्यव० तथा गौरी मंत्र अम्बे अम्बिके अम्बालिके० के मंत्र से 108 अथवा 28 आहुतियां दें होम कार्य पूर्ण कर आचार्य को उपस्कर सहित शैय्या, गौदान आदि देकर सोलह ब्राह्मण सहित दम्पतियों को भोजन करावें सबान्धव भोजन करे तथा ब्राह्मणों से आशीर्वाद ग्रहण करें।

।। इति हरतालिका व्रतोद्यापनम्।।

।। ऋषि पंचमी ।।

भाद्रपद की शुक्ल पंचमी के दिन यह व्रत किया जाता है। तब यह व्रत करना चाहिए जब पंचमी मध्याह्न व्यापिनी हो-

प्राप्य भाद्रपदे मासि शुक्ल पक्षस्य पंचमीम्।।
पूजा व्रतेषु सर्वेषु मध्याह्न व्यापिनी तिथी।।

पंचमी को प्रातः स्नान कर नित्य कर्म कर पंचगव्य का प्राशन करना चाहिए यह व्रत सात वर्षों तक करने का विधान शास्त्रकारों ने बताया है। ऋषि पंचमी के दिन सप्तऋषियों का पूजन किया जाता है। ऋषियों के साथ अरुन्धति का पूजन करना चाहिए। शुभ फल की प्राप्ति के लिए यह व्रत किया जाता है। सर्वतो भद्रमण्डल की स्थापना कर भद्र के ऊपर ताम्र कलश को रख अरुन्धति सहित सात ऋषियों का पूजन प्रतिष्ठापन करें:-

।। ऋषि पंचमी व्रतोद्यापनम् ।।

अद्यैत्यादि० मया ज्ञानतोऽज्ञानतो वा रजस्वला अवस्थायां कृत संपर्क जनित दुर्योनित्व दोष परिहार द्वारा शुभफल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं आचारित ऋषि पंचमी व्रतोद्यापनं करिष्ये।

गणेश आदि देवताओं का पूजन कर सर्वतो भद्र मण्डल में ब्रह्मादि देवताओं का पूजन करें तत्पश्चात सप्त ऋषियों का पूजन करें:-

ॐ सप्तऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षंति सदम प्प्रमादम्।
सप्तायः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागतोऽ अस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ।।
ॐ कश्यपाय नमः कश्यप आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ भारद्वाजाय नमः भारद्वाज आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ विश्वमित्राय नमः विश्वमित्रं आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ गौतमाय नमः गौतमं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ जमदग्नये नमः जमदग्निं आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।

ॐ वशिष्ठाये नमः वशिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतीं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

प्रतिष्ठापन :-

ॐ नमो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तन्नो त्वरिष्टं यज्ञ ॐ समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।

मंत्र से प्रतिष्ठापन करें।

आवाहन :-

आगच्छन्तु महाभागः चतुर्वेद परायणाः।
यावद् व्रत मिदं कुर्वे कृपया भवतामहम्।।

आसन :-

ऋग्यजुः सामवेदानां स्वरूपेभ्यो नमो नमः।
पुराण पुरुषेभ्यो देवर्षिभ्यो नमः।।

पाद्य:-

गन्ध पुष्पाक्षतैः युक्तं पाद्यं गृहणन्तु भो द्विजाः।
प्रसादं कुरुत प्रीता स्तुष्टा सन्तु सदामम्।।

अर्घ्य :-

नभस्ये शुक्ल पंचम्यामर्चिताः ऋषि सन्तमाः।
दहन्तु पापं सर्व गृह्णन्तु अर्घ्यं नमो नमः।।

आचमन :-

लोकानां तुष्टि कर्तारो यूयं सर्वे तपोधनाः।
नमो वै धर्म विज्ञेभ्यो महर्षिभ्यो नमो नमः।।

पंचामृत :-

पयोदधि घृतं चैव शर्करा मधु संयुतम्।
पंचामृतेन स्नपनं करिष्ये ऋषिसत्तमः।।

स्नान :-

मन्दाकिनी गौतमी च यमुना च सरस्वती।
कृष्णा च नर्मदा तापी ताभ्यः स्नानार्थमांहृतम्।।

वस्त्र :-

सर्वे नित्यं तपोनिष्ठाः ब्रह्मज्ञा सत्यवादिनः।
वस्त्राणि प्रतिगृह्णन्तु मुक्तिदा सन्तु मे सदा।।

उपवीत :-

नानामंत्रैः समुद्भूतं त्रिवृतं ब्रह्मसूत्रकम्।
प्रत्येकंच प्रयच्छामि ऋषयः प्रतिगृह्यताम्।।

गन्ध :-

कुंकुमागरु कर्पूर सुगन्ध्यैः मिश्रितं शुभम्।
गन्धाढ्यं चन्दनं दिव्यं गृहणन्तु ऋषि सत्तमाः।।

अक्षत:-

शुभ्राक्षताश्च संपूर्णाः प्रक्षाल्यच नियोजिताः।
शोभायै वो मया दत्ता गृह्यतां मुनि सत्तमाः।।

पुष्प :-

मालती चम्पकादीनि तुलस्यादीनि वै द्विजाः।
मया हृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

धूप :-

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

दीप :-

साज्यंवर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश सर्वत्र तिमिरापहम्।।

नैवेद्य :-

नानापक्वान संयुक्तं रसैःषड्भिः समन्वितम्।
गृहाणन्तु ऋषयः सर्वे मया नैवेद्यमर्चितम्।।
नैवेद्यान्ते जलम्। उत्तरापोशनम् हस्तप्रक्षालनम्।
करोद्वर्तनार्थेचन्दनम्।।

फल :-

नमो वेदविदः श्रेष्ठाः ऋषयः सूर्य सन्निभाः।
गृह्णन्तु फलमिदं तुष्ठाः स्युः ऋषिसत्तमाः।।

पूंगीफल :-

पूंगीफलं महादिव्यं कर्पूरादि सुवासितम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण ऋषि सत्तमाः।।

दक्षिणा :-

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमवीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिप्रयच्छ मे।।

प्रदक्षिणा :-

यानि कानिच पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

प्रार्थना

नमोऽस्तु ऋषिवृंदेभ्यो देवर्षिभ्यो नमो नमः।
सर्वपाप हरेभ्यो हि वेद् विद्भ्यो नमो नमः।।
एते सप्तर्षयः सर्वे भक्त्या संपूजिताः मया।
सर्वपापं व्यपोहंतु ज्ञानतोऽज्ञानतः कृतम्।।

प्रार्थना कर वस्त्राभूषण फल घी दक्षिणा सहित ब्राह्मण को देकर प्रार्थना करें :-

वायनं फल संयुक्तं सघृतं दक्षिणान्वितम्।
द्विजवर्याय दास्यामि व्रत सम्पूर्ति हेतवे।।
भवंतः प्रतिगृह्णन्तु ज्योतीरूपा स्तपोधनाः।
उभयोस्तारकाः सन्तु वायनस्य प्रसादतः।।
न्यूनातिरिक्त कर्माणि मया यानि कृतानि च।
क्षमध्वंतानि सर्वाणि यूयंसर्वे तपोधनाः।।

पूजन कर गणपत्यादि हवन करके ऋषि मंत्र **ॐ सप्तऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्तरक्षन्ति सदम् प्रमादम्। सप्तायः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागतोऽअस्वप्न जौ सत्रसदौच देवौ।** **इस मंत्र से 108 आहुतियां देकर कश्यपाय स्वाहा। अत्रये स्वाहा। भरद्वाजाय स्वाहा। विश्वमित्राय स्वाह। गौतमाय स्वाह। जमदग्नये स्वाहा। वशिष्ठाय स्वाहा।** अरुन्धत्यै स्वाहा तक हवन कर पूर्णाहुति आदि यज्ञ कार्य सम्पूर्ण कर सात ब्राह्मणों को वस्त्र आदि से पूजन कर प्रत्येक ब्राह्मण को एक कलश दक्षिणा प्रतिमा सहित देकर प्रार्थना करें-

प्रतिगृह्ण द्विजश्रेष्ठ प्रतिमादि समन्वितम्।
कलशं चार्षिसं प्रीत्यै व्रतसम्पूर्ति हेतवे।।

प्रार्थना कर ब्राह्मणों को भोजनादि से सन्तुष्ट कर आशीर्वाद ग्रहण करें।

।। इति पंचमी व्रतोद्यापनम् ।।

।। अनन्त चतुर्दशी व्रत ।।

सम्पूर्ण सिद्धियों के लिए अनन्त चतुर्दशी का व्रत किया जाता है।

अनन्तं पूजयेद्यस्तु प्रातः काले समाहितः।
अनन्तां लभते सिद्धिं चक्रपाणेः प्रसादतः।। (ब्रह्म पुराण)

अनन्त चतुर्दशी व्रत परा लेना चाहिए क्योंकि परा ही पूजन के समय रहेगी। माधवीय वचनानुसार मध्याह्नव्यापिनी लेनी चाहिए। विद्वान लोगों की सम्मति से पूर्णमासी के योग से अनन्त व्रत करें भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी एक घड़ी भी हो तो परा का ही ग्रहण करना यह सर्व सम्मत है।

अनन्त चतुर्दशी के दिन प्रातःकाल गंगा आदि पवित्र नदियों में स्नान कर पवित्र हो एकाग्र मन से अनन्त का ध्यान करना चाहिए। सर्वतो भद्र बना कर उस पर कलश रखें अष्टदल कमल पर भगवान विष्णु की पूजा तथा कुशा से सात फनों वाला दर्भ का शेष बनावें कुंकुम से रंगा हुआ मजबूत डोरे पर चौदह गांठ देकर पूजन करना चाहिए। अनन्त चतुर्दशी का व्रत विधान चौदह वर्ष का है। अनन्त प्रतिमा स्वर्ण से बनावें।

।। अनन्त चतुर्दशी व्रतोद्यापनम् ।।

अनन्त चतुर्दशी के दिन यमुना पूजन विधान भी शास्त्र कारों ने बताया है। यमुना पूजन कर अनन्त का पूजन करना चाहिए।

ध्यान :-

ब्रह्माण्डाधारभूतं च यमुनान्तर वासिनम्।
फणासप्त समायुक्तं काल पन्नगनायकम्।।

आवाहन :-

शेष सप्त समायुक्तं काल पन्नग नायकम्।
अनन्त शयनार्थं त्वां भक्त्या ह्यावाहयाम्यहम्।।

आसन :-

नवनाग कुलाधीश शेषो धारक काश्यप।
नानारत्न समायुक्तमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

पाद्य :-

अनन्त प्रिय शेषेश जगदाधार विग्रह।
पाद्यं गृहाण भक्त्या त्वं काद्रवेय नमोस्तुते।।

अर्घ्य :-

कश्यपानन्द जनक मुनिवन्दित भो प्रभो।
अर्घ्यं गृहाण सर्वज्ञ सादरं शंकरं प्रियः।।

आचमन :-

सहस्त्र फण रूपेण वसुधोद्धारक प्रभो।
गृहाणाचमनं देव पावनंच सुशीतलम्।।

मधुपर्क :-

कुमार रूपिणे तुभ्यं दधिमध्वाज संयुतम्।
मधुपर्कं प्रदास्यामि सर्पराज नमोस्तु ते।।

स्नानीयजल :-

गंगादिपुण्यतीर्थस्त्वामभिषिंचेयमादरात्।
बलभद्रावतारेश नन्ददः श्रीपते सखे।।

वस्त्र :-

कौशेय युग्मं देवेश प्रीत्या तव मयार्पितम्।
गृहाण पन्नगाधीशं ताक्ष्यशत्रोनमोस्तुते।।

यज्ञोपवीत :-

सुवर्ण निर्मितं सूत्रं ग्रथितं कण्ठ हारकम्।
अनेकरत्नैः खचितं सर्पराजनमोस्तुते।।

आभरण :-

अनेकरत्नान्वितहेमकुण्डले माणिक्यसंका शित कंकण द्वयम्।
हेमांगुलीयं कृत रत्न मुद्रिकम् हैमं किरीटं फणिराजोर्पितम्।।

चन्दन :-

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनो हरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

अक्षत :-

अक्षतातण्डुला शुभ्राः कुंकुमाक्ताः सुशोभनाः।
मया निवेदिताः भक्त्यां गृहाण परमेश्वर॥

पुष्प :-

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यदीनि वैप्रभो।
मया हृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

अथ अंग पूजा :-

सहस्र पादायनमः पादौ पूजयामि॥
गूढगुल्फाय नमः गुल्फौ पूजयामि॥
हेमजंघाय नम जंघा पूजयामि॥
मन्दगतये नमः जानुनि पूजयामि॥
पीताम्बर धराय नमः कटीं पूजयामि॥
गम्भीर नाभाय नमः नाभिं पूजयामि॥
कम्बुकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि॥
विष वक्राय नमः वक्रं पूजयामि॥
फणाभूषणाय नमः ललाटं पूजयामि॥
लक्ष्मणाय नमः शिरः पूजयामि॥
अनन्त प्रियाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि॥

धूप :-

वनस्पति रसोद् भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेय सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

दीप :-

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्॥

नैवेद्य :-

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भि समन्वितै।
भक्ष्यं भोज्यं समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ताम्बूल :-

पूंगीफलं महादिव्यंनागवल्ली दलैर्युतम्।
कर्पूरादि समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

फल :-

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफला वाप्तिः भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

दक्षिणा :-

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्यफलदा मतः शान्तिप्रयच्छ मे॥

नीराजन :-

चन्द्रादित्यो च धरणी विद्युतदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्व ज्योतिषि आर्तिक्यं प्रति गृह्यताम्।

मंत्रपुष्पांजलि :-

नमस्तेपुण्डरीकाक्ष नमस्तेह्यमर प्रिय।
नमस्ते कमला कान्त वासुदेव नमोस्तुते॥

प्रदक्षिणा :-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

प्रार्थना :-

नमोऽस्तनन्ताय सहस्र मूर्तये सहस्रपादाक्ष शिरोरूवाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटि युग धारिणे नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टांगोऽयं प्रणामोऽस्तु प्रणयेन मयाकृतम्॥
अनन्त कल्पोक्तफलं देहि त्वं महीधर।
त्वं पूजारहितचार्द्ध फलं प्राप्नोति मानवः॥

अनन्त डोरे की प्राण प्रतिष्ठा कर गन्धाक्षतं पुष्प से अनन्त डोरे का पूजन कर लेवें।

१. ग्रन्थि पूजन :-

१.	श्रिये नमः	२.	मोहिन्यै नमः।
३.	पद्मिन्यै नमः	४.	महाबलायै नमः
५.	अजायै नमः	६.	मङ्गलायै नमः
७.	वरदायै नमः	८.	शुभायै नमः
९.	जयायै नमः	१०.	विजयायै नमः
११.	जयन्त्यै नमः	१२.	पापनाशिन्यै नमः
१२.	विश्वरुपायै नमः	१४.	सर्वमङ्गलायै नमः

२. ग्रन्थिदेवता पूजनम :-

१.	विष्णवे नमः	२.	अग्नये नमः।
३.	आदित्येभ्यो नमः	४.	सहस्राक्षाय नमः
५.	पितामहाय नमः	६.	इन्द्राय नमः
७.	पिनाकिने नमः	८.	विघ्नेशाय नमः
९.	स्कन्दाय नमः	१०.	सोमाय नमः
११.	वरुणाय नमः	१२.	पवनाय नमः
१३.	पृथिव्ये नमः	१४.	बसुभ्यो नमः

अनन्त डोरे को धूप दीपक नैवेद्य दक्षिणा अर्पण कर देवें।

प्रार्थना

अनन्ताय नमस्तुभ्यं सहस्रशिरसे नमः।
नमोऽस्तु पद्मनाभाय नागानां पतये नमः॥
अनन्त कामदः कामः अनन्तो मे प्रयच्छतु।
अनन्तोदोर रूपेण पुत्र पौत्रान्प्रवर्धतु॥

सूत्र बांधने का मंत्र :-

अनन्त संसार महासमुद्र मग्नं समभ्युद्धर त्रासुदेव।
अनन्त रूपे विनियोजस्व ह्यनन्त सूत्राय नमो नमस्ते॥

जीर्ण सूत्र विसर्जन मंत्र :-

नमः सर्व हितार्थाय जगदानन्द कारक।
जीर्ण दोरकममु देव विस्रजेऽहं त्वदाज्ञया॥

प्रार्थना :-

नमस्ते देव देवेश नमस्ते धरणीधर।
नमस्ते सर्व नागेन्द्र अनन्ताय नमो नमः।।

इस प्रकार पूजन कर रात्री में कथा श्रवण करें रात्री जागरण कर प्रातः देवताओं का पूजन कर अग्नि स्थापन कर पंचाग देवताओं का हवन करें। पश्चात् निम्न मंत्र से 108 आहुतियां देवें -

ॐ अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे।
पृथिव्यासप्तधामभिः।

पुनः-

अनन्ताय स्वाहा। कपिलाय स्वाह। शेषाय स्वाहा। कलात्मने स्वाह। अहोरात्राय स्वाह। मासाय स्वाहा। अर्धमासाय स्वाहा। षड् ऋतुभ्य स्वाहा। संवत्सराय स्वाहा। उषसे स्वाहा। कलायै स्वाहा। काष्ठायै स्वाहा। मुहूर्ताय स्वाहा। हवन कर ग्रन्थि देवता पीठ देवता सर्वतोभद्र मण्डल देवताओं को भी आहुति प्रदान करें। पूर्णाहुति कर वस्त्रालंकार शय्या प्रतिमा सोपस्कर आचार्य को देवें।

व्रती ब्राह्मण (आचार्य) की प्रार्थना करें :-

प्रतिगृह्ण द्विज श्रेष्ठ समस्त फलदायक।
त्वप्रसादादहं विप्र विमुच्ये भवबन्धनात्।।

चौदह निमंत्रित ब्राह्मणों को वस्त्र आदि से पूजन कर भोजन दक्षिणा से सन्तुष्ट कर प्रत्येक ब्राह्मण को एक एक कलश प्रदान करें।

पुनः प्रार्थना करें :-

भक्तिहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च।
मंत्रहींन कृतं यच्च परिपूर्ण तदस्तु मे।।

व्रती ब्राह्मणों से आशीर्वाद ग्रहण कर बान्धवों के साथ भोजन करें।

।। इति अनन्त चतुर्दशी व्रतोद्यापनम् ।।

।। संकटनाशन गणेश चतुर्थी व्रत ।।

यह भाद्रपद कार्तिक माघ मास आदि के कृष्णपक्ष चतुर्थी में करना श्रेष्ठ है। इस व्रत को उस चतुर्थी में करना चाहिए जो कि चन्द्रमा के उदय में व्याप्त हो। चन्द्रोदय के अभाव में रात्री को छः घड़ी तक रहने वाली परा चतुर्थी का ही व्रत में ग्रहण होता है। इस व्रत में गणेश की स्वर्ण प्रतिमा का निर्माण कर उसके पूजन का विधान बताया गया है। इस व्रत से दरिद्र रोग कुष्टादि रोगों से मुक्ति महादु:ख बैरियों द्वारा राज्य से च्युत होने पर तथा विद्या, धन, पुत्र, आरोग्यता तथा किसी भी प्रकार के शंकट उत्पन्न होने पर इस व्रत के प्रभाव से समस्त संकट दूर होते हैं। गणेशजी की प्रसन्नता से सभी कार्य अवश्य ही सिद्ध होते हैं। व्रत के दिन सर्वतो भद्र के ऊपर ताम्र कलश रखें ताम्र कलश में स्वर्ण की गणपति प्रतिमा का पूजन निम्न विधान से करें :-

।। संकटनपाशन गणेश चतुर्थी व्रतोद्यापनम् ।।

संकल्प :-

अद्यैत्यादि मम सह कुटुम्बस्य क्षैम-स्थैर्य विजया अभय-आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य अभिविध्यर्थं च धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विध- पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं श्री गणपति प्रीत्यर्थं यथा मिलितोपचार द्रव्यै संकष्ट चतुर्थी व्रतांगत्वेन विहितं पूजनमहंकरिष्ये॥

ध्यान:-

श्वेतांगं श्वेत वस्त्रं सितकुसुमगणै पूजितं श्वेत गन्धैः।
क्षीराब्धौ रत्नदीपं सुरतरुविमलै रत्न सिहासनस्थाम्।
दोर्भिः पाशाकुंशा अभयवर मनसां चन्द्रमौलि त्रिनेत्रां।

ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्री समेतं प्रसन्नम्।।
लम्बोदरं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं रक्तवर्णकम्।
सर्वाभरण सुवेषाख्यं प्रसन्नास्यं विचिन्तयेत्।।
ध्यायेत् गजाननं देवं तप्त कांचन सुप्रभम्।
चतुर्बाहु महाकायं सूर्य कोटि समप्रभम्।।

आवाहनः-

ॐ सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ॐ सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद् दंशागुलम्।।
आगच्छ त्वं जगन्नाथ सुरासुर नमस्कृतम्।
अनाथ नाथ सर्वज्ञ विघ्नराज कृपां कुरु।।
गजस्यामवाहयामि।

आसन :-

ॐ पुरुष ऐवद ॐ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति।।
गोप्तां त्वं सर्व लोकानामिन्द्रादीनां विशेषतः।
भक्तदारिद्र्य विच्छेता एकदन्त नमोऽस्तु ते।।
विघ्न राजाय नमः आसनं समर्पयामि।।

पाद्य :-

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायां श्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।
मोदकान्धारयन्हस्ते भक्तानां वर दायक।
देवदेव नमस्तेस्तु भक्तानां फलदो भव।।
लम्बोदराय नमः पाद्यं समर्पयामि।।

अर्घ्य :-

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोस्येहा भवत् पुनः।
ततो विष्वं व्यक्रामत् सा शनानशने अभि।।

महाकाय महारूपं अनन्त फलदोभव।
देवदेव नमस्तेऽस्तु सर्वेषां पापनाशनम्॥
शंकर सूनवे नमः अर्घ्यं समर्पयामि ॥

आचमन :-

ततो विराड जायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः।
कुरुष्वाचमनं देव सुरवन्द्य सुवाहन।
सर्वाघदलनस्वामिन्नीलकण्ठं नमोऽस्तुते।
उमा सुताय नमः आचमनं समपर्यामि ॥

पंचामृतस्नान :-

स्नानंपंचामृतेनैव गृहाण गणनायक।
अनाथनाथ सर्वज्ञ नमो मूषक वाहन॥
पयोदधि घृतंचैव शर्करामधुसंयुतम्।
पंचामृतेनस्नपनं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥
वक्रतुण्डाय नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि ॥

शुद्ध जल स्नान :-

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्मइध्मः शरद्धवि॥
गंगा च यमुना चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदा सिन्धु कावेरि जलं स्नानायश्च कल्पितम्॥
हेरम्बाय नमः शुद्ध जलं स्नानं समर्पयामि॥

वस्त्र :-

तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्याः ऋषयश्च ये॥
रक्तवस्त्रसुयुग्मं च देवानामपि दुर्लभम्।

गृहाण मङ्गलं देव लम्बोदर हरात्मज॥
शूर्पकर्णाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत :-

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ७ँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥
ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण गणनायक।
आरक्त ब्रह्मसूत्रं च कनकस्योत्तरीयकम्॥
कुब्जाय नमः यज्ञोपवतं समर्पयामि॥

गन्ध :-

तस्मात् द्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्याः ग्राम्याश्च ये॥
गृहाणेश्वर सर्वज्ञदिव्य चन्दन उत्तमम्।
करुणाकर गुञ्जाय गौरीसुत नमोस्तु ते॥
गणेश्वराय नमः गन्धं समर्पयामि॥

अक्षत :-

अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्तान् सुशोभनान्।
गृहाण विघ्न राजेन्द्र मयादत्तान् हि भक्तितः॥
गजवदानाय नमः अक्षतान समर्पयामि॥

पुष्प :-

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥
रक्तपुष्पाणि विघ्नेश एक विंशति संख्यया॥
गृहाण सुमुखो भूत्वा मयादत्तान् उमासुत।
विघ्ननाशिने नमः पुष्पं समर्पयामि॥

दूर्वा :-

दूर्वांकुरान् सुहरितान्मृतान्मङ्गल प्रदान्।
आनीस्तांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥
एक दन्ताय नमः दूर्वां समर्पयामि॥

अंग पूजा :-

गणेश्वराय नमः पादौ पूजयामि॥ विघ्नराजाय नमः जानुनी पूजयामि॥ आखुवाहनाय नमः ऊरु पूजयामि॥ हेरम्बाय नमः कटिं पूजयामि॥ कामरि सूनवे नमः नाभिं पूजयामि॥ लम्बोदराय नमः उदरं पूजयामि॥ गौरी सुताय नमः स्तनौ पूजयामि॥ गणनायकाय नमः हृदयं पूजयामि॥ स्थूलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि॥ स्कन्दाग्रजाय नमः स्कन्धौ पूजयामि॥ पाश हस्ताय नमः हस्तौपूजयामि॥ गजवक्राय नमः वक्रं पूजयामि॥ विघ्नहर्त्रे नमः ललाटं पूजयामि॥ सर्वेश्वराय नमः॥ शिरः पूजयामि॥ गणाधिपाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि॥

धूप :-

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किम्बाहु किमूरूपादा उच्येते॥
दशाङ्ग गुग्गलं धूपमुत्तमं गणनायक।
गृहाण देव देवश उमासुत नमोस्तु ते॥
विकटायनमः धूपं आघ्रापयामि॥

दीप :-

ब्राह्मणोस्यमुखमासीत् बाहु राजन्यः कृतः।
उरु तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां ँ शूद्रोअजायत॥
सर्वज्ञ सर्वरत्नाकरं सर्वेश विवुध प्रिय।

गृहाण मङ्गलं दीपं घृतवर्ति समन्वितम्।।
वामनाय नमः दीपं दर्शयामि।।

नैवेद्य :-

चन्द्रमा मनसो जातश्तचक्षोः सूर्यो अजायत्।
श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।
नैवेद्यं गृहतां देव नाना मोदक संयुतम्।
पक्वान फल संयुक्तं षठ्रसैश्च समन्वितम्।।
सर्व देवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि।।

जल :-

कृष्णावेण्या गौतमीनां पयोष्णीनर्मदा जलैः।
आचम्यतां विघ्नराज प्रसन्नो भव सर्वदा।।
विघ्ननाशिने नमः जलंसमर्पयामि।।

ऋतुफल :-

फलान्यमृतकल्पानि सुगन्धिन्यघनाशन।
आनितानि यथाशक्त्या गृहाण गणनायक।।
संकटनाशिने नमः ऋतुफलं समर्पयामि।।

पूंगीफल नैवेद्य :-

नाभ्याआसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां २ अकल्पयन्।।
ताम्बूलं गृहतां देव नागवल्ली दलैर्युतम्।
कर्पूरेण समायुक्तं सुगन्धं मुख भूषणम्।।
विघ्नहर्त्रे नमः पूंगीफलं नैवेद्यं समर्पयामि।।

दक्षिणा :-

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवाः यद्यज्ञं तन्वाना अवध्नन् पुरुषं पशुम्।।

सर्वदेवादि देव त्त्वं सर्व सिद्धि प्रदायक।
भक्त्या दत्तां मया देव गृहाण दक्षिणां विभो।।
सर्वेश्वराय नमः दक्षिणां समर्पयामि।।

नीराजन :-

पंचवर्ति समायुक्तं वह्निना योजितं मया।
गृहाणं मङ्गलं दीपं विघ्नराज नमोस्तुते।।
सिद्धिदाय नमः नीराजनं समर्पयामि।।

प्रदक्षिणा :-

यानिकानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानितानि प्रणश्यान्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।
हर सूनवे नमः प्रदाक्षिणां त्रयं समर्पयामि।।

नमस्कार :-

नमोस्तु देव देवेश भक्तानां अभय प्रदः।
विघ्नानां नाशकर्त्रै च हरात्मज नमोस्तु ते।।

मंत्र पुष्पांजलि :-

यज्ञेन मामयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्य सन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
विद्याधराय नमः मंत्र पुष्पांजलि समर्पयामि।।

सायंकाल चन्द्रमा के उदय होने पर चन्द्रमा का पूजन अर्घ्यादि से करना चाहिए।

अर्घ्य :-

क्षीरोदार्णव संभूत सुधारूप निशाकर।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या सहितः शशिन्।।
रोहिणी सहित चन्द्राय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।।

चन्द्रमा का पूजन गन्धाक्षत आदि से कर प्रार्थना करें।

प्रार्थना :-

गगनांगण संदीप क्षीराब्धिमथनोद्भव।
भा भासितादिगाभोग सोमराजनमोस्तु ते॥

चन्द्रमा का पूजन कर चतुर्थी का कार्य पूर्ण कर पंचमी प्रातः स्नानादि करके गणेशादि देवताओं का पूजन कर अग्नि स्थापना कर गणानां त्वा० मंत्र से 108 बार आहुति दें पूर्णाहुति कर 21 ब्राह्मणों को वस्त्र तथा गोदान प्रतिमा दान भोजन लड्डू से प्रसन्न कर आशीर्वाद ग्रहण करें।

ब्राह्मणों से प्रार्थना :-

विप्रवर्यनमस्तुभ्यं मोदकान वैददामिते।
आपदुद्धारणार्थाय गृहाण द्विज सत्तम्॥

गणेश विसर्जन प्रार्थना :-

गणेश्वर गणाध्यक्ष गौरी पुत्र गजानन।
व्रतं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादादादि भानन॥

॥ इति संकट चतुर्थी व्रतोद्यापनम् ॥

॥ संकटनाशन गणेश स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः। नारद उवाच।
प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्त्या वासं स्मरते नित्य आयु कामार्थ सिद्धये॥१॥
प्रथमं वक्रतुंडंच एकदंत द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्ण पिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्॥२॥
लंबोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्न राजेन्द्रं धूम्रवर्ण तथाष्टमम्॥३॥

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं च द्वादशं तु गजाननम्।।४।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं य पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकर प्रभो।।५।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्।।६।।
जपेदगणपतिस्त्रोत्रं षडभिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः।।७।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।। ८।।
।। इति श्री नारदपुराणे संकष्टनाशनं नाम गणेशस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

।। करक चतुर्थी व्रत ।।

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष चतुर्थी को यह व्रत किया जाता है, दक्षिण देश में आश्विन मास कृष्ण चतुर्थी को होने वाले व्रत को करक चतुर्थी कहते हैं। इस व्रत को करने का अधिकार केवल स्त्रियों को ही है क्योंकि यह व्रत भारतीय नारी की महानता को दर्शाता है। सौभाग्यवती स्त्रियां अपने पति की कुशलता के लिए इस व्रत को रखती हैं। यह व्रत चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी में किया जाता है। इस व्रत को धारण करने के बाद सौभाग्यवती बने रहने तक इस व्रत का पालन स्त्रियां करती रहती हैं। उद्यापन करने के बाद भी इस व्रत को किया जाता है। इस व्रत को करने से अचल सौभाग्य, पुत्र, पौत्र तथा निश्चल सम्पति की प्राप्ति होती है। करक चतुर्थी के दिन वट वृक्ष बनाकर शिव गणपति कार्तिक सहित गौरी लिखकर पूजन किया जाता है तथा सायं काल को चन्द्रमा को अर्घ्य देकर पूजन किया जाता है। करवा चौथ व्रत के दिन निर्जल व्रत किया जाता है।

।। करक चतुर्थी व्रतोद्यापनम् ।।

अद्यैत्यादि मम सौभाग्य पुत्र पौत्रादिसुस्थिर श्रीप्राप्तये करक चतुर्थी व्रतं करिष्ये।

गौरी पूजन मंत्र :-

ॐ नमः शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं सन्ततिशुभम्।
प्रयच्छ भक्ति युक्तानां नारीणां हर बल्लभे।।

शिव गणपति और कार्तिक का पूजन भी पंचोपकार अथवा शोडषोपचार से पूजन कर लें।

पकवान एवं अक्षत युक्त करको को ब्राह्मणों को देवें। पूजनोपरान्त पिष्टक नैवेद्य आदि सबको बांटना चाहिए।

करक दान मंत्र :-

करकं क्षीर सम्पूर्णं तोयपूर्णमयापि वा।
ददामि रत्न संयुक्तं चिरंजीवतु मे पति।।

करवे बदलना :-

इस व्रत में करवे सुहागिन स्त्रियों को ही देना चाहिए और सुहागिन स्त्रियों से ही लेना चाहिए।

करक बदलने का मंत्र :-

पात्रं गृहाण सौभाग्ये चतुर्थ्यां कार्तिकस्य वैं।
पत्युरायुस्करं तत्तु सदा सौभाग्य वर्द्धनम्।।
करकं गृहाण कामाढ्यं सर्वकाम प्रदं शुभम्।
काम संकल्प सिध्यर्थं करकं प्रतिगृह्यताम्।।

।। चन्द्र पूजन ।।

आवाहन :-

दधिशंखतुषराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
ज्योत्सानापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्।।

ॐ इमं देवा असपत्न ꣳ सुवध्वं हमते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रसेन्द्रियाय।। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी। राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां ꣳ राजा।।

चन्द्र का आवाहन कर अर्घ्य देवें।।

अर्घ्यदान मंत्र :-

वसन्त वान्धव विभो शीतांशो स्वस्ति न कुरु। गगनार्णव माणिक्य चन्द्र दाक्षायणीयते।।

चन्द्र का पूजन दधि-श्वेत वस्त्र गन्ध श्वेत अक्षत, श्वेत पुष्प, धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा ऋतुफल से पूजन करें।

प्रार्थना :-

दधि शंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्। नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम्।।

।। इति करक चतुर्थी व्रत ।।

।। भीष्म पंचक व्रत ।।

भीष्म पंचक व्रत पंच दिवसात्मक कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक पांच दिवसीय व्रत है। शास्त्रों के अनुसार यदि एकादशी और पूर्णिमा के मध्य कोई तिथि क्षय हो तो दशमी विद्धा एकादशी से प्रारम्भ कर पूर्णिमा को पूरा करने का विधान है। भगवान वासुदेव से इस व्रत को भीष्म ने पाया इस कारण इस व्रत को भीष्म पंचक व्रत कहते हैं। एकादशी प्रातः स्नान से निबृत होकर पंचगव्य से शरीर को पवित्र करें और जाने हुए पापों का उच्चारण करें। विष्णु भगवान की स्वर्ण प्रतिमा का पूजन करें पूर्णिमा में व्रत समाप्त कर उद्यापन करना चाहिए। मनुष्य इस व्रत के प्रभाव से पूर्वजन्म वर्तमान जन्म ओर आगे होने वाले जन्म इन तीनों जन्मों के पापों से छूट जाता है।

पूर्व जन्माजितैः पापैरिह जन्मार्जितैरपि।
आगामिजैश्चपापैस्तु मुच्यते नात्र संशय॥

॥ भीष्म पंचक व्रतोद्यापनम् ॥

अद्येत्यादि मम आत्मनः अखिल पाप क्षय पूर्वकं धर्मार्थकाम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं आचरित भीष्म पंचक व्रतोद्यापनं करिष्ये।

गणेशादि देवताओं का पूजन कर सुवर्ण रचित विष्णु भगवान की प्रतिमा का पूजन सर्वतो मण्डल देवताओं के पूजनोपरान्त करें इस दिन प्रबोधिनी एकादशी भी होती है। विष्णु पूजन से पूर्व विष्णु भगवान को क्षीर सागर शयन से उठाने के लिए निम्न मंत्र बोलें-

उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविन्द उतिष्ठ गरुडध्वज।
उतिष्ठ कमला कान्त त्रैलोक्य मङ्गलंकुरु॥

भगवान विष्णु को शयन से उठाकर पूजन प्रारम्भ करें- सर्वतो भद्र के ऊपर पांच कलश तिथियों के नाम से रख पूजन करें। प्रातः उठकर स्नानादि से निवृत होकर भगवान विष्णु का पुनः पूजन कर भगवान विष्णु के सहस्त्र नाम से हवन कर आचार्य का पूजन कर प्रतिमा तथा गोदान करना चाहिए।

॥ इति भीष्म पंचक व्रतोद्यापन ॥

।। वैकुण्ठ चतुर्दशी ।।

कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को यह व्रत होता है। इसे अरुणोदय व्यापिनी लेना चाहिए अथवा जिस अहोरात्र का अरुणोदय चतुर्दशी से युक्त हो उसें उपवास करना। इस व्रत में चतुर्दशी को शिव की पूजा होती है। लिंगतो भद्र के ऊपर ताम्र कलश रख उसके ऊपर स्वर्ण की विश्वेश्वर गौरी की प्रतिमा चान्दी का वृष बनाकर हजार कमल से पूजा करना। भगवान विष्णु भी बैकुण्ठ से इस चतुर्दशी के दिन कृतयुग में वाराणसी आकर एक हजार कमलों से शिव की पूजा करने लगे। एक कमल भगवान शिव ने विष्णु की परीक्षा लेने हेतु कम कर दिया तो भगवान विष्णु ने अपना एक नेत्र ही शिव को चढ़ा दिया। शिव प्रसन्न हो गए अतः दिन में शिव पूजन तथा रात्रि को भगवान विष्णु के चरित्रों का गायन करना–

रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीत वाद्यादि मंगलैः।
नराणां जागरे विष्णोर्गीतं नृत्यं च कुर्वताम्।।
गो सहस्त्र च ददतां फलं समुदाहृतम।।

पौर्णमासी को इस व्रत का उद्यापन किया जाता है। इस व्रत के प्रभाव से समस्त पाप क्षय होते हैं।

।। बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रतोद्यापनम् ।।

अद्यैत्यादि ० मम समस्त पाप क्षय पूर्वक शिवपद प्राप्तिकामनया आचरित बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रतोद्यापनं करिष्ये।

लिंगतो भद्र के ऊपर ताम्र कलश रख शिव प्रतिमा का रुद्र सूक्त से अथवा पुरुष सूक्त से परिवार सहित पूजन करते हुए शिव सहस्रनामावली से हजार कमलों द्वारा शिवार्चन करें!

अन्य पूजन शिवरात्री व्रत के समान जानना।

शिव पूजन, रात्री जगारण, दूसरे दिन व्रतोद्यापन हेतु पुनः आवाहित देवताओं का शिव परिवार सहित पूजा हवन आदि कार्य करने चाहिए।

प्रार्थना :-

कर चरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,
श्रवण नयनजं वा मानसंवाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जयजयकरुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो॥

॥ इति बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रतोद्यापनम् ॥

॥ कार्तिक व्रत ॥

भगवान दामोदर तथा लक्ष्मी जी की प्रसन्नता के लिए कार्तिक मास का व्रत किया जाता है। कुरुक्षेत्र गंगा प्रयागादि में कार्तिक स्नान का शास्त्रों में विशेष फल कहा गया है। यह व्रत आश्विन शुक्ल पूर्णिमा से एक मास पर्यन्त कार्तिक पूर्णिमा तक किया जाता है। इस व्रत को करने से प्राणी सब पापों से मुक्त हो जाता है-

कार्तिकं सकलं मासं नित्यस्नायी जितेन्द्रियः।
जपन्हविष्यभुक् शान्तः सर्वपापै प्रमुच्यते॥

प्रातः काल भागीरथी (गंगा) विष्णु शिव और सूर्य का स्मरण करता हुआ व्रती नाभि मात्र जल में रहकर स्नान करें।

कार्तिक मास व्रत में लक्ष तुलसी दल से विष्णु पूजन, तुलसी मंजरी से विष्णु व शिव का पूजन, तुलसी वृक्ष लगाना पालन स्पर्श, तुलसी छाया में पितृ तर्पण, अनेक प्रकार धात्री वृक्ष के नीचे विष्णु पूजन पुराण श्रवण वट वृक्ष पूजन सूर्यास्त के समय अष्टदल (दीपयंत्र) के ऊपर नौ दीप दान पाप क्षयार्थ लक्ष्मी प्राप्ति, पुत्र प्राप्ति आदि के लिए किये जाते हैं।

मास व्रत करने वालों को मास पर्यन्त सलगम लहसुन हींग छत्राक गाजर मूली तुम्बी सहजना वैंगन पैठा कटैहर, तरबूज केश तेल लवण शाक वासी अन्न जला हुआ द्विदल तथा सप्तमी के दिन आंवला तिल अष्टमी को नारियल वर्ज्य दे

रविवार को सब काल में आंवला खाना वर्जित है। ऐसा शास्त्रों का आदेश है।

कार्तिक मास में कांसी के बर्तन में भोजन मधु तैल फल धान्य आदि का जो त्याग करे तो व्रतोध्यापन में उसका दान अवश्य ही करना चाहिए परन्तु कांसी बर्तन में भोजन त्याग अवश्य ही करना चाहिए और उद्यापन के दिन कांसी बर्तन में घी का दान अवश्य करना चाहिए।

कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को उद्यापन हेतु सर्वतो भद्र की स्थापना कर लक्ष्मी सहित दामोदर भगवान को स्थापित कर पुरुष सूक्त से पूजन करना पत्नी सहित तीन ब्राह्मणों का पूजन करना चाहिए चतुर्दशी रात्रि जागरण करने का विधान भी है तथा पूर्णिमा प्रातः व्रतोद्यापन करना चाहिए।

॥ कार्तिक व्रतोद्यापनम् ॥

संकल्प :-

अद्यैत्यादि० मम समस्त पाप क्षय पूर्वकं धर्मार्थ काम मोक्ष सिद्धि द्वारा श्री दामोदर प्रीतये कार्तिक व्रतोद्यापनं करिष्ये।

गणपत्यादि देवताओं का पूजन कर भद्र मण्डल देवताओं का पूजन तथा भगवान दामोदर का पूजन करें।

ध्यान :-

नारायणाय शतचन्द्रनिभाननाय,
नारायणाय मणिकुण्डल धारणाय।
नारायणाय निजभक्त परायणाय,
नारायणाय सुभगाय नमो नमस्ते॥

आवाहनं :-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढ मस्य पा ँ सुरे स्वाहा॥

आसन :-

नित्ये नैमित्तिके कृष्ण कार्तिके पापनाशने।
गृहाणार्घ्यं ममा दत्तं राधया सहितो हरे।।

विष्णु भगवान का पूजन पुरुष सूक्त से कर रात्रि जागरण भजन भगवान विष्णु के स्तोत्र पाठ द्वादशाक्षर ॐ नमो भगवते वासु देवाय का जाप कथा श्रवण कर पूर्णिमा प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पुनः आवाहित देवताओं का पूजन करें। अग्नि स्थापन कर आवाहित देवताओं को आहुति प्रदान करें:-

ॐ अते देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे।
पृथिव्या सप्तधामभिः इदं विष्णावे।।
ॐ दइं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पद्म।
समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा।। इदं विष्णावे।।

उपरोक्त दोनों मंत्रों से तिल आज्य पायस द्वारा अष्टोत्तर शत हवन कर अन्य आवाहित देवताओं को आहुति प्रदान कर यज्ञ कार्य पूर्ण करें। सपत्नीक इक्कीस या तीन ब्राह्मणों को वस्त्र आदि देवें। प्रार्थना करें :-

युस्मत् प्रसादात् देवेश प्रसन्नो मम सर्वदा।
व्रतादस्माच्च यत्पापं सप्त जन्म कृतं मया।
तत्सर्वं नाशमायातु स्थिरा मे चास्तु संततिः।
मनोरथाश्च सफलाः सन्तु नित्यं तवार्चनात्।।
देहान्ते वैष्णवं स्थानं प्राप्नुयामति दुर्लभम्।।

प्रार्थना कर देवताओं का विसर्जन कर प्रतिमा सोपस्कर शय्या आचार्य को दे ब्राह्मणों को भोजन करा आशीर्वाद ग्रहण करें

।। इति कार्तिक व्रतोद्यापनम् ।।

।। एकादशी व्रत ।।

एकादशी व्रत के दो भेद काम्य और नित्य है रोग दोषानिवृत्ति धनपुत्रादि प्राप्ति हेतु काम्य तथा निष्काम व्रत को नित्य कहते हैं।

व्रत के दो अधिकारी हैं वैष्णव और स्मार्त। ग्रन्थों में कहा गया है कि जिनको वैष्णवी दीक्षा प्राप्त हो वैष्णव उनसे भिन्न स्मार्त होते हैं। एकादशी भी दो प्रकार शुद्धा और विद्धा होती है। त्रयोदशी के दिन यदि द्वादशी न हो तो एकादशी चाहे दशमी विद्धा भी हो तो उस दिन ही एकादशी व्रत करना चाहिए। वेध जो दो प्रकार का है अरुणो दय और सूर्योदय। अरुणोदय वेध वैष्णवों को नहीं लेना चाहिए। स्मार्त ले सकते हैं अरुणोदय प्रातःकाल चार घड़ी का होता है।

रात्रि के चौथे पहर 55 घड़ी पर उषाकाल 57 पर अरुणोदय 58 पर प्रातःकाल तथा शेष पर सूर्योदय होता है। एकादशी व्रत करने का अधिकार आठ वर्ष से अधिक अस्सी वर्ष आयु तक है सामर्थ्य हो तो इस आयु के बाद भी एकादशी व्रत कर सकते हैं। सधवा स्त्रियों को पति की आज्ञा लेकर व्रत करने का अधिकार है। एकादशी व्रत चैत्र वैशाख ज्येष्ठ मार्गशीर्ष से प्रारम्भ या उद्यापन करें ध्यान रहे कि इस समय मलमास गुरु शुक्र अस्त न हों यदि व्रती असक्त हो तो गुरु ब्राह्मण की आज्ञा से दूध, फल, जल, हविष्य औषध का सेवन कर सकता है। व्रत में ताम्बूल, उड़द, मसूर चना शाक, सब्जी तेल तथा अन्न का त्याग करें।

।। एकादशी व्रतोद्यापनम् ।।

पंचांग देवताओं का पूजन कर स्वर्ण प्रतिमा पर विष्णु पूजन तथा २६ कलशों में एकादशी तथा उनके देवताओं कापूजन करना चाहिएं एकादशी सांय काल रात्रि जागरण विध ान भी बताया गया है। द्वादशी को पुनः सब देवताओं का पूजन कर हवनादि कार्य पूर्ण करने चाहिए।

संकल्प :-

अद्यैत्यादि० मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कृत कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक समस्त पाप क्षय पूर्वकं ध र्मार्थ-काम-मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं मया आचरित शुक्ल कृष्ण-एकादशी व्रतं तस्य सांगता सिद्धयर्थं तत्संपूर्ण फलावाप्तये श्री विष्णोः प्रीत्यर्थं शुक्ल कृष्ण एकादशी व्रतोद्यापनं महं करिष्ये।।

भगवान लक्ष्मी नारायण का पूजन पुरुष सूक्त से कर भद्र मण्डल देवताओं का पूजन करें-

अष्टदल में निम्न देवताओं का पूजन पूर्वादि क्रम से आवाहन करे :-

ॐ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ प्रजापतये नमः प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ विश्वेभ्यो देवभ्यो नमः विश्वान् देवान् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मणामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ वासुदेवाय नमः वासुदेवमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ श्री रामाय नमः श्रीराममावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ श्रिये नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

पूर्वादिक्रम से :-
ॐ रुक्मिणे नमः रुक्मिणी मावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ सत्य भामायै नमः सत्यभामामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ जाम्बवत्यै नमः जाम्बवतीमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ मित्रविन्दायै नमः मित्रविन्दामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
आग्नेय कोण से :-
ॐ शंखपालाय नमः शंखपालमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ चक्राय नमः चक्रमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ गदायै नमः गदामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
पूर्वादि अष्टपत्रों से :-
ॐ विमलायै नमः विमलामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ उत्कर्षिणे नमः उत्कर्षिणीमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ ज्ञानाय नमः ज्ञानमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ क्रियायै नमः क्रियामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ योगायै नमः योगामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ प्रह्वावै नमः प्रह्वामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ सत्त्यायै नमः सत्त्यमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ ईशानायै नमः ईशानामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
मध्य :-
ॐ सामध्वनि शरीरस्त्वं वाहनं परमेष्ठिनः।
विषपापहरो नित्यमतः शान्ति प्रयच्छ मे।।
ॐ गरुडाय नमः गरुडमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
अष्टदल के बाहर पूर्वादि क्रम में :-
ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

ॐ अग्नेय नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ निर्ऋतये नमः निऋतिमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ वरुणाय नमः वरुणामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

पूर्वादिक क्रम से :-

ॐ केशवाय नमः केशवमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ नारायणाय नमः नारायणमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ माधवाय नमः माधवमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ गोविन्दाय नमः गोविन्दमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ मधुसूद्नाय नमः मुधसूदनमावाहयामि स्थापियामि पूजयामि।।
ॐ त्रिविक्रमाय नमः त्रिविक्रममावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ वामनाय नमः वामनमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ श्रीधराय नमः श्रीधरमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ हृषिकेशाय नमः हृषिकेशमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ वद्मनाभाय नमः पद्मनाभायमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ दामोदराय नमः दामोदरमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

पुनः पूर्णादि क्रम से :-

ॐ संकर्षणाय नमः संकर्षणमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ वासुद्देवाय नमः वासुदेवामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

ॐ प्रद्युम्नाय नमः प्रद्युम्नायमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ अनिरुद्धाय नमः अनिरुद्धमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ पुरुषोत्तमाय नमः पुरुषोत्तममावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ अधोक्षजाय नमः अधोक्षजमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ नारसिंहाय नमः नारसिंहमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ अच्युताय नमः अच्युतमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ जनार्दनाय नमः जनार्दनमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ उपेन्द्राय नमः उपेन्द्रमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ हरये नमः हरिमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शयोर स्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्। अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे वृहते सादनाय।।

सब देवताओं की प्रतिष्ठा कर रुक्मणि सहित विष्णु पूजन गंधाक्षत पुष्प से पूजन करें।

अंग पूजा :-

ॐ दामोदराय नमः पादौपूजयामि। माधवाय नमः जानुनि पूजयामि।
ॐ पद्मनाभाय नमः नाभिं पूजयामि। ॐ विश्वमूर्तये नमः उदरं पूजयामि।
ॐ ज्ञानगम्याय नमः हृदयं पूजयामि श्रीकण्ठ संगिने नमः कण्ठं पूजयामि।
ॐ सहस्त्र वाहवे नमः वाहुं पूजयामि। योगयोगिन्यैनमः चक्षुर्षी पूजयामि।
ॐ उरुगाय नमः ललाटं पूजयामिं नाक सुरेश्वराय नमः ना सां पूजयामि।
ॐ श्रवणेशाय नमः श्रवणौ पूजयामि। सर्वकामहयाय नमः शिखां पूजयामि।
ॐ सहस्त्रशीर्षाय नमः शिरः पूजयामि। सर्वरूपिणे नमः सर्वांग पूजयामि।

सब देवताओं का पूजन धूप दीपक नैवेद्य दक्षिणा से देवें।

छब्बीस एकादशीयों का पूजन :-

ॐ उत्पन्नायै नमः। ॐ मोक्षदायै नमः। ॐ सफलायै नमः।

ॐ पुत्राप्त्यै नमः। ॐ षट्तिलायै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ आमलक्ये नमः। ॐ पापमोच्यै नमः। ॐ कामदायै नमः। ॐ वरुथिने नमः। ॐ मोहिन्यै नमः। ॐ अपरायै नमः। ॐ निर्जलायै नमः। ॐ योगिन्यै नमः। ॐ देव शयन्यै नमः। ॐ कामदायै नमः। ॐ पुत्रदायै नमः। ॐ अजायै नमः ॐ परिवर्तिन्यै नमः। ॐ इन्दिरायै नमः। ॐ पाशांकुशायै नमः। ॐ रमायै नमः। ॐ देवोत्थायिन्यै नमः। ॐ पद्मिन्यै नमः। ॐ परमायै नमः॥

छब्बीस एकादशीयों का पूजन गन्धाक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य फल दक्षिणां से कर ताम्र पात्र में जल नारियल अक्षत पुष्प तुलसी पत्र दूर्वा चन्दन पूंगीफल हिरण्यादि रख घुटनों को जमीन पर रख निम्न मंत्र से व्रत की सम्पूर्ति हेतु अर्घ्य देवें :-

ॐ नारायण जगन्नाथ लक्ष्मीकान्त दयानिधे।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं व्रतसम्पूर्ति हेतवे॥

एकादशी के दिन उपरोक्त प्रकार से पूजनोपरांत रात्रि जागरण शास्त्र कथा भजन पाप नाश के लिए अवश्य करें। एकादशी के दिन मन्दिर में जागरण हेतु जो जाता है उसे पद पद पर अश्वमेघ यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है।

यावत्पदानि स्वगृहात् केशवायतनं प्रति।
अश्वमेध समानि स्युर्जागरार्थं प्रयच्छतः॥

द्वादशी प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पुनः सब आवाहित देवताओं का पूजन कर हवन का कार्य प्रारम्भ करे। अग्नि प्रतिष्ठापन कर सूर्यादि ग्रह देवताओं का हवन कर पायस से निम्न हवन करें-

ॐ केशवाय स्वाहा। ॐ नारायणाय स्वाहा। ॐ माधवाय स्वाहा। ॐ गोविन्दाय स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ मधुसूदनाय स्वाह। ॐ त्रिविक्रमाय स्वाहा। ॐ वामनाय

स्वाहा। ॐ श्रीधराय स्वाहा। ॐ हृषिकेशाय स्वाहा। ॐ पद्मनाभाय स्वाहा। ॐ दामोदराय स्वाहा। ॐ संकर्षणाय स्वाहा। ॐ वासु देवाय स्वाहा। ॐ प्रद्युम्नाय स्वाहा। ॐ अनिरुद्धाय स्वाहा। ॐ पुरुषोत्तमांय स्वाहा। ॐ अधोक्षजाय स्वाहा। ॐ नारसिंहाय स्वाहा। ॐ अच्युताय स्वाहा। ॐ जर्नादनाय स्वाहा। ॐ उपेन्द्राय स्वाहा। ॐ हरये स्वाहा। ॐ श्री कृष्णाय स्वाहा।

पुनः निम्न मंत्र द्वारा पायस से 108 आहुति देवें -

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्। समूढ मस्य या ॐ सुरे स्वाहा।

पुरुष सूक्त से हवन कर आवाहित भद्र मण्डल देवताओं की भी पूजा क्रमानुसार आहुति प्रदान करें। उत्तर पूजन कर पूर्णाहुति पर्यन्त हवन कार्य पूर्ण कर व्रत उद्यापन हेतु सवत्सा गोदान भूमि शय्या वस्त्र भोजन अलंकार आचार्य को देवें।

प्रार्थना :-

मयाद्यास्मिन् व्रते देव यद् पूर्ण कृत विभो।
सर्व भवतु सम्पूर्ण त्वत्प्रसादाऽजनार्दन॥
त्वयि भक्ति सदैवास्तु मम दामोदर प्रभो।
पुण्य बुद्धिः सतां सेवा सर्व धर्म फलंच मे॥
जपच्छिद्रं तपश्च्छिद्रं यच्छिद्रं व्रतकर्मणि।
सर्व सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाद्रमापते॥

विष्णु प्रतिमा को आचार्य को देकर छब्बीस कलश छब्बीस ब्राह्मणों को दें सब लोगों को भोजन से सन्तुष्ट करें।

आचार्य देवताओं का विसर्जन कर व्रती को आशीर्वाद देवे।

॥ इति एकादशी व्रतोद्यापनम् ॥

।। शिवरात्रि व्रत ।।

फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष अर्द्धरात्रि व्यापिनी चतुर्दशी को शिवरात्रि व्रत किया जाता है। यदि पहले दिन अर्द्धरात्रि व्यापिनी चतुर्दशी हो तो पहली लेनी दूसरे दिन अर्द्धव्यापिनी हो तो दूसरे दिन ही व्रत करना यदि दोनों दिन अर्द्धरात्रि व्यापिनी न हो तो पहले दिन ही व्रत करना चाहिए। व्रती स्नान कर रुद्राक्ष भस्म धारण करें। लिंगतो भद्र का निर्माण करे शिव की स्वर्ण प्रतिमा का पूजन इस व्रत में किया जाता है या शिव मन्दिर में ही व्रत जागरण और उद्यापन का कार्य किया जा सकता है। व्रत में चौदह कलशों का भी पूजन किया जाता है। शिव का पूजन शिवरात्रि को चार पहर पूजन विधान अर्घ्य दान शास्त्रों में बताया गया है। शिवरात्रि के व्रत प्रभाव से अर्थ धर्म काम मोक्ष की प्राप्ति होती है। लिंग विशेषता से फल विशेष की प्राप्ति होती है। लिंग और पूजन फल निम्न प्रकार है। हीरा अवस्था, मोती रोगनाश, वैडूर्यमणि शत्रुनाश पद्मराग लक्ष्मी, पुष्कराग सुख, इन्द्रनील यश, मरकतमणि पुष्टि, स्फटिक कार्य सिद्धि, चांदी पितरों की मुक्ति, सुवर्ण सत्यलोक की प्राप्ति, ताम्र पुष्टि व अवस्था वृद्धि, पीतल से पुष्टि कांसे से कीर्ति लोहे से शत्रुनाश, शीशे से अवस्था की प्राप्ति आदि शास्त्रों ने शिव लिंग पूजन से फल की प्राप्ति बताई है।

।। शिवरात्रि व्रतोद्यापनम् ।।

लिंगतो भद्र में द्वादश लिंगों के ऊपर द्वादश कलश स्थापित कर देवें, दो कलश, उत्तर और दक्षिण में रख देवें मध्य में ताम्र कलश के ऊपर सोने की उमा महेश्वर की प्रतिमा के आगे रजत वृषभ की प्रतिमा को स्थापित करें। पंचांग देवताओं को पूजन करके लिंगतो भद्र का पूजन संकल्प के बाद करें।

संकल्प :-

देश कालौ संकीर्त्य मम आत्मनः सर्व पाप क्षय पूर्वकं धर्मार्थ काममोक्ष चतुर्विधफल सिद्धि द्वारा श्री भवानिं शंकरप्रीतये आचरित शिवरात्री प्रतोद्यापनं करिष्ये॥ लिंगतों भद्र में कलश पूजन-

मध्ये :-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः। शिवाय च शिव तराय च॥ पूर्वादि लिंग पूजन- ॐ अजैक पदे नमः। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः। ॐ भवाय नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ उमापतये नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ पशुपतये नमः। ॐ शंभवे नमः। ॐ वरदाय नमः। ॐ शिवाय नमः। ॐ ईश्वराय नमः। ॐ महादेवाय नमः। ॐ हराय नमः। ॐ भीमाय नमः।

पुनः पूर्वादि से- **ॐ नन्दी महाकालाभ्यां नमः ॐ दक्षिणे शृंगिभृंगिभ्यां नमः। ॐ पश्चिमे वृष स्कन्दाभ्यां नमः। ॐ उत्तरे देश कालाभ्यां नमः। ॐ पार्श्वे गंगायमुना भ्यां नमः॥**

॥ शिव पूजन ॥

पुष्प लेकर भगवान शंकर का ध्यान करें-

ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणेर्व्याघ्र कृतिं वसानं।
विश्वाद्यं विश्वबन्द्यं निखिल भयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

भगवान शिव को पुष्प अर्पण कर आवाहन के लिए पुनः पुष्प अर्पण करें :-

आवाहन् :-

एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशांक मौले वृषभाधिरूढ।
देवादिदेवेश महेश नित्यं गृहाणं पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ नमः शंभवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय न नमः शिवाय च शिवतराय च।।

आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर्देवासुरादिभिः।
आवाहयामि भक्त्या त्वां गृहाण परमेश्वर।।

पुष्प अर्पण कर पुनः आसन के लिए पुष्प चढ़ायें :-

आसन :-

ॐ याते रुद्र शिवातनूर घोरा पापकाशिनी।
तयानस्तन्वासन्त मया गिरि शन्ता भि चाकशीहि।।
रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभं।
आसनं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वर।।

पुष्प अर्पण कर भगवान शंकर को पैर धोने के लिए जल चढ़ायें।

पाद्य :-

ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे शिवां। गिरित्र तां कुरुमा हि ॐ सीः पुरुषं जगत्।।

शीतोदक निर्मलं च सर्वसौगन्ध संयुतं।
पादप्रक्षालनार्थाय अर्पयामि सुरेश्वर।।

भगवान शंकर के पैर धोकर हाथ धोने के लिए अर्घ्य दें:-

अर्घ्यः-

ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ॐ सुमनाऽअसत्।।
अर्घ्य गृहाण देवेश गन्ध पुष्पाक्षतैर्युतः।
हस्तप्रक्षालनार्थाय गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते।।

अर्घ्य देकर आचमन अर्पण करें :-

आचमनः-

ॐ अद्य वोच दधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्तसर्वांश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुवः॥

सर्वतीर्थ समायुक्तं गंगायांनिर्मलं जलम्।
आचम्यतां मयादत्तं गृहाण परमेश्वर॥

आचमन जल चढ़ाकर स्नान के लिए जल छोडें-

स्नानः-

ॐ असौयस्ताम्रोऽअरुणऽउत वभ्रुः सुमंगलः। ये चैनꣳ रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषाꣳहेडऽईमहे॥

गंगासरस्वती कृष्णा पयोष्णि नर्मदा जलैः।
स्नापितोसि मया देव तथा शान्तिकुरुष्व मे॥

भगवान शंकर को जल से स्नान करा के गन्धोदक स्नान करायें :-

गन्धोदक स्नान :-

ॐ अ ꣳ शुनाते अ ꣳ सुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
मलयाचल संभूतं चन्दना गरु संयुतं।
चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गन्धमिश्रित जल से स्नान करवा के भगवान शंकर को दूध से स्नान करवायें :-

पयस्नान :-

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयो धाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥
कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परं।

पावनं देवहेतुश्च पयः स्नानार्थमयार्पितम्।
पय स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।
(शुद्ध जल से स्नान करायें)

दधिस्नान :-

ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णो रस्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ꣳ षि तारिषत॥
पयसस्तु समुद्भूत मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्॥
दधि स्नान कराके जल स्नान करायें।

घृतस्नान :-

ॐ घृतंमिमिक्षे घृतमस्ययोनिघृर्तेश्रितो घृतम्बस्यधाम।
अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥
नवनीत समुत्पन्नं सर्व सन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थ मयार्पितम्॥
घी से स्नान कराके जल से स्नान करायें।

मधु स्नान :-

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिव ꣳ रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्म्मधुमांऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ दिव्यः पुष्पैः समुद्भूतं सर्वगुण समन्वितम्। मधुरं पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्॥
मधु से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान करावें।

शर्करा स्नान :-

ॐ अपा ꣳ रस मुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम्। अपा ꣳ रसस्य यो रस स्तं वोगृह्णाम्म्युत्तममुपया-मगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्णामेष ते योनिरिन्द्राय त्वा

जुष्टतमम्।। इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारकम्। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शर्करा स्नान कर पुनः जल से स्नान करावें।

पंचामृत स्नान :-

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित्।।
पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
पंचामृतं मयाऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पंचामृत से स्नान करके पुनः शुद्ध जल से स्नान करावे-

शुद्धोदक स्नान :-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशु पतये कर्णायाम अवलिप्ता रौद्रा न भो रूपाः पार्ज्जन्याः।। नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्। गंगाजलं मयादत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

गन्धोदक स्नान :-

ॐ गन्ध द्वारा दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
मलयाचल संभूतं चन्दना गरु संभवम्।
चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पुनः जल से स्नान करें।

विजयास्नान :-

ॐ विज्यं धनुः कपर्द्दिनों विशल्योबाणवाँ2ऽ उत।
अन्नेशन्नस्य या ऽ इषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः।।
शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्य भाव समन्वितम्।
विजया च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

विजया स्नान कर पुनः जल स्नान करावें।

अभिषेक स्नान :-

शिवमहिम्न स्तोत्र अथवा रुद्रसूक्त (नमस्ते रुद्र०) के १-१६ मंत्र से शिवजी को जलधारा देवें।।

वस्त्र :-

ॐ युवासुवासाः परिवीत ऽ आगात्स ऽ उश्रेयान। भवति जायमानः। तं धीरासः कवय ऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।। सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारिणे। देह लंकरण वस्त्र मतः शान्ति प्रयच्छ मे।।

भगवान शिव को वस्त्र समर्पण कर जल छोड़ दें।

उपवस्त्र :-

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथ मासदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ꣳ संव्ययस्व विभावसो।।
शीतवातोष्ण संत्राण लज्जाया रक्षणं परम्।
मयोपपादिते तुभ्यं गृहेतां वाससी त्वया।।

उपवस्त्र अर्पण कर जल छोड़ दें।

यज्ञोपवीत :-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर।।

यज्ञोपवीत अर्पण कर जल छोड़ दें।

भस्म :-

ॐ प्रसद्य भष्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
सꣳसृज्यमातृमिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः।।
सर्वपाप हरं भष्म दिव्य ज्योतिसमप्रभम्।
सर्व क्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर।।

भस्म अर्पण कर दें।

चन्दन :-

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमोराजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्य सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवान शंकर को चन्दन अर्पण कर दें।

अक्षत :-

ॐ अक्षन्मीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न विष्ठया मती यो जाविन्द्रते हरी॥
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुंकुमाक्ताः शुशोभिताः।
मयानिवेदिताः भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

भगवान शिव को अक्षत अर्पण करें।

पुष्प :-

ॐ औषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मया हृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥

भगवान शिव को पुष्प माला अर्पण कर दें अथवा शिव सहस्त्रनाम से या शतनाम से भगवान शंकर को पुष्प अर्पण कर दें। (भगवान शिव को हजार पुष्प अर्पण करने मात्र से मनोकामना पूर्ण होती है मेरा पूर्ण अनुभव है)

॥ एकादश बिल्वपत्र ॥

ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरुथिने च नमः श्रुताय च श्रुत सेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्यायच॥
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्र च त्रिधायुधम।
त्रिजन्म पाप संहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥

दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोर पाप संहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
काशीवास निवासी च कालभैरवपूजनम्।
कोटिकन्यां महादानं विल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
अखण्डैर्विल्वपत्रेश्च पूजये शिव शंकरम्॥
प्रयागे माघ मासे च विल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
गृहाण बिल्व पत्राणि सुपुष्पाणि महेश्वर।
सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुम प्रियः॥
त्रिशाखैर्विल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलै शुभैः।
त्वां पूजयामि विश्वेश प्रसन्नोभव सर्वदा॥
श्रीवृक्षामृत संभूतं शंकरस्यसदा प्रियम्।
पवित्रं ते प्रयच्छामि विल्वपत्रं सुरेश्वर॥

भगवान शंकर को बिल्व पत्र गन्ध लगाकर अधोमुख चढ़ा देवें।

दूर्वा :-

ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥
दूर्वाङ् कुरान् सुहरितान् तथा च मंगल प्रदान्।
आनितांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर॥

भगवान शिव को दूर्वा अर्पण कर देवें।

परिमलद्रव्य :-

ॐ अहिरिवभोगेः पर्य्येति बाहुँ ज्यायां हेतिं परिबाधमानः। हस्तध्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परिपातु विश्वत॥ अबीरं च गुलालं च हरिद्रादि समन्वितम्। नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर॥

भगवान शिव को अबीर गुलाल हरिद्रादि द्रव्य अर्पण कर दें।

सुगन्धि द्रव्य :-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
दिव्यगन्ध समायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्ध द्रव्यमिदंभक्त्या दत्तं स्वीकुर शंकर॥

॥ आवरण पूजन ॥

ॐ ईशानाय नमः पादौपूजयामि ॥१॥
ॐ शंकराय नमः जंघे पूजयामि ॥२॥
ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि ॥३॥
ॐ शंभवे नमः कटिं पूजयामि ॥४॥
ॐ स्वयं भुवे नमः गुह्यं पूजयामि ॥५॥
ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि ॥६॥
ॐ विश्वकर्त्रै नमः उदरं पूजयामि ॥७॥
ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि ॥८॥
ॐ स्थाणवे नम स्तनौ पूजयामि ॥९॥
ॐ नीलकंठाय नमः कण्ठं पूजयामि ॥१०॥
ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि ॥११॥
ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रं पूजयामि ॥१२॥
ॐ नाग भूषणाय नमः शिरः पूजयामि ॥१३॥
ॐ देवाधि देवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥१४॥

अंग पूजन गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य दक्षिणा से कर दें।

॥ एकादश रुद्र पूजन ॥

ॐ अघोराय नमः॥१॥ ॐ पशुपतये नमः॥२॥
ॐ शर्वाय नमः॥३॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः॥४॥

ॐ विश्वरूपिणे नमः।।५।। ॐ त्र्यम्बकाय नमः।।६।।
ॐ कपर्दिने नमः।।७।। ॐ भैरवाय नमः।।८।।
ॐ शूलपाणये नमः।।९।। ॐ ईशानाय नमः।।१०।।
ॐ महेश्वराय नमः।।११।।

एकादश रुद्रों का पूजन गन्धक्षतादि से कर दें।

।। एकादश शक्ति पूजन ।।

ॐ उमायै नमः।।१।। ॐ शंकर प्रियायै नमः।।२।।
ॐ पार्वत्यै नमः ।।३।। ॐ गौर्ये नमः।।४।।
ॐ काल्यै नमः।।५।। ॐ कालिन्द्यै नमः।।६।।
ॐ कोटर्यै नमः।।७।। ॐ विश्वधारिण्यै नमः।।८।।
ॐ विश्वेश्वर्यै नमः।।९।। ॐ विश्वमात्रै नमः।।१०।।
ॐ शिवायै नमः।।११।।

एकादश शक्ति का पूजन गन्ध क्षतादि से कर दें।

।। दशगण पूजन ।।

ॐ गणपतये नमः।।१।। ॐ कार्तिकाय नमः।।२।।
ॐ पुष्पदन्ताय नमः।।३।। ॐ कपर्दिने नमः।।४।।
ॐ भैरवाय नमः।।५।। ॐ शूलपाणये नमः।।६।।
ॐ ईश्वराय नमः।।७।। ॐ दण्डपाणये नमः।।८।।
ॐ नन्दिने नमः।।९।। ॐ महाकालाय नमः।।१०।।

रुद्र गणों का गन्ध क्षतादि से पूजन कर दें।

।। अष्टमूर्ति पूजन ।।

ॐ भवाय क्षितिमूर्तयेनमः।१। ॐ शर्वाय जलमूर्तये नमः।२।
ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः।३। ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः।४।
ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः।।५।।
ॐ पशुतपये यजमानमूर्तये नमः।।६।।

ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः।।७।।
ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।।८।।

अष्टमूर्तियों का पूजन गन्ध क्षतादि से कर दें।

पुनः भगवान शिव का पूजन निम्न प्रकार से करें:-

धूप :-

ॐ याते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।।
वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेय सर्व्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

भगवान शिव को धूप दिखावें।

दीप :-

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्यः स्वाहा सूर्य्योव्वर्च्चोर्ज्ज्योति ज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्योज्ज्योतिः स्वाहा।। साज्यं च वर्त्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।

भगवान शिव को दीपक दिखा देवें।

नैवेद्य :-

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्प्रदातारं तारिष ऽ ऊर्ज्जं नो देहि द्विपदे चतुष्पदे।।
अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
भक्ष्यभोज्य समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

नैवेद्य में बिल्वपत्र छोड़कर ग्रास मुद्रा दिखावें :-

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। श्री

साम्बसदा शिवाय नमः मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशानं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थ जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्ते जलं समर्पयामि॥

नैवेद्य अर्पणकर जल छोड़ दें।

ताम्बूल :-

ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तु रण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः। श्येनस्येव घ्रजतो अङ्कसं परि दधिक्राब्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा॥ पूंगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्। एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ताम्बूल अर्पण करें।

ऋतुफल :-

ॐ याः फलिनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ꣳ हसः॥
फलेन फलितं देव त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णा सन्तु मनोरथाः॥

भगवान शिव को ऋतुफल अर्पण करें।

धतूरफल :-

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि।
समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥
धैर्यधीर परिक्षार्थ धारितं परमेष्ठिना।
धत्तुरं कण्टकाकीर्ण गृहाण परमेश्वर॥

धतूर फल को भगवान शिव को चढ़ावे।

दक्षिणा :-

ॐ यद्दत्तंयत्परादानं यत्पूर्तंयाश्चदक्षिणाः।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्द्देवेषु नो दधत्॥
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसो।
अनन्तं पुण्यफलदा मत्त शान्ति प्रयच्छ मे॥

विशेषार्घ्य :-

रक्षरक्ष महादेव रक्ष त्र्यैलोक्य रक्षक।
भक्तानां अभयं कर्त्ता त्राताभव भवार्णवात।।
वरदत्त्वं वर देही वांछितं वांछितार्थद।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोस्तु सदामम।।

प्रार्थना:-

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।१।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्षस्व परमेश्वर।।२।।
मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मयादेव परीपूर्ण तदस्तु मे।।३।।
यदक्षरपदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।४।।
अपराध सहस्राणि क्रियन्ते ऽहर्निशं मया।
दासोयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।।५।।
करचरण कृतं वा क्वायजं कर्मजं वा।
श्रवण नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।।
विहित मविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व।
जयजय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।६।।
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।७।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं ममदेव देव।।८।।
शान्तं पद्मासनस्थं शशिधर मुकुटं पंचवक्र त्रिनेत्रं।
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगे वहन्तम्।।
नागं पाशं च घंटा डमरुक सहितं चाङ्कुशं वाम भागे।
नानालंकारयुक्तं स्फटिक मणिनिभं पार्वतीशं नमामि।।९।।
ॐ शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः।।

।। इति शिव पूजनम् ।।

।। वैदिक आरती ।।

ज्वालामालिन्यै नमः।।

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ। अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्।।

(यजु० ७/२९)

ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदा ँ सि बृहती वितिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।

(यजु० ३४/३२)

ॐ इद ँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये आत्मसनि प्रजासनि पशुशनि लोकसन्यभवसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतो अस्मासु धत।।

(यजु० १९/४८)

कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरर्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

हवन-रुद्र सूक्त तथा आवाहित देवताओं के मंत्र से हवन तथा शिव पंचाक्षर से हवन पूर्णाहुती करें।

॥ शिव नीराजनम् ॥

जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीश, शिवजय गौरी नाथ।
त्वं मां पालय नित्यं त्वं मां पालय शंभो कृपया जगदीशा॥
ॐ हर हर हर महादेव॥१॥

कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुम विपिने शिवकल्पद्रुम विपिने।
गुंजति मधुकर पुंजे शिव गुजति मधुकर पुंजे कुंजवने गहने॥
कोकिल कुजति खेलत हंसावन ललिता शिवहंसावन ललिता।
रचयतिकला कलापं शिव रचयति कला कलापं नृत्यति मुदसहिता।
ॐ हर हर हर महादेव॥२॥

तस्मिन् ललित सुदेशे शाला मणि रचिता शिव शाला मणि रचिता।
तन्मध्ये हर निकटे शिवतन्मध्ये हर निकटे गौरी मुद सहिता॥
क्रीडा रचयिता भूषा रंजित निजमीशं शिव रंजित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुर सेवत ब्रह्मादिक सुर सेवित नामयते शीशम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥३॥

विवुध बधू बहु नृत्यति हृदये मुदसहिता शिव हृदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते। शिव मृदङ्ग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणु शिवक्वण ललिता वेणुर्मधुरं नादयते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥४॥

रुण रुण चरणे रचयति नूपुर मुज्ज्वलिता शिव नूपुरमुज्ज्वलिताम्।
चक्रावर्ते भ्रमयति शिव चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक ताम्॥
तां तां लुपचुप तां तां डमरु वादयते शिव डमरु वादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं शिव अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरुते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥५॥

कर्पूरद्युति गौरं पंचानन सहिता शिव पंचानन सहिता।
त्रिनयनशशिधरमौलिं शिव त्रिनय शशिधर मौलिं विषधर कण्ठ युतम्।
सुन्दर जटा कलापं पावक युत भालं शिव पावक युत भालम्।
डमरुत्रिशूलपिनाकं शिवडमरु त्रिशूलपिनाकंकरघृतनृकपालम्
ॐ हर हर हर महादेव॥६॥

मुण्डैरचयति माला पन्नगमुपवीतं शिव पन्नगुमपवीतम्।
वामविभागे गिरिजा वामविभागे गिरिजा रूपं अतिललितम्॥
सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम् शिवकृत भस्माभरणम्।
इतिवृषभध्वज रूपं हर शिव शंकर रूपं तापत्रयहरणम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥७॥

शंख निनादं कृत्वां झल्लरिनादयते शिव झल्लरिनादयते।
नीराजयते ब्रह्मा नीरायजते विष्णु वेदऋचा पठते॥
अतिमृदुचरण सरोजं हृतकमले धृत्वा शिवहृतकमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं अवलोकयति सुरेशं ईशं अभिनत्वा॥
ॐ हर हर हर महादेव॥८॥

ध्यानं आरति समये हृदये इति कृत्वा शिव हृदये इति कृत्वा।
रामं त्रिजटानाथं शिव रामं त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा॥
संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते शिव पठनं यः कुरुते।
शिव सायुज्यं गच्छति हर सायुज्यं गच्छति भक्त्या यः श्रृणुते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥९॥

।। आरती ।।

ॐ जय शिव ॐकारा हर शिव ॐकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, भोले भाले नाथ महादेव अर्द्धंगी धारा।
ॐ हर हर महादेव।।१।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै, भोले पंचानन राजै।
हंसासन गरुडासन, हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै।।
ॐ हर हर हर महादेव।।२।।
दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज तुम सौहे, शिव दशमुख तुम सोहै।
तीनों रूप निरखते, शंकर रूप निरखते, त्रिभुवन जन मोहे।
ॐ हर हर हर महादेव।।३।।
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी, शिव रुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद लेपन, चन्दन मृगमद लेपन भाले शशिधारी।।
ॐ हर हर हर महादेव।।४।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे, शिव बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक, सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे।।
ॐ हर हर हर महादेव।।५।।
करमध्ये च कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता शिव चक्र त्रिशूल धरता।
जगकर्त्ता जग भर्ता, जगकर्त्ता जगभर्ता, जगपालन कर्ता।।
ॐ हर हर हर महादेव।।६।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका शिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ॐ अक्षर के मध्ये तुम तीनों एका।।
ॐ हर हर हर महादेव।।७।।
काशी में विश्वनाथ विराजै नन्दी ब्रह्मचारी शिवनन्दी ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावत सबदिन दर्शन पावै महिमा अतिभारी।।
ॐ हर हर हर महादेव।।८।।
शिवजी के हाथों में कंकण कानों में कुण्डल गल सर्पों की माला।
जटा में गंगा विराजे मस्तक में चन्द्र विराजे ओढ़त मृगछाला।।
ॐ हर हर हर महादेव।।९।।
त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावै शिव जो कोई सुन पावै
कहत शिवानन्द स्वामी रटत हराहर स्वामी मनवांछित फल पावे।
ॐ हर हर हर महादेव।।१०।।

॥ पुष्पांजलि ॥

ॐ यज्ञेनयज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमान सचन्त यत्र पूर्वेसाध्याः सन्तिदेवाः॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वै श्रवणाय कुर्महे। समेकामान् काम कामायमह्यं कामेश्वरोवै श्रवणो ददातु। कुबेरायवैश्रवणाय महाराजय नमः॥ ॐ स्वस्ति, साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ट्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्य मयं समन्तपर्यायीस्यात्॥ सार्वभौम सार्वायुष आन्तादापरार्द्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्य्यन्ताया एक राडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिविष्टारोमरुतस्यावसन् गृहे। आविक्षतस्य कामप्रेविश्वेदेवा सभासदः॥ ॐ विश्वत श्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमीं जनयन् देवऽएकः॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नोरुद्र प्रचोदयात्। सेवन्तिकाबकुल चम्पक पाटलाब्जै पुन्नागजाति करवीर रसाल पुष्पैः। विल्व प्रवाल तुलसीदलमालती भी स्त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद॥ नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालो भवानि च। पुष्पाञ्जलि मयादत्तं गृहाण त्वं महेश्वर॥

मंत्र पुष्पाञ्जलि भगवान शिव को अर्पण कर शिव की अर्ध प्रदक्षिणा करें :-

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽ अवध्नन् पुरुषं पशुम्॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे॥

।। समर्पण ।।

करचरण कृतंवा क्वायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व।
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।

हे प्रभो मैंने हाथों से, पैरों से, वचन से, कर्म से, कानों से, आँखों से अथवा मन से जो भी अपराध किये हों, वे विहित हों या अविहित हो उन सबको हे करुणा के सागर श्री महादेव शम्भो क्षमा कीजिये। आपकी जय हो जय हो।।

जल सम्प्रोक्षणम्-

ॐ शतं भवति शतायुर्वैपुरुषः शतंद्रियरैवन्द्रियं वीर्य्य मात्मंघते ॐ स्वस्ति।। जल के छीटें लगा देवें।

।। हरि ॐ शान्ति ।।

।। सोमवती अमावस्या व्रत ।।

सोमवार और अमावस्या का योग जहां मिल जाय तो उसे सोमावती अमावस्या कहते हैं। सूर्य ग्रहण में जो फल स्नान का मिलता है। तीर्थ कपिलाधार गंगा पुष्कर एवं दिव्य अन्तरिक्ष और भूमि के जो सब तीर्थ हैं सोमावती अमावस्या के दिन वहीं निवास करते हैं। इसमें जो दान स्नान श्राद्ध किया जाता है अक्षय होता है।

चतस्रस्तिथय स्त्वेताः सूर्यग्रहण सन्निभाः।
स्नानं दानं तथा श्राद्धं सर्वं तत्रा क्षयं भवेत्।।

इस व्रत के प्रभाव से पाप नष्ट हो जाती हैं। पुत्र और पौत्र की वृद्धि होती हैं परम सौभाग्य सन्तान की प्राप्ति के लिए अंगरूप अश्वत्थपूजन पीपल में पानी लगाना उसे सूत्र से वष्टित करना तथा उसके मूल में विष्णु का पूजन करन चाहिए। रात्रि जागरण तथा प्रभात में हवन आदि कार्य किये जाते हैं।

।। सोमावती अमावस्या व्रतोद्योपानम्।।

ॐ अद्येत्यादि० संकीर्त्य अस्यांसोमवत्यमायां सकल पापक्षयार्थं पुत्रपौत्राद्यभिवृद्ध्यर्थं जन्म जन्मन्यधव्यवै। सन्ततिचिरजीवित परमसौभाग्य प्राप्तिकामो ऽ हमश्वत्थ मूले लक्ष्मि सहित विष्णु पूजां तदङ्गतया विहित अश्वत्थ पूजनंच करिष्ये।

।। अश्वत्थ वृक्ष में विष्णु पूजन ।।

ध्यान :-

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं।
वन्देविष्णु भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

आवाहन :-

विश्वव्यापक विश्वेशं कृपया दीन वत्सल।
मयोपपादितां पूजां गृहाणेमां हि माधव।।

आसन :-

सूर्य कोटि प्रभानाथ सर्वव्यापिन् रमापते।
आसनं कल्पितंभक्त्या गृहाण पुरुषोत्तम।।

पाद्य :-

नारायणं जगद्व्यापिन् जगदानन्द कारक।
विष्णुक्रान्तादि संयुक्तं गृहाणपाद्यं मयार्पितम्।।

अर्घ्यं :-

फलगन्धाक्षतैर्युक्तं पुष्पपूंगसमन्वितम्।
अर्घ्यं गृहाण भगवन् विष्णो सर्वफलप्रद।।

आचमन :-

कर्पूरैलालवङ्ाढ्यं शीतलं सलिलं प्रभो।
रमारमण कृष्णत्वमाचम्य प्रतिगृह्यताम्।।

स्नान :-

गंगा कृष्णा गौमती च कावेरीच शतह्लदा।
ताभ्यआनीतमुदकं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पंचामृतस्नान :-

पंचामृतमयाऽनीतं पयोदधि घृतं मधु।
शर्करागुडसंयुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्ध जल स्नान :-

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धु कावेरी जल स्नानं मयार्पितम्।।

वस्त्र :-

पीतवासस्त्वयि प्रभो मया यत्समुपाहृतम्।
वासः प्रीत्या गृहाणेदं पुरुषोत्तम केशव।।

उपवीत :-

उपवीतं सोत्तरीयं मयादत्तं सुशोभनम्।
विश्वमूर्ते गृहाणेदं नारायण जागत्पते।।

आभूषण :-

भूषणानि महार्हाणि मुक्ताहार युतानि च।
ददामि हर मे पापं नारायण नमोऽस्तुते।।

चन्दन :-

मलयाचल सम्भूतं घनसारं मनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षत :-

अक्षताश्च सुर श्रेष्ठ कुंकुमाक्ता सुशोभिताः।
मयानिवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

पुष्प तुलसी :-

तुलसी जातिकमल मलिकाचम्पकानि च।
पुष्पाणि हरगोविन्द गृहाण परमेश्वर।।

धूप :-

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्धो गन्ध उत्तम।
आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

दीप :-

चक्षुर्द सर्व देवानां तिमिरस्य निवारक।
आर्तिक्य कल्पितं भक्त्या गृहाण जगदीश्वर।।

नैवेद्य :-

भक्ष्यभोज्यलेह्यपेय चोष्यखाद्यं मयाऽहृतम्।
प्रीतये परमेशस्यं दत्तं मे स्वीकुरु प्रभो।।

दक्षिणा :-

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।
अनन्तपुण्य फलदा मत्त शान्ति प्रयच्छ मे।।

नीराजन :-

त्वद्भासा भासते लोकः कोटिसूर्य समप्रभो।
नीराजयिष्ये त्वां विष्णो कृपांकुरु मम प्रभो।।

प्रदक्षिणा :-

मया कायेन मनसा वाचा जन्मशतार्जितम्।
पापप्रशमय श्रीश प्रदक्षिण पदे पदे।।

प्रार्थना :-

व्यक्ताव्यक्त स्वरूपाय सृष्टिस्थित्य कारिणे।
आदिमध्यान्त रहित विष्टरश्रवसे नमः।।

पुष्पांजलि :-

आदिमध्यान्त रहित भक्तामिष्टदायक।
पुष्पाजलिर्मया दत्ता गृहाण सुरपूजित।।

इस प्रकार अश्वत्थ वृक्ष में विष्णु का पूजन कर अमावस्या और सोम का पूजन गन्धाक्षतादि से कर देवें।

अश्वथ पूजन :-

अश्वत्थ का गन्धाक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य से कर प्रार्थना करें:

अश्वत्थहुत भुग्वास गोविन्दस्य सदा प्रिय।
अशेषं हर मे पापं वृक्षराज नमोऽस्तु ते।।

द्रव्यदान मंत्र :-

अमासोमव्रतस्येदं सम्पूर्ण फल हेतवे।
वायनं द्विजवर्याय सहिरण्यं ददाम्यहम्।।

ब्राह्मण की प्रार्थना :-

यन्मया मनसा वाचा नित्यमात्मपूजनं कृतम्।
सर्वं सम्पूर्णतां यातु तद्विष्णोश्च प्रसादतः।।

पीपल की एक सौ आठ परिक्रमा :-

मूलतो ब्रह्मणे नमो नमः। मध्ये विष्णवे नमो नमः।
अग्रे रुद्ररूपाय नमो नमः।।

हर परिक्रमा करते हुए एक एक फल पीपल पर चढाता जायें।

उद्यापन :-

सर्वतो भद्र बनाकर बीच में कलश रखें स्वर्ण का अश्वत्थ बनाकर पंचरत्न वेदी में रखें अश्वत्थ मूल में गरुड़ के साथ विष्णु-लक्ष्मी की प्रतिमा स्वर्ण की रखें। उसका पूजन कर रात्रि जागरण करें भगवान विष्णु के चरित्रों स्तोत्रो तथा मंत्र जापकर प्रभात में स्नानादि से निवृत्त होकर पीपल की समिधा द्वारा पायस आदि द्वारा हवन करें पुरुष सूक्त तथा अन्य आवाहित देवताओं को भी आहुति दें।

आचार्य का पूजन, प्रतिमा तथा दूध देने वाली गाय का दान, बारह ऋत्विजों को जिमायैं घी, खीर का भोजन करावैं उन्हें वस्त्र यज्ञोपवीत दक्षिणा के साथ देवें इस प्रकार बारह वर्ष तक व्रत कर आदि या मध्य में उद्यापन करें।

।। इति सोमवती अमावस्या व्रतोद्यापनम्।।

।। सत्यनारायण व्रत ।।

संक्रान्त प्रदोष व्यापिनी पूर्णिमा एकादशी के दिन शुभ मास में सत्यनारायण व्रत का उद्यापन किया जाता है। उद्यापन सायंकाल को किया जाता है। शुक्रादि अस्त रहित मास में ब्राह्मण और बान्धवों के साथ भगवान नारायण की पूजा करनी चाहिए। सत्यनारायण व्रंत के प्रभाव से धन, बन्धन मुक्ति, निर्भयता, मन इच्छित फल की प्राप्ति, दुखों से मुक्ति, सन्तान की प्राप्ति तथा दुर्लभ मोक्ष की प्राप्ति होती है-

दरिद्रो लभते वित्तं बद्धी मुच्येत् बन्धनात्।
भीतो भयात् प्रमुच्यते सत्यमेव न संशयः।।

भगवान नारायण ने स्वयं इस व्रत को नारद ऋषि को बताया तथा स्वयं इस व्रत की प्रशंसा की –

व्रतमस्ति महत्पुण्यं स्वर्गे मर्त्येच दुर्लभम्।
तवस्नेहान्मया वत्स प्रकाशः क्रियतेऽधुना।।

सायंकाल आवाहित देवताओं का पूजन कर भगवान सत्यनारायण का पूजन करना चाहिए। भक्तिपूर्वक प्रसाद ग्रहण कर बन्धुवों के साथ भोजनकर रात्रि जागरण कर प्रातः पुनः देवताओं का पूजन कर हवनादि करना चाहिए। सत्यनारायण का पूजन शालग्राम या स्वर्ण प्रतिमा में करें।

।। सत्यनारायण व्रतोद्यापनम् ।।

ॐ अद्येत्यादि० मम आत्मनः इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कृत समस्त पापक्षयार्थं धर्मार्थ-काम-मोक्ष चतुर्वर्ग प्राप्ति द्वारा श्री नारायण प्रीतये अमुक कामनया वा आचरित-सत्यनारायण व्रतोद्यापनं करिष्ये।

ध्यान :-

ध्यायेत्सत्यं गुणातीतं गुणत्रय समन्वितम्।
लोकनाथं त्रिलोकेशं कौस्तुभाभरणं हरिम्।।

नीलवर्णं पीतवस्त्रं श्रीवत्सपद भूषितम्।
गोविन्दं गोकुलानंद ब्रह्माद्यैरपि पूजितम॥
शान्तकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं सुभांगम्॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलौकेक नाथम्॥

अर्घ्य :-

व्यक्ता व्यक्त स्वरूपाय हृषिकपतये नमः।
मया निवेदितो भक्त्या अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

पाद्य:-

नारायण नमस्तेऽस्तु नरकार्णं वतारकम्।
पाद्यं गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्धय:॥

आचमन :-

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्व पाप हर शुभं।
तदिदं कल्पितं देव सम्यगाचम्यतां त्वया॥

पंचामृत स्नान :-

स्नानं पंचामृतै देंव गृहाण पुरुषोत्तम।
अनाथनाथ सर्वज्ञ गीर्वाण प्रणतिप्रिय॥

वस्त्र :-

वेदसूक्त समायुक्ते यज्ञसाम समन्विते।
सर्ववर्णप्रदे देव वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

यज्ञोपवीत:-

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्य गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

अक्षत:-

अक्षतान् तिलजान् देव पीत चन्दनं मिश्रितान्।
गृहाणं परमं प्रीत्या लक्ष्मीकान्त जनार्दन॥

पुष्प :-

मल्लिकादि सुगन्धीनि मालत्यादीनिनिवैप्रभो।
मयाहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्॥

अंगपूजन :-

१. ॐ पद्मनाभाय नमः। २. ॐ हृषिकेशाय नमः
३. ॐ शाश्वताय नमः। ४. ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः।
५. ॐ जनार्दनाय नमः। ६. ॐ धरणीधराय नमः।
७. ॐ वृषोदराय नमः। ८. ॐ महेन्द्राय नमः।
९. ॐ सुरेश्वराय नमः १०. ॐ कामदेवाय नमः।
११. ॐ नृसिंहाय नमः। १२. ॐ नरकान्तकाय नमः।
१३. ॐ अव्यक्ताय नमः १४. ॐ शाश्वताय नमः।
१५. ॐ विष्णवे नमः १६. ॐ अनन्ताय नमः
१७. ॐ अजाय नमः १८. ॐ अव्यक्तये नम।
१९. ॐ नारायणाय नमः २०. ॐ जगद्रक्षाय नमः।
२१. ॐ गोविन्दाय नमः २२. ॐ कीर्तिभाजनाय नमः
२३. ॐ गोवर्द्धनाय नमः २४. ॐ देवाय नमः।
२५. ॐ भूधराय नमः २६. ॐ भुवनेश्वराय नमः
२७. ॐ वेदवेत्रे नमः २८. ॐ यज्ञपुरुषाय नमः
२९. ॐ यज्ञेशाय नम ३०. ॐ यज्ञवाहनाय नम
३१. ॐ चक्रपाणिने नमः ३२. ॐ गदापाणिने नमः
३३. ॐ शंखपाणिने नमः ३४. ॐ नरोत्तमाय नमः
३५. ॐ वैकुण्ठाय नम ३६. ॐ दुष्टदमनाय नमः
३७. ॐ भूगर्भाय नमः ३८. ॐ पीतवाससे नमः।
३९. ॐ त्रिविक्रमाय नमः ४०. ॐ त्रिकालयज्ञाय नमः
४१. ॐ त्रिमूर्तये नमः ४२. ॐ नन्दिकेश्वराय नमः
४३. ॐ रामाय नमः ४४. ॐ हयग्रीवाय नमः
४५. ॐ भीमाय नमः ४६. ॐ रौद्राय नमः
४७. ॐ भवोद्भवाय नमः ४८. ॐ श्रीपतये नमः
४९. ॐ श्रीधराय नमः ५०. ॐ श्रीशाय नमः

५१. ॐ मंगलाय नमः ५२. ॐ सर्वमंगलाय नमः
५३. ॐ दामोदराय नमः ५४. ॐ दामोपेताय नमः
५५. ॐ केशवाय नमः ५६. ॐ केशीसूदनाय नमः
५७. ॐ वरेण्याय नमः ५८. ॐ वरदाय नमः
५९. ॐ माधवाय नमः ६०. ॐ वसुदाय नमः
६१. ॐ हिरण्यरेत से नमः ६२. ॐ दीप्ताय नमः
६३. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः ६४. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
६५. ॐ पुराणाय नमः ६६. ॐ निष्कलाय नमः
६७. ॐ निर्गुणाय नमः ६८. ॐ गुणसं स्थिताय नमः
६९. ॐ तनुसंकाशाय नमः ७०. ॐ सूर्यसुतसमप्रभवे नमः
७१. ॐ मेघश्यामाय नमः ७२. ॐ चतुर्वाहवे नमः
७३. ॐ कुशलाय नमः ७४. ॐ कर्मवेदनाय नमः
७५. ॐ ज्योतिरूपाय नमः ७६. ॐ स्वरूपाय नमः
७७. ॐ हरिसंस्थिताय नमः ७८. ॐ ज्ञानकूटाय नमः
७९. ॐ अर्वाय नमः ८०. ॐ परमाय नमः
८१. ॐ प्रभवे नमः ८२. ॐ योगीशाय नमः
८३. ॐ योगनिष्ठाय नमः ८४. ॐ योगिने नमः
८५. ॐ योगरूपिणे नमः ८६. ॐ ईश्वराय नमः
८७. ॐ सर्वभूतसम प्रभवाय नमः ८८. ॐ सर्वज्ञाय नमः
८९. ॐ सर्वरूपाय नमः ९०. ॐ सर्वेश्वराय नमः
९१. ॐ सर्वतोमुखाय नमः ९२. ॐ अच्युताय नमः
९३. ॐ शान्ताकाराय नमः ९४. ॐ भुजंगशयनाय नमः
९५. ॐ पद्मनाभाय नमः ९६. ॐ सुरेशाय नमः
९७. ॐ विश्वाधाराय नमः ९८. ॐ गगनसदृशाय नमः
९९. ॐ मेघवर्णाय नमः १००. ॐ शुभांगाय नमः
१०१. ॐ लक्ष्मीकान्ताय नमः १०२. ॐ कमलनयनाय नमः
१०३. ॐ योगिभिर्ध्यान गम्याय नमः।
१०४ ॐ भवभयहराय नमः।

।। तुलसी ।।

तुलसी हेम रुपां च रत्नरूपां च मंजरीम।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्।।

धूप :-

वनस्पति रसोद् भूतोगन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेय सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

दीप :-

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्र्यैलोक्य तिमिरापह।।

नैवेद्य :-

घृतपक्कं हविष्यान्नं पायसं च स शकरकम्।
नानाविधं च नैवेद्यं विष्णो मे प्रतिगृह्यताम्।।

आचमन :-

सर्वपापहरं दिव्यं गांगेय निर्मलं जलम्।
आचमनं मयादत्तं गृह्यतां पुरुषोत्तम।।

ताम्बूल :-

लवंग कर्पूरयुतं ताम्बूलं सुरपूजितम्।
प्रीत्या गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्द्धय।।

फल :-

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

दक्षिणा :-

हिरण्य-गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

प्रार्थना :-

यन्यमया भक्तियुक्तेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
निवेदितं च नैवेद्यं तद्गृहाणानु कम्पया।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।
अमोघं पुण्डरीकाक्ष नृसिंह दैत्य सूदनम्।
ऋषिकेशं जगन्नाथं वागीशं वरदायकम्।।
गुणत्रय गुणातीतं गोविन्दं गरुड़ध्वजम्।
जनार्दनं जनातीतं जानकी वल्लभं हरिम्।।
प्रणमामि सदाभक्त्या नारायणमतः परम्।
दुर्गमे विषये घोरे शत्रुभिः परिपीडिते।।
निस्तारयस्व सर्वेषुतथानिष्ट भयेषु च।
नामान्येतानि संकीर्त्य ईप्सितं फलमाप्नुयात।।
सत्यनारायणं देव वन्देऽहं कामदं प्रभुम्।
लीलया विततं विश्वं येन तस्मै नमो नमः।।

प्रदक्षिणा :-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

दूसरे दिन स्नानादि कर पुनः पूर्ववत आवाहित देवताओं का पूजन कर अग्नि का प्रतिष्ठापन करें आवाहित देवताओं को आहुति देवें। प्रधान देवता के लिए घी युक्त पायस द्वारा एक सौ आठ आहुतियां निम्न मंत्र से देवें :-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।।

हवन कार्य पूर्णाहुति प्रयन्त कर प्रतिमा शय्या गोदान आदि कार्य कर देवें।

पुनः प्रार्थना करें :-

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यामृत सत्यमेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्ना।।

।। इति सत्यनारायण व्रतोद्यापनम्।।



।। आरती सत्यनारायण जी की ।।

जय लक्ष्मी रमणा
श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी
जनपातक हरणा।। जय।। टेर।।

रत्नजड़ित सिंहासन अद्‌भुत छविराजै।
नारद करत निराजन घंटाध्वनि बाजे।। जय।। १।।
प्रगट भये कलिकारण द्विज को दरश दिया।
बुड्ढो ब्राह्मण बनकर कंचन महल किया।। जय।। २।।
दुर्बल भील कठारो जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड एक राजा जिनकी विपत्ति हरी।। जय।। ३।।
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी।
सोफल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी।। जय।। ४।।
भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रूपधरयो।
श्रद्धा धारण कीनी तिनका काज सरयो।। जय।। ५।।
ग्वालवाल संगराजा वन में भक्ति करी।
मन वांच्छित फल दीनो दीनदयालु हरी।। जय।। ६।।
चढत प्रसाद सवायो कदलीफल मेवा।
धूप दीप तुलसी से राजी सत देवा।। जय।। ७।।
श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावै।
तन मन सुख सम्पति मन वांच्छित फल पावै।। जय।। ८।।

श्री सत्यनारायण जी की कथा
प्रथमोऽध्याय

व्यास उवाच

एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः
प्रपच्छुर्मुनयः सर्वे सूतं पौराणिकं खलु॥१॥

ऋषय ऊचुः

व्रतेन तपसा किं वा प्राप्यते वांछितं फलम्॥
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः कथयस्व महामुने॥२॥

सूत उवाच-

नारदेनैव संपृष्टो भगवान्कमलापतिः॥
सुरर्षय यथैवाह तच्छृणुध्वं समाहिताः॥३॥
एकदा नारदो योगी परानुग्रहकांक्षया॥
पर्यटन्विविधाँल्लोकान्मर्त्यलोकमुपागतः॥४॥
ततो दृष्ट्वा जनान्सर्वान्नानाक्लेशसमन्वितान्॥
नानायोनि समुत्पान्नान् क्लिश्यमानान्स्वकर्मभिः॥५॥
केनोपायेन चैतेषां दुःखनाशो भवेद्ध्रुवम्॥
इति संचिन्त्य मनसा विष्णुलोकं गतस्तदा॥६॥
तत्र नारायणंदेवं शुक्लवर्णंचतुर्भुजम्॥
शंखचक्रगदापद्मवनमालाविभूषितम् ॥७॥
दृष्ट्वा तं देवदेवेशंस्तोतुं समुपचक्रमे॥

नारद उवाच-

नमोवाङ्मनसातीतरूपायानंतशक्तये ॥८॥
आदिमध्यांतहीनाय निर्गुणाय गुणात्मने॥
सर्वेषामादिभूताय भक्तानामार्तिनाशिने॥९॥
श्रुत्वास्तोत्रं ततो विष्णुर्नारदं प्रत्यभाषत॥

श्रीभगवानुवाच

किमर्थमागतोऽसि त्वं किंते मनसि वर्तते॥१०॥
कथयस्व महाभाग तत्सर्वं कथयामि ते॥

नारद उवाच

मर्त्यलोके जनाः सर्वे नानाक्लेशसमन्विताः॥
नानायोनिसमुत्पन्नाः पच्यन्ते पापकर्मभिः॥११॥

तत्कथं शमयेन्नाथ लघूपायेन तद्वद।
श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं कृपास्ति यदि ते मयि॥१२॥
श्रीभगवानुवाच
साधु पृष्टं त्वया वत्स लोकानुग्रहकांक्षया॥
यत्कृत्वा मुच्यते मोहात्तच्छृणुष्व वदामि ते॥१३॥
व्रतमस्ति महत्पुण्यं स्वर्गे मर्त्ये च दुर्लभम्॥
तव स्नेहान्मया वत्स प्रकाशः क्रियतेऽधुना॥१४॥
सत्यनारायणस्यैवं व्रतं सम्यग्विधानतः॥
कृत्वा सद्यः सुखं भुक्त्वा परत्र मोक्षमाप्नुयात्॥१५॥
तच्छ्रुत्वा भगवद्वाक्यं नारदो मुनिरब्रवीत्॥
नारद उवाच
किं फलं किं विधानं च कृतं केनैव तद्व्रतम्॥१६॥
तत्सर्वं विस्तरात् ब्रूहि कदा कार्यं हि तद्व्रतम्॥
श्रीभगवानुवाच
दुःखशोकादिशमनंधनधान्यप्रवर्धनम् ॥१७॥
सौभाग्यसन्ततिकरं सर्वत्रविजयप्रदम्॥
यस्मिन्कस्मिन्दिने मर्त्यो भक्तिश्रद्धासमन्वितः॥१८॥
सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे॥
ब्राह्मणैर्बान्धिवैश्चैव सहितो धर्मतत्परः॥१९॥
नैवेद्यं भक्तितो दद्यात्सपादं भक्ष्यमुत्तमम्॥
रंभाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम्॥२०॥
अभावे शालिचूर्णं वा शर्करा वा गुडस्तथा॥
सपादं सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत्॥२१॥
विप्राय दक्षिणां दद्यात्कथां श्रुत्वाजनैः सह॥
ततश्चबन्धुभिः सार्धं विप्रांश्च प्रतिभोजयेत्॥२२॥
प्रसादं भक्षयेद्भक्त्या नृत्यगीतादिकं चरेत्॥
ततश्च स्वगृहं गच्छेत्सत्यनारायणं स्मरन्॥२३॥
एवंकृते मनुष्याणां वाञ्छासिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्।
विशेषतः कलियुगे लघूपायोऽस्ति भूतले॥२४॥
इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखंडे सत्यनारायणकथायां प्रथमोऽध्यायः॥

द्वितीयोऽध्याय

सूत उवाच-

अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि कृतं येन पुरा द्विज।।
कश्चित् काशीपुरे रम्ये ह्यासीद्विप्रोऽतिनिर्धनः।।१।।
क्षुत्तृड्भ्यां व्याकुलो भूत्वा नित्यं बभ्राम भूतले।।
दुःखितं ब्राह्मणं दृष्ट्वा भगवान्ब्राह्मणप्रियः।।२।।
वृद्धब्राह्मणरूपस्तं पप्रच्छ द्विजमादरात्।।
किमर्थं भ्रमसे विप्र महीं नित्यं सुदुःखितः।।३।।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां द्विजसत्तम।।

ब्राह्मण उवाच

ब्राह्मणोऽति दरिद्रोऽहं भिक्षार्थं वै भ्रमे महीम्।।४।।
उपायं यदि जानासि कृपया कथय प्रभो।

वृद्धब्राह्मण उवाच

सत्यनारायणो विष्णुर्वांछितार्थफलप्रदः।।५।।
तस्य त्वं पूजनं विप्र कुरुष्व व्रतमुत्तमम्।।
यत्कृत्वा सर्वदुखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः।।६।।
विधानं च व्रतस्यापिविप्रायाभाष्य यत्नतः।।
सत्यनारायणो वृद्धस्तत्रैवान्तरधीयत।।७।।
तदव्रतं संकरिष्यामि यदुक्तंब्राह्मणेन वै।
इति संचिंत्य विप्रोऽसौ रात्रौ निद्रां न लब्धवान्।। ८।।
ततः प्रातः समुत्थाय सत्यनारायणव्रतम्।।
करिष्य इति संकल्प्य भिक्षार्थमगमद् द्विजः।।९।।
तस्मिन्नेव दिने विप्रः प्रचुरं द्रव्यमाप्तवान्।।
तेनैव बन्धुभिः सार्धं सत्यस्य व्रतमाचरेत।।१०।।
सर्वदुःखविनिर्मुक्तः सर्वसंपत्समन्वितः।।
बभूव स द्विजश्रेष्ठो व्रतस्यास्य प्रभावतः।।११।।
ततः प्रभृति कालं च मासि मासि व्रतं कृतम्।।
एवं नारायणस्येदं व्रतं कृत्वा द्विजोत्तमः।।१२।।
सर्वपापविनिर्मुक्तो दुर्लभं मोक्षमाप्तवान्।।
व्रतमस्य यदा विप्रः! पृथिव्यां संकरिष्यति।।१३।।
तदैव सर्वदुःखं तु मनुजस्य विनश्यति।।

एवं नारायणेनोक्तं नारदाय महात्मने॥१४॥
मया तत्कथितं विप्रः! किमन्यत्कथयामि वः॥

ऋषयः ऊचुः

तस्माद्विप्राच्छ्रुतं केन पृथिव्यां चरितं मुने॥
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः श्रद्धाऽस्माकं प्रजायते॥ १५॥

सूत उवाच

शृणुध्वं मुनयः सर्वे व्रतं येन कृतं भुवि॥
एकदा स द्विजवरो यथाविभवविस्तरैः॥ १६॥
बन्धुभिः स्वजनैः सार्धं व्रतं कर्तुं समुद्यतः॥
एतस्मिन्नंतरे काले काष्ठक्रेता समागमत्॥१७॥
बहिःकाष्ठं च संस्थाप्य विप्रस्य गृहमाययौ॥
तृष्णया पीडितात्मा च दृष्ट्वा विप्रं कृतव्रतम्॥१८॥
प्रणिपत्य द्विजं प्राह किमिदं क्रियते त्वया॥
कृते किं फलमाप्नोति विस्तराद्वद मे प्रभो॥१९॥

विप्र उवाच

सत्यनारायणस्येदं व्रतं सर्वेप्सितप्रदम्॥
तस्य प्रसादान्मे सर्वं धनधान्यादिकं महत्॥२०॥
तस्मादेतद्व्रतं ज्ञात्वा काष्ठक्रेताऽतिहर्षितः॥
पपौ जलं प्रसादं च भुक्त्वा स नगरं ययौ॥२१॥
सत्यनारायणंदेवं मनसा इत्यचिंतयत्॥
काष्ठंविक्रयतो ग्रामे प्राप्यते चाद्य यद्धनम्॥२२॥
तेनैव सत्यदेवस्य करिष्ये व्रतमुत्तमम्॥
इति संचिन्त्य मनसा काष्ठं धृत्वा तु मस्तके॥२३॥
जगाम नगरे रम्ये धनिनां यत्र संस्थितिः॥
तद्दिने काष्ठ मूल्यं च द्विगुणं प्राप्तवानसौ॥२४॥
ततः प्रसन्नहृदयः सुपक्वं कदलीफलम्॥
शर्कराघृतदुग्धं च गोधूमस्य च चूर्णकम्॥२५॥
कृत्वैकत्र सपादं च गृहीत्वा स्वगृहं ययौ॥
ततो बन्धून् समाहूय चकार विधिना व्रतम्॥२६॥
तद्व्रतस्य प्रभावेण धनपुत्रान्वितोऽभवत्॥
इह लोके सुखं भुक्त्वा चांते सत्यपुरं ययौ॥२७॥

इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रतकथायां द्वितीयोऽध्यायः॥२॥

तृतीयोऽध्याय

सूत उवाच-

पुनरग्रे प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनिसत्तमाः॥
पुरा चोल्कामुखो नाम नृपश्चासीन्महामतिः॥१॥
जितेन्द्रियःसत्यवादी ययौ देवालयंप्रति॥
दिने दिने धनं दत्त्वा द्विजान्संतोषयन्सुधीः॥२॥
भार्यातस्य प्रमुग्धा च सरोजवदना सती॥
भद्रशीला नदी तीरे सत्यस्य व्रतमाचरत्॥३॥
एतस्मिन्नन्तरे तत्र साधुरेकः समागतः॥
वाणिज्यार्थं बहुधनैरनेकैः परिपूरितः॥४॥
नावं संस्थाप्य तत्तीरे जगाम नृपतिं प्रति॥
दृष्ट्वा स व्रतिनं भूपं प्रपच्छ विनयान्वितः॥५॥

साधुरुवाच

किमिदं कुरुषे राजन्भक्तियुक्तेन चेतसा॥
प्रकाशं कुरु तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि सांप्रतम्॥६॥

राजोवाच

पूजनं क्रियते साधो विष्णोरतुलतेजसः।
व्रतं च स्वजनैः सार्धं पुत्राद्या वाप्तिकाम्यया॥७॥
भूपस्य वचनं श्रुत्वा साधुः प्रोवाच सादरम्॥
सर्वं कथय मे राजन्करिष्येऽहं तवोदितम्॥८॥
ममापि सन्ततिर्नास्ति ह्येतस्माज्जायते ध्रुवम्॥
ततो निवृत्य वाणिज्यात्सानंदो गृहमागतः॥९॥
भार्यायै कथितं सर्वं व्रतं संततिदायकम्॥
तदा व्रंत करिष्यामि यदा मे संततिर्भवेत्॥१०॥
इति लीलावतीं प्राह पत्नीं साधुः स सत्तमः॥
एकस्मिन्दिवसे तस्यभार्या लीलावती सती॥११॥
भर्तृयुक्तानन्दचित्ताऽभवद्धर्मपरायणा ॥
गर्भिणी साभवत्तस्य भार्या सत्यप्रसादतः॥१२॥
दशमे मासि वै तस्याः कन्या रत्नमजायत।
दिने दिने सा ववृधे शुक्लपक्षे यथा शशी॥१३॥
नाम्नाकलावती चेति तन्नामकरणं कृतम्।
ततो लीलावती प्राह स्वामिनं मधुरं वचः॥१४॥
न करोषि किमर्थं वै पुरा संकल्पित व्रतम्॥

साधुरुवाच–

विवाहसमये त्वस्या करिष्यामि व्रतं प्रिये॥१५॥
इति भार्यां समाश्वास्य जगाम नगरं प्रति॥
ततः कलावती कन्या ववृधेपितृवेश्मनि॥१६॥
दृष्ट्वा कन्यां ततः साधुर्नगरे सखिभिः सह॥
मन्त्रयित्वा द्रुतं दूतं प्रेषयामास धर्मवित्॥१७॥
विवाहार्थं च कन्यायाः वरं श्रेष्ठंविचारय॥
तेनाज्ञप्तश्च दूतोऽसौ कांचनं नगरं ययौ॥१८॥
तस्मादेकं वणिक्पुत्रं समादायागतो हि सः॥
दृष्ट्वा तु सुंदरं बालं वणिक्पुत्रं गुणान्वितम्॥१९॥
ज्ञातिभिर्बन्धुभिः सार्धं परितुष्टेन चेतसा।
दत्तवान्साधु पुत्राय कन्यां विधिविधानतः॥२०॥
ततोऽभाग्यवशात्तेन विस्मृतं व्रतमुत्तमम्॥
विवाहसमये तस्यास्तेनरुष्टोऽभवत्प्रभुः॥२१॥
ततःकालेनकियता निजकर्मविशारदः।
वाणिज्यायगतःशीघ्रं जामातृसहितो बणिक्॥२२॥
रत्नसारपुरे रम्ये गत्वासिन्धुसमीपतः॥
वाणिज्यमकरोत्साधुर्जामात्रा श्रीमता सह॥२३॥
तौ गतौ नगरे रम्ये चन्द्रकेतोर्नृपस्य च॥
एतस्मिन्नेव काले तु सत्यनारायणः प्रभु॥२४॥
भ्रष्टप्रतिज्ञमालोक्य शापं तस्मै प्रदत्तवान्॥
दारुणं कठिनं चास्य महद्दुःखं भविष्यति॥२५॥
एकस्मिन्दिवसे राज्ञो धनमादाय तस्करः॥
तत्रैव चागतश्चौरो वणिजौ यत्र संस्थितौ॥२६॥
तत्पश्चाद्धावकान्दूतादृष्टवा भीतेन चेतसा॥
धनं संस्थाप्य तत्रैव स तु शीघ्रमलक्षितः॥२७॥
ततो दूताःसमायाता यत्रास्ते सज्जनो वणिक्॥
दृष्ट्वा नृपधनं तत्र बद्ध्वाऽऽनीतौ वणिक्सुतौ॥२८॥
हर्षेण धावमानाश्च प्रोचुर्नृपसमीपतः॥
तस्करौ द्वौ समानीतौ विलोक्याज्ञापय प्रभो॥२९॥
राज्ञाऽऽज्ञप्तास्ततः शीघ्रं दृढं बद्ध्वा तु तावुभौ॥
स्थापितौ द्वौ महादुर्गे कारागारेऽविचारतः॥३०॥

मायया सत्यदेवस्य न श्रुतं कैस्तयोर्वचः।।
अतस्तयोर्धनं राज्ञा गृहीतं चंद्रकेतुना।।३१।।
तच्छापाच्च तयोर्गेहे भार्या चैवातिदु:खिता।।
चौरेणापहृतं सर्वं गृहे यच्च स्थितं धनम्।।३२।।
आधिव्याधिसमायुक्ता क्षुत्पिपासादिदुः खिता।।
अन्नचिंतापरा भूत्वाबभ्राम च गृहे गृहे।।
कलावती तु कन्याऽपि बभ्राम प्रतिवासरम्।।३३।।
एकस्मिन्दिवसे याता क्षुधार्ता द्विजमन्दिरम्।।
गत्वाऽपश्यद् व्रतं तत्र सत्यनारायणस्य च।।३४।।
उपविश्य कथां श्रुत्वा वरं प्रार्थितवत्यपि।।
प्रसादभक्षणं कृत्वा ययौ रात्रौ गृहं प्रति।।३५।।
माता कलावतीं कन्यां कथयामास प्रेमतः।।
पुत्रि रात्रौ स्थिता कुत्र किं ते मनसि वर्तते।।३६।।
कन्या कलावती प्राह मातरं प्रति सत्वरम्।।
द्विजालयं व्रतं मातर्दृष्टं वांछितसिद्धिदम्।।३७।।
तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं व्रतं कर्तुं समुद्यता।।
सा मुदा तु वणिग्भार्या सत्यनारायणस्य च।।३८।।
व्रतं चक्रे सैव साध्वी बन्धुभिःस्वजनै सह।।
भर्तृजामातरौ क्षिप्रमागच्छेतां स्वमाश्रमम्।।३९।।
अपराधं च मे भर्तुर्जामातुः क्षंतुमर्हसि।।
व्रतेनानेन तुष्टोऽसौ सत्यनारायणः प्रभुः।।४०।।
दर्शयामास स्वप्नं ही चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम्।।
बन्दिनौ मोचय प्रातर्वणिजौ नृपसत्तम।।४१।।
देयं धनं च तत्सर्वं गृहीतं यत्त्वयाऽधुना।।
नो चेत्त्वां नाशयिष्यामि सराज्यधनपुत्रकम्।।४२।।
एवमाभाष्यराजानं ध्यानगम्योऽभवत्प्रभुः।।
ततः प्रभातसमये राजा च स्वजनैः सह।।४३।।
उपविश्य सभामध्ये प्राह स्वप्नं जनं प्रति।।
बद्धौ महाजनौ शीघ्रं मोचय द्वौ वणिक्सुतौ।।४४।।
इति राज्ञो वचः श्रुत्वा मोचयित्वा महाजनौ।।
समानीय नृपस्याग्रे प्राहुस्ते विनयान्विताः।।४५।।

आनीतौ द्वौ वणिक्पुत्रौ मुक्तौ निगडबंधनात्।।
ततो महाजनौ नत्वा चंद्रकेतुं नृपोत्तम्।।४६।।
स्मरंतौ पूर्ववृत्तांतं नोचतुर्भयविह्वलौ।।
राजावणिक्सुतौ वीक्ष्य वचः प्रोवाच सादरम्।।४७।।
देवात्प्राप्तं महद्दुःखमिदानीं नास्ति वै भयम्।।
तदा निगडसंत्यागं क्षौरकर्माद्यकारयत्।।४८।।
वस्त्रालंकारकंदत्त्वा पारितोष्य नृपश्च तौ।।
पुरस्कृत्य वणिक्पुत्रौ वचसातोषयद्भृशम्।।४९।।
पुरानीतं तुयद्द्रव्यं द्विगुणीकृत्य दत्तवान्।।
प्रोवाच तौ ततो राजा गच्छ साधो निजाश्रमम्।।५०।।
राजानं प्रणिपत्याह गंतव्यं त्वत्प्रसादतः।।
इत्युक्त्वा तौ महावैश्यौ जग्मतुः स्वगृहं प्रति।।५१।।
इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखण्डे सत्यनायणव्रतकथायां तृतीयोऽध्यायः।।३।।

चतुर्थोध्याय

सूत उवाच

यात्रां तु कृतवान् साधुर्मङ्गलायनपूर्विकाम्।।
ब्राह्मणेभ्यो धनं दत्त्वा तदा तु नगरं ययौ।।१।
कियद्दूरं गते साधौ सत्यनारायणः प्रभुः।।
जिज्ञासां कृतवान् साधो किमस्ति तव नौस्थितम्।।२।।
ततो महाजनौ मत्तौ हेलया च प्रहस्य वै।
कथं पृच्छसि भो दण्डिन् मुद्रां नेतुं किमच्छसि।।३।।
लता पत्रादिकं चैव वर्तते तरणौ मम।।
निष्ठुरं च वचः श्रुत्वा सत्यं भवतु ते वचः।।४।।
एवमुक्त्वा गतः शीघ्रं दण्डी तस्य समीपतः।।
कियद्दूरं ततो गत्वा स्थितः सिन्धुसमीपतः।।५।।
गते दंडिनि साधुश्च कृतनित्याक्रियस्तदा।।
उत्थितां तरणिं दृष्ट्वा विस्मयं परमं ययौ।।६।।
दृष्ट्वा लतादिकं चैव मूर्च्छितोन्यपतद्भुवि।।
लब्धसंज्ञोवणिक्पुत्रस्ततश्चिन्तान्वितोऽभवत्।।७।।
तदा तु दुहितः कान्तो वचनंचेदमब्रवीत्।।
किमर्थ क्रियते शोकःशापो दत्तश्च दंडिना।।८।।

शक्यते तेन सर्वं हि कर्तुं चात्र न संशयः॥
अतस्तच्छरणंयामो वाञ्छितार्थो भविष्यति॥९॥
जामातुर्वचनं श्रुत्वा तत्सकाशं गतस्तदा॥
दृष्ट्वा च दंडिनं भक्त्या नत्वा प्रोवाच सादरम्॥१०॥
क्षमस्व चापराधं मे तदुक्तं तव सन्निधौ॥
एवं पुनःपुनर्नत्वा महाशोकाकुलोऽभवत्॥११॥
प्रोवाच वचनं दण्डी विलपन्तं विलोक्य च॥
मा रोदीः शृणु मद्वाक्यं मम पूजाबहिर्मुखः॥१२॥
ममाज्ञया च दुर्बुद्धे लब्धं दुःखं मुहुर्मुहुः॥
तच्छ्रुत्वाभगवद्वाक्यं स्तुतिं कर्तुं समुद्यतः॥१३॥

साधुरुवाच

त्वन्मायामोहिताः सर्वे ब्रह्माद्यास्त्रिदिवौकसः
न जानंति गुणान् रूपं तवाश्चर्यमिदं प्रभो॥१४॥
मूढोऽहंत्वां कथं जाने मोहितस्तव मायया।
प्रसीद पूजयिष्यामि यथा विभवविस्तरैः॥१५॥
पुरा वित्तं च तत्सर्वं त्राहि मां शरणागतम्॥
श्रुत्वा भक्तियुतं वाक्यं परितुष्टो जनार्दनः॥१६॥
वरं च वांछितं दत्त्वा तत्रैवान्तर्दधे हरिः॥
ततो नावं समारुह्य दृष्ट्वा वित्तप्रपूरिताम्॥१७॥
कृपया सत्यदेवस्य सफलं वांछितं मम॥
इत्युक्त्वा स्वजनैः सार्धं पूजां कृत्वा यथाविधि॥१८॥
हर्षेण चाभवत्पूर्णः सत्यदेव प्रसादतः॥
नावं संयोज्ययत्नेन स्वदेशगमनं कृतम्॥१९॥
साधुर्जामातरं प्राह पश्य रत्नपुरीं मम॥
दूतं च प्रेषयामास निजवित्तस्य रक्षकम्॥२०॥
ततोऽसौ नगरं गत्वा साधुभार्यां विलोक्य च॥
प्रोवाच वांछितं वाक्यं नत्वा बद्धांजलिस्तदा॥२१॥
निकटे नगरस्यैव जामात्रा सहितो वणिक्॥
आगतो बन्धुवर्गैश्च वित्तैश्च बहुभिर्युतः॥२२॥
श्रुत्वा दूतमुखाद्वाक्यं महाहर्षवती सती॥
सत्यपूजां ततः कृत्वा प्रोवाच तनुजां प्रति॥२३॥
व्रजामि शीघ्रमागच्छ साधुसंदर्शनाय च॥
इति मातृवचः श्रुत्वा व्रतं कृत्वा समाप्य च॥२४॥

प्रसादं च परित्यज्य गता सापि पति प्रति॥
तेन रुष्टः सत्यदेवो भर्तारं तरणिं तथा॥२५॥
संहृत्य च धनैः सार्धं जले तस्यावमज्जयत्॥
ततः कलावती कन्या न विलोक्य निजं पतिम्॥२६॥
शोकेन महता तत्र रुदती चापतद् भुवि॥
दृष्ट्वा तथा विधां नावं कन्यां च बहुदुःखिताम्॥२७॥
भीतेन मनसा साधुः किमाश्चर्यमिदंभवेत्॥
चिंत्यमानाश्चते सर्वेबभूवुस्तरणिवाहकाः॥२८॥
ततोलीलावती कन्यां दृष्ट्वा सा विह्वलाभवत्॥
विललापातिदुःखेन भर्तारं चेदमब्रवीत्॥२९॥
इदानीं नौकयासार्धं कथंसोऽभूदलक्षितः॥
न जाने कस्य देवस्य हेलया चैव सा हृता॥३०॥
सत्यदेवस्य माहात्म्यं ज्ञातुं वा केन शक्यते।
इत्युक्त्वा विललापैव ततश्च स्वजनैःसह॥३१॥
ततो लीलावती कन्यां क्रोडे कृत्वा रुरोदह॥
ततः कलावती कन्या नष्टे स्वामिनिदुः खिता॥३२॥
गृहीत्वापादुके तस्यानुगतुंचमनोदधे॥
कन्यायाश्चरितं दृष्ट्वा सभार्यः सज्जनोवणिक्॥३३॥
अतिशोकेनसंतप्तश्चिन्तयामास धर्मवित्॥
हृतं वा सत्यदेवेन भ्रान्तोऽहं सत्यमायया॥३४॥
सत्यपूजां करिष्यामि यथाविभवविस्तरैः॥
इति सर्वान् समाहूय कथयित्वा मनोरथम्॥३५॥
नत्वा च दण्डवद् भूमौसत्यदेवं पुनःपुनः॥
ततस्तुष्टः सत्यदेवो दीनानां परिपालकः॥३६॥
जगाद वचनंचैनं कृपया भक्तवत्सलः॥
त्यक्त्वा प्रसादं ते कन्यापतिं द्रष्टुं समागता॥३७॥
अतोऽदृष्टोऽभवत्तस्याः कन्यकायाः पतिर्ध्रुवम्॥
गृहं गत्वा प्रसादं च भुक्त्वा साऽऽयाति चेत्पुनः॥३८॥
लब्धभर्त्री सुता साधो भविष्यति न संशयः॥
कन्यका तादृशं वाक्यं श्रुत्वा गगनमण्डलात्॥३९॥
क्षिप्रं तदा गृहं गत्वा प्रसादं च बुभोज सा॥
सा पश्चात् पुनरागम्य ददर्श सुजनं पतिम्॥४०॥

ततःकलावती कन्या जगाद पितरं प्रति।।
इदानीं च गृहं याहि विलम्बं कुरुषे कथम्।।४१।।
तच्छुत्वा कन्यकावाक्यं संतुष्टोऽभूद्वणिक्सुतः।।
पूजनं सत्यदेवस्य कृत्वा विधिविधानतः।।४२।।
धनैर्बन्धुगणैः सार्द्धं जगाम निजमन्दिरम्।।
पौर्णमास्यां च संक्रान्तौ कृतवान्सत्यपूजनम्।।४३।।
इलहोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ।।
अवैष्णवानामप्राप्यं गुणत्रयविवर्जितम्।।४४।।
इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रतकथायां चतुर्थोऽध्यायः।।४।।

पंचमोऽध्याय

सूत उवाच

अथान्यच्च प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनिसत्तमाः।।
आसीत्तुङ्ध्वजो राजा प्रजापालनतत्परः।।१।।
प्रसादं सत्यदेवस्य त्यक्त्वा दुःखमवाप सः।।
एकदा स वनं गत्वा हत्वा बहुविधान्पशून्।।२।।
आगत्य वटमूलं च दृष्ट्वा सत्यस्य पूजनम्।।
गोपाः कुर्वंति संतुष्टा भक्तियुक्ताः संबाधवाः।।३।।
राजा दृष्ट्वा तु दर्पेण न गत्वा न ननाम सः।।
ततो गोपगणाः सर्वे प्रसादं नृपसन्निधौ।।४।।
संस्थाप्य पुनरागत्य भुक्त्वा सर्वे यथेप्सितम्।।
ततः प्रसादं संत्यज्य राजा दुःखमवाप सः।।५।।
तस्य पुत्रशतं नष्टं धनधान्यादिकं च यत्।।
सत्यदेवेन तत्सर्वं नाशितं मम निश्चितम्।।६।।
अतस्तत्रैव गच्छामि यत्र देवस्य पूजनम्।।
मनसा तु विनिश्चित्य ययौ गोपालसन्निधौ।।७।।
ततोऽसौ सत्यदेवस्य पूजां गोपगणैःसह।।
भक्तिश्रद्धान्वितो भूत्वा चकारविधिना नृपः।।८।।
सत्यदेव प्रसादेन धनपुत्रान्वितोऽभवत्।।
इह लोके सुखं भुक्त्वा चांते सत्यपुरं ययौ।।९।।

य इदं कुरुते सत्यव्रतं परमदुर्लभम्।।
शृणोति च कथां पुण्यां भक्तियुक्तः फलप्रदाम्।।१०।।
धनधान्यादिकं तस्य भवेत्सत्यप्रसादतः।।
दरिद्रो लभते वित्तं बद्धी मुच्येत बंधनात्।।११।।
भीतो भयात्प्रमुच्येत सत्यमेव न संशयः।।
ईप्सितं च फलं भुक्त्वा चांते सत्यपुरं व्रजेत्।।१२।।
इति वै कथितं विप्राः सत्यनारायणं व्रतम्।।
यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः।।१३।।
विशेषतः कलियुगे सत्यपूजा फलप्रदा।।
केचित्कालं वदिष्यंति सत्यमीशं तमेवच।।१४।।
सत्यनारायणं केचित्सत्यदेवं तथापरे।।
नानारूपधरो भूत्वा सर्वेषामीप्सितप्रदः।।१५।।
भविष्यति कलौ सत्यव्रतरूपी सनातनः।।
श्रीविष्णुना धृतं रूपं सर्वेषामीप्सितप्रदम्।।१६।।
य इदं पठते नित्यं शृणोति मुनिसत्तमाः।।
तस्य नश्यन्ति पापानि सत्यदेवप्रसादतः।।१७।।
व्रतं यस्तु कृतं पूर्वं सत्यनारायणस्य च।।
तेषां त्वपरजन्मानि कथयामि मुनीश्वराः।।१८।।
सतानंदो महाप्राज्ञः सुदामा ब्राह्मणो ह्यभूत्।।
तस्मिन् जन्मनि श्रीकृष्णं ध्यात्वा मोक्षमवाप ह।।१९।।
काष्ठभारवहो भिल्लो गुहराजो बभूव ह।।
तस्मिञ्जन्मनिसंसेव्य रामं मोक्षं जगाम वै।।२०।।
उल्कामुखो महाराजो नृप दशरथोऽभवत्।।
श्रीरङ्गनाथं संपूज्य श्रीबैकुण्ठं तदाऽगमत्।।२१।।
धार्मिकः सत्यसन्धश्च साधुर्मोरध्वजोऽभवत्।।
देहार्धं क्रकचैश्छित्त्वा दत्त्वा मोक्षमवाप ह।।२२।।
तुङ्गध्वजो महाराजः स्वायंभुरभवत्किल।।
सर्वान्भागवतान् कृत्वा श्री वैकुण्ठं तदाऽगमत्।।२३।।
(बन्देवेदांतकर्पूरचामीकरकरण्डकम्।।
रामानुजार्यमार्याणां चूडामणिमहर्निशम्।।१।।)

इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रतकथायां पञ्चमोऽध्यायः।।५।।

।। सर्व संक्रान्ति व्रत ।।

सूर्य जब राशी छोड़कर वह दूसरी राशि पर प्रवेश करता है तब अयन (गमन) कहा जाता है। जिस राशि पर सूर्य पहुंचता है। उस राशि की संक्रांति होती है वह बारह होती है। जिस राशि पर सूर्य पहुंचता है उसमें पुण्यकाल संक्रांति का इस प्रकार है–

मेष की संक्रांति में पहले और पीछे की १५ घड़ी वृष की पहली १५ घड़ी, मिथुन की पहली १६, कर्क की पहली ३०, सिंह की पहली १६ कन्या की पहली १६, तुला की पीछे की १६, वृश्चिक में पहली १६, धनु की पहली १६, मकर की पीछे की ४०, कुंभ की पहली १६, मीन की पीछे १६ घड़ी तक पुण्यकाल रहता है। (व्रतराज) मेष की संक्रांति का पुण्यकाल धर्म सिन्धु के अनुसार पहली और पिछली १० घड़ी का पुण्यकाल बताया गया है। संक्रांति व्रत एक वर्ष पर्यन्त हर संक्रांति को किया जाता है तथा सूर्य पूजन का इसमें विधान शास्त्रों ने बताया है।

संक्रांति व्रत करने वाला गन्धर्वों से पूजित होता है। पुनर्जन्म होने पर सुयोग्य राजा सपत्लिंक सुयोग्य पुत्रों वाला होता है बैरी पर विजय होती है। सक्रांति व्रत करने से जन्म-जन्मातर सुखी रहता है। रूप, यौवन, सम्पति, आयु, आरोग्य लक्ष्मी तेज भर्ता पुत्रादि व्याधि रहित होकर बड़ी उम्र का तेजस्वी और कीर्ति वाला होता है। वर्षउपरान्त उद्यापन के लिए अष्टदल कमल बनाकर सूर्य की सुवर्ण प्रतिमा बनाकर इसका पूजन करें।

।। सर्व संक्रान्ति व्रतोद्यापनम् ।।

संकल्पः-

अद्यैत्यादि० मम अग्निष्टोमादि फलप्राप्ति पूर्वक- सप्त जन्म-धन धान्य-पुत्र-पौत्र विविध भोग प्राप्ति द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं आचारित संक्रांति व्रतोद्यापनं करिष्ये।

संकल्प कर अन्य गणेशादि देवताओं का पूजन कर अष्ट कमल के ऊपर सूर्य की सुवर्ण प्रतिमा को स्थापित कर पूजन करें।

सूर्य ध्यान :-

नमोनमस्तेऽस्तु सदा विभावसो।
सर्वात्मने सप्त हयाय भानवे।।
अनंन्त शक्ति र्मणि भूषणेन।
ददस्व भक्तिं मम मुक्ति भव्याम।।

आवाहन :-

आवाहयेतं द्विभुजं दिनेशं सप्ता श्ववाहंद्युमणि ग्रहेशं।
सिन्दूरवर्ण प्रतिमावभासं भजामि सूर्यं कुलवृद्धि हेतवः।।

अर्घ्य :-

(चन्दन जल पुष्प युक्त)

नमः सहस्र किरण सर्वव्याधि विनाशन।
गृहाणार्घ्य मयादत्तं संज्ञाया सहितो रवे।।
नमो भगवते तुभ्यं नमस्ते जातवेद से।
दत्तमर्घ्यं मया भानो त्वं गृहाण नमोस्तुते।।

द्वादश मास के सूर्य- १. वैशाख तपन २. ज्येष्ठ- इन्द्र। ३. अषाढ़ रवि। ४. श्रावण- गभस्ति। ५. भाद्रपद- यम। ६. आश्विन- हिरण्य रेता ७. कार्तिक-दिवाकर ८. मार्गशीर्ष मित्र। ९. पौष विष्णु १०. माघ- वरुण ११. फाल्गुन-सूर्य १२. चैत्र-भानू।

पूजन :-

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्त मानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यंच।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

अष्ट दलों के अष्ट सूर्य पूजन मंत्र :-

पूर्व- आदित्याय नमः। आग्येयाम्- सोमार्चिसे नमः
१. याम्याम्- ऋङ् मण्डलाय नमः। नैऋते- सवित्रे नमः।
पश्चिमे तपनाय नमः। वायव्याम्- मित्राय नमः। ऐशान्याम्- विष्णवे नमः॥

देवताओं को स्थापित कर पुरुष सूक्त से पूजन कर लेवें।

प्रार्थना :-

सप्ताश्वं समारुह्यं अरुण सारथि उत्तमम्।
श्वेत पद्म धरं देव त्वां सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥
एक चक्र रथोयस्य दिव्य कनक भूषितः।
सः मे भवतु सुप्रीतः पद्म हस्त दिवाकरः॥

अग्नि स्थापित कर अन्य आवाहित देवताओं को आहुति प्रदान कर सूर्य मंत्र से १०८ खीर की आहुति देवें :-

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यं च।
हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

होम कार्य पूर्ण कर आचार्य को वस्त्रादि प्रतिमा गोदान सोपस्कर शय्यादान दे बारह ब्राह्मणों को खीर युक्त भोजन देकर दक्षिणा युक्त १६ घड़े देकर आशीर्वाद ग्रहण करें।

॥ इति सर्वसंक्राति व्रतोद्यापनम् ॥

।। प्रदोष व्रत ।।

श्रावण या कार्तिक मास में शनिवार के दिन सायंकालीन त्रयोदशी को यह व्रत किया जाता है। प्रदोष समय शिव की पूजा की जाती है। इस दिन विशेष लिंग का पूजन करने का विधान है। शिव को एक हजार दीपक भी दिये जाते हैं। यदि न हो सके तो एक सौ अथवा बत्तीस दीपक घी से देने चाहिए। सौ परिक्रमा करनी चाहिए इस व्रत में वृष के ऊपर आरूढ़ शिव की प्रतिमा स्वर्ण अथवा चांदी की बनावें आठ कलशों की स्थापना करनी चाहिए। विधि पूर्वक पूजन कर रात्री जागरण करें। सन्तान वृद्धि के लिए शुक्ल त्रयोदशी शनिवार, ऋणमोचन के लिए त्रयोदशी मंगलवार सौभाग्य स्त्री और समृद्धि के लिए त्रयोदशी शुक्रवार, और आरोग्यता के लिए त्रयोदशी रविवार के दिन व्रतोद्यापन करें। व्रत एक वर्ष तक प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी को किया जाता है। इस व्रत को करने से ऋण रोग, दारिद्र्य, पाप क्षुत, अपमृत्यु भय शोक मनस्ताप नष्ट होते हैं तथा अन्त में शिवलोक की प्राप्ति होती है तथा भगवान आशुतोष तुरन्त ही प्रसन्न होते हैं –

अतः प्रदोषे शिव एक एवं पूज्योऽथ नान्ये हरिपद्मजाद्याः।
तस्मिन्महेशे विधिनेज्यमाने सर्वे प्रसीदंती सुराधिनाथाः।।

।। प्रदोष व्रतोद्यापनम् ।।

संकल्पः-

ॐ अद्येत्यादि० ममात्मनः समस्त पाप क्षय पूर्वक-आयु- आरोग्य-ऐश्वर्य-पुत्र पौत्रादि अभिवृद्यर्थं श्रीमद् उमामहेश्वर प्रीत्यर्थं आचरित प्रदोष व्रतोद्यापनं करिष्ये।।

गणेशादि देवताओं का पूजन कर लिंग भद्र के देवताओं का पूजन मध्य में ताम्र के कलश में चावल का पूर्णपात्र रख सुवर्ण की बनाई उमा महेश्वर की प्रतिमा स्थापित कर वृष स्थापित कर पूजन करें।

ध्यान :-

ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारु चन्द्रावतंसं।
रत्नाकल्पोज्ज्वलागं परशुमृगवरा भीतिहस्तं प्रसन्नम्।।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानं।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

आवाहन :-

येह्येहि त्वमुमाकान्त स्थानेचात्र स्थिरो भव।
यावद् व्रतं समाप्येत कृपया दीन वत्सल।।

आसन :-

आसनेस्मिन् उमाकान्त सुखस्पर्शे सुनिर्मले।
उपविश्य मृडेदानीं सर्वशान्ति प्रदो भव।।

पाद्यः-

पाद्यं च ते मया दत्तं पुष्पगन्ध समन्वितम्।
गृहाण देव देवेश प्रसन्नो वरदो भव।।

अर्घ्य :-

ताम्रपात्र स्थित तोयं फलगन्धादि शोभितम्।
अर्घ्यं गृहाण देवेश मया दत्तंहि भक्तितः।।

आचमन :-

शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम्।
आचम्यतां सुरश्रेष्ठ मयादत्तं हि भक्तितः।।

पय स्नान :-

गोक्षीर धामन्देवदेवेश गोक्षीरेण मया कृतम्।
स्नपनं देव देवेश गृहाण परमेश्वर।।

दधि स्नान :-

दध्या चैव मया देव स्वपनं क्रियते तव।
गृहाण भक्त्या दत्तं मे सुप्रसन्नो भवाव्यय।।

घृत स्नान :-

सर्पिषा देव देवेश स्नपं क्रियते मया।
उमाकान्त गृहाणेदं श्रद्धया सुर सत्तम॥

मधु स्नान :-

इदं मधु मयादत्तं तवतुष्टयर्थ मेव च।
गृहाण शंभो त्वं भक्त्या ममशान्तिप्रदोभव॥

शर्करा स्नान :-

सितया देव देवेशं स्नपनं क्रियते मया।
गृहाण शम्भो मे भक्त्या सुप्रसन्नोभव प्रभो॥

स्नानीय जल :-

कोवदी नर्मदा वेणी तुंग भद्रा सरस्वती।
गंगा च यमुना चैव ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम्॥

वस्त्र :-

एतद्वासोमया दत्तं सोत्तरीयं सुशोभनम्।
गृहाण त्वं सुर श्रेष्ठ मम वासः प्रदोभव॥

यज्ञोपवीत :-

यज्ञोपवीतं सौवर्ण मयादत्तं च शङ्कर।
गृहाण परया तुष्टा तुष्टिदोभव सर्वदा॥

चन्दन :-

सुगन्धं चन्दनं दिव्यं मयादत्तं तव प्रभो।
भक्त्या परमया शंभो सुभगं कुरु मां भव॥

अक्षतः-

अक्षता स्तण्डुलाः शुभ्राः कुंकुमाक्ताः सुशोभनाः।
मया निवेदिताः भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

पुष्प :-

मालती चम्पकादीनि कुमुदान्युत्पलानि च।
विल्वपत्राणि पूजार्थं स्वीकुरुत्वमुमापते॥

आवरण पूजा :-

ॐ भवाय नमः। ॐ महादेवाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ नीलकण्ठाय नमः। ॐ शशिमौलिने नमः। ॐ उग्राय नमः। ॐ उमाकान्ताय नमः। ॐ त्र्यम्बकाय नमः। ॐ त्रिपुरुषाय नमः। ॐ कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ नीलकण्ठाय नमः। ॐ शर्वेश्वराय नमः।

विल्वपत्र :-

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रंच त्रिधायुधम्।
त्रिजन्म पाप संहारं विल्व पत्रं शिवार्पणम्।।
अमृतोद्भव श्रीवृक्षं शंकरस्य सदा प्रियम्।
तत्ते शम्भो प्रयच्छामि विल्वपत्रं सुरेश्वर।।
त्रिशाखैः विल्वपत्रै श्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
तव पूजां करिष्यामि अर्चयै परमेश्वर।।
गृहाण विल्वपत्राणि सुपुष्पाणि महेश्वर।
सुगन्धीनि भवानीश शिवत्वं कुसुम प्रिय।।

धूप :-

धूपं विशिष्टं परमं सर्वौषधि विजृम्भितम्।
गृहाण परमेशान ममोपरि दयां कुरु।।

दीप :-

दीपं च परमं शम्भो घृतवर्तिसुयोजितम्।
दत्तं गृहाण देवेश ममज्ञान प्रदोभव।।

नैवेद्य :-

शाल्योदन घृतंपायसादिसमान्वितम्।
नैवेद्यं विविधं दत्तं भक्त्या मे प्रतिगृह्यताम्।।

जल :-

नैवेद्य मध्ये पानीयं मया दत्तं हि भक्तितः।
स्वीकुरुष्व महादेव प्रसन्नो भव सर्वदा।।

ताम्बूल :-

कर्पूरैलालवङ्गादि पूगीफल समन्वितम्।
ताम्बूलं कल्पितं भक्त्या गृहाण गिरिजाप्रिय॥

फलं :-

इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे ये सफलावाप्ति भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

दक्षिणा :-

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
दक्षिणा काञ्चनी देव स्थापिता मे तवाग्रतः॥

आरती :-

दीपावली मया दत्ता सवर्तिघृत संयुता।
आरार्तिक प्रदानेन मम तेजः प्रदोभव॥

प्रार्थना :-

मृत्युंजयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शंभवे।
अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः॥

प्रदक्षिणा :-

यानिकानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

मंत्रपुष्पांजिल :-

सेवान्तिका बकुलचम्पकपाटलाब्जै पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पै।
विल्व प्रवालतुलसीदलमालतीभिस्त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद॥

प्रथम दिन कार्य विसर्जन कर द्वितीय दिन प्रातः नित्यकर्म आदि से निवृत्त होकर पुनः पूर्ववत् देवताओं का पूजन कर अग्नि प्रतिष्ठित कर पलाश युक्त विल्वपत्र तिल पायस आज्य द्रव्य आदि से आवाहित देवताओं का हवन कर 108 आहुति गौरी के निमित देवें:-

ॐ गौरीर्मिमाय सालिलानि तक्षत्येक्तपदी द्विपदी साच चतुष्पदी। अष्टापदीनवपदी। वभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् स्वाहा।।

108 शिव आहुति शिव के लिए निम्न मंत्र से देवें-

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम्।
उर्वारुक मिववन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

लिंगतो भद्र देवता को भी आहुति देकर हवन कार्य पूर्ण करें। आचार्य को वस्त्र अलंकार चन्दनादि से पूजन कर पयस्विनी गो सोपस्कर शय्या प्रतिमा देकर यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन दक्षिणा से संतुष्ट कर बान्धवों के साथ भोजन कर आशीर्वाद ग्रहण करें।

।। इति प्रदोष व्रतोद्यापनम् ।।

।। वर्ष के बारह सूर्यों का पूजन विधान।।

सूर्य की प्रसन्नता के लिए माणिक्य गेंहूं धेनु लालवस्त्र गुड़ सुवर्ण ताम्बा लाल चन्दन और कमल पुष्प का दान हर मास करना चाहिए।

मास	सूर्यनाम	अर्घ्य	नैवेद्य	प्रासन हेतु	पूजन में विशेष
मार्गशीर्ष	मित्र	नारियल	गुड़ घी मिले तुण्डल	तुलसी के तीन पत्ते	ब्राह्मण को दक्षिणा भोजन
पौष	विष्णु	बीजपुर	कृसर	तीनपल घी	ब्राह्मण को भोजन घी
माघ	वरुण	कदली फल	कदली फल	तीन मुठ्ठी तिल	गुड़ तिल भोजन
फाल्गुन	सूर्य	जंभीर	घी दधि	तीन पल दधि	दधि तण्डुल
चैत्र	भानु	अनार	घी पूरी	तीन पल दूध	मिष्ठान
वैशाख	तपन	दाख	घी माष अन्न	गोमय	घी अन्न
ज्येष्ठ	इन्द्र	आम	चिपिटकर चिउड़ा	तीन अंजली जल	दधि ओदन
आषाढ	रवि	जातिफल	सतुवा पूरी	तीन मिर्च	चिउडा
श्रावण	गभस्ति	त्रपुसि	सतुवा पूरी	तीन मुठ्ठी सत्तु	भोजन
भाद्रपद	यम	कुष्माण्ड	घी ओदन	गोमूत्र	भोजन
आश्विन	हिरण्यरेता	अनार	शर्कर	खांड	शाली शर्करा
कार्तिक	दिवाकर	रंभाफल	पायस	पायस	पायस पान

।। रविवार व्रत ।।

मार्गशीर्ष आदि के रविवार से वर्ष पर्यन्त यह व्रत किया जाता है अथवा वारह व्रत करने चाहिए तथा प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के रविवार से करें। उद्यापन के लिए एक माष स्वर्ण प्रतिमा सूर्य की बनायें चांदी का रथ सूर्य के लिए बनाकर द्वादश दलों का भद्र बनावें। मध्य में कलश ताम्रमय रख पूर्णपात्र को उसके ऊपर स्थापित करें। भद्र में द्वादश सूर्य का पूजन कर बीच के सहस्र किरण के साथ संज्ञा का पूजन करना चाहिए। इस व्रत के प्रभाव से विद्या राज्य सुख सन्तान कुमारी को पति रोग से मुक्ति बन्धन मुक्ति हो जाती है।

सर्वदानेन तपसा यत्पुण्यं समवाप्तये।
प्रातः स्नानेन यत्पुण्यं तत्पुण्यं रविवासरे।।

अर्थात रविवार के व्रत प्रभाव से सब दानों का पुण्य तपस्या तथा प्रातः स्नान से जो पुण्य मिलता है वह रविवार के व्रत के प्रभाव से प्राप्त होता है।

प्रत्येक मास में अलग-अलग नाम से सूर्य का पूजन तथा अर्घ्य नैवेद्य आदि दिया जाता है।

।। रविवार व्रतोद्यापनम् ।।

अद्यैत्यादि० मम समस्त रोग निरासार्थम् आयुवृद्ध्यर्थं सकल कामना सिद्ध्यर्थं द्वादश वर्ष पर्यन्त एक वर्ष पर्यन्त वा श्री सूर्य नारायण प्रीत्यर्थं सूर्य व्रताङ्गत्वेन विहित सूर्य पूजन महं करिष्ये।

ध्यान :-

तेजोरूपं सहस्रांशुं सप्ताश्वरगथं वरम्।
द्विभुजं वरदं पद्मलाञ्छनं सर्व कामदम्।।

आवाहनः-

आगच्छभगवन् सूर्य मण्डले चास्थिरो भव।
यावत् पूजा समाप्यैत तावत्त्वं सन्निधौ भव॥

आसन :-

हेमासनं मह दिव्यं नानारत्न विभूषितम्।
दत्तं में गृहतां देव दिवाकर नमोऽस्तुते॥

अर्घ्य :-

भो भो सूर्य माहभूत ब्रह्म विष्णु स्वरूपिणे।
अर्घ्यमंजलिनां दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

आचमन :-

गंगादि तीर्थजं तोयं जाती पुष्पैच वासितम्।
ताम्र पात्रे स्थितं दिव्य गृहाणमाचमनीयकम्॥

स्नान :-

जाह्नवी जलमत्यन्तं पवित्र करणं परम्।
स्नानार्थं मयानीत स्नानं कुरु जगत्पते॥

पंचामृतस्नान :-

पयोदधि घृतैश्चैव शर्करामधु संयुतैः।
कृतंमया च स्नपनं प्रीयतां परमेश्वर॥

शुद्ध स्नान :-

गंगा गोदावरी चैव यमुना च सरस्वती।
नर्मदा सिन्धु कावेरी ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम्॥

वस्त्र :-

रक्त पट्ट युगं देव सूक्ष्मतन्तुविनिर्मितम्।
शुद्ध चैव मया दत्तं गृहाण कमलाकर॥

यज्ञोपवीत :-

नमः कमल हस्ताय विश्वरूपाय ते नमः।
उपवातं मया दत्तं तद् गृहाण दिवाकर॥

गन्ध :-

कुंकुमागरू कस्तूरी सुगन्धै श्चन्दनादिभिः।
रक्तचन्दन युक्तं तु गन्धं गृहाण दिवाकर॥

अक्षत :-

रक्तचन्दन समिश्रा अक्षता श्च सुशोभनाः।
मयादतां गृहाण त्वं ग्रहराज प्रभाकर॥

पुष्प :-

जयाकदम्बकुसुम रक्तोत्पल युतानि च।
पुष्पाणि गृहतां देव सर्वकाम प्रदोभव॥

अंगपूजन :-

ॐ मित्राय नमः पादौपूजयामि। ॐ रवये नमः जंघे पूजयामि। ॐ सूर्याय नमः जानुनि पूजयामि। ॐ हिरण्य गर्भाय नमः कटीं पूजयामि। ॐ मरीचये नमः नाभिं पूजयामि। ॐ आदित्याय नमः जठरं पूजयामि॥ ॐ सवित्रे नमः हृदयं पूजयामि। ॐ अर्काय नमः स्तनौ पूजयामि। ॐ भाष्कराय नमः कण्ठं पूजयामि॥ ॐ अर्यम्णे नमः स्कन्धौ पूजयामि। ॐ प्रभाकराय नमः हस्तौ पूजयामि। ॐ अहस्कराय नमः मुखं पूजयामि। ॐ प्रध्नाय नमः नासिकां पूजयामि। ॐ जगदेकचक्षुषे नमः नेत्रे पूजयामि। ॐ सवित्रे नमः .कर्णौ पूजयामिं ॐ त्रिगुणात्म धारिणे नमः ललाटं पूजयामि। ॐ विरञ्च नारायण शंकरात्मने नमः शिरः पूजयामि। ,ॐ तिमिर नासिने नमः सर्वाङ्गं पूजयामि॥

धूप :-

दशांगो गुग्गुलोदभूतः कालागुरु समन्वितः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

दीप :-

कार्पासवर्तिसंयुक्तं गोघृतेन समन्वितः।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्ये तिमिरापह॥

नैवेद्य :-

पायसं घृत संयुक्तं नानापक्वानसंयुतम्।
नैवेद्यं च मयादतं शान्ति कुरु दयानिधे॥

आचमन :-

कर्पूरं वासित तोयं मन्दाकिन्या समाहृतम्।
आचम्यतां जगन्नाथ मयादत्तं हि भक्तितः॥

करोद्वर्तन :-

मलयाचल संभूतं कर्पूरेण समन्वितम्।
करोद्वर्तनकं चारु गृहतां जगतः पते॥

फल :-

इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्ति भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ताम्बूल :-

एलालवंग कर्पूर खादिरैश्च सपूपकैः।
नागवल्ली दलैर्युक्तं ताम्बूलंप्रतिगृह्यताम्॥

दक्षिणा :-

दक्षिणां कांचनीं देव स्थापितां च तवाग्रतः।
गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रभाकरनमोऽस्तुते॥

नीराजन :-

पंचवर्ति समायुक्तं सर्वमंगलदायकम्।
नीराजनं गृहाणेदं सर्वसौख्य करोभव॥

प्रदक्षिणां :-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
विलयं यान्ति तानीह प्रदक्षिण पदे पदे॥

प्रार्थना :-

नमः पंकज हस्ताय नमः पंकज मालिने।
नमः पंकज नेत्राय भाष्कराय नमो नमः॥

हवन :-

अग्नि प्रतिष्ठापित कर अवाहित गणपति आदि देवताओं को एक एक आहुति देकर भगवान सूर्य को एक सौ आठ आहुति खीर द्वारा मंत्र से देवें।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमान्नो निवेशयन्न मृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ होम कार्य पूर्ण कर व्रत पूर्ति के लिए गौदान वस्त्र सोपस्कर युक्त प्रतिमा को देकर बारह ब्राह्मणों को भोजन से सन्तुष्ट करें।

॥ इति रविवार व्रतोद्यापनम्॥

रविवार की आरती

कहुँ लगि आरती दास करेंगे, सकल जगत जाकी जोत विराजे॥
सात समुद्र जाके चरणानि बसे, कहा भये जल कुम्भ भरे हो राम।
कोटि भानु जाके नख की शोभा, कहा भयो मन्दिर दीप धरे हो राम।
भार अठारह रामा बलि जाके, कहा भयो शिर पुष्प धरे हो राम।
छप्पन भोग जाके नितप्रति लागे, कहा भयो नैवेद्य धरे हो राम।
अमित कोटि जाके बाजा बाजे, कहा भयो झनकार करे हो राम।
चार वेद जाके मुख की शोभा, कहा भयो ब्रह्म वेद पढ़े हो राम।
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, नारद मुनि जाको ध्यान धरें हो राम।
हिम मंदार जाको पवन झकोरें, कहा भयो शिर चँवर ढुरे हो राम।
लख चौरासी वन्धे छुड़ाये, केवल हरियश नामदेव गाये॥ हो रामा॥

।। सूर्याष्टकम् ।।

सूर्याष्टक से ज्ञान विज्ञान सन्तान तथा मोक्ष के दाता भगवान सूर्य पाठ करने वाले पर प्रसन्न होते हैं। पाठ करने से सन्तान धन की प्राप्ति होती है। परन्तु रविवार के दिन मधुपान, स्त्री, तेल, मांस का त्याग कर देना चाहिए।

आदि देव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भाष्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते।।१।।
सप्ता श्वरथमारुढ़ प्रचण्डं कश्यपात्मज।
श्वेतपद्म धरं देव तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।२।।
लोहितं रथमारूढं सर्वलोक पितामहम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।३।।
त्रैगुण्यं च महाशूरं महाविष्णु महेश्वरम्।
महापापं हरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।४।।
बृहितं तेजः पुजं च वायुमाकाशं मेव च।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।५।।
बन्धूक पुष्प संकाशं हारकुण्डल भूषितम्।
एक चक्र धरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।६।।
तं सूर्य जगत्कर्तारं महातेजः प्रदीपनम्।
महापाप हरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।७।।
तं सूर्य जगतां नाथं ज्ञान विज्ञान मोक्षदम्।
महापाप हरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।८।।
सूर्याष्टकं पठे नित्यं ग्रहपीड़ा प्रणाशनम्।
अपुत्रो लभते पुत्रं दरिद्रो धनवा न् भवेत्।।९।।
आमिषं मधुपाने च यः करोति रवेर्दिने।
सप्तजन्म भवेद्रोगी जन्मजन्म दरिद्रता।।१०।।
स्त्री तैल मधुमासांनियस्त्य जेतु रवेर्दिने।
न व्याधिः शोक दारिद्र्यं सूर्य लोकं स गच्छति।।११।।

।। इति सूर्याष्टक स्तोत्रम् ।।

।। सूर्य कवच स्तोत्रम् ।।

यह कवच रक्षात्मक स्तोत्र है। इसके पाठ करने से शरीर की रक्षा होती है। सूर्य का ध्यान करने या भूज पत्र में कवच धारण करने से रोग मुक्ति दीर्घायु तथा सब सिद्धियां बस में होती हैं।

।। याज्ञवल्क्य उवाच ।।

श्रृणुष्व मुनिशार्दूल सूर्यस्य कवचं शुभम्।
शरीरारोग्यदं दिव्यं सर्वसौभाग्य दायकम्।।१।।
देदीप्यमान मुकुटं स्फुरन्मकर कुण्डलम्।
ध्यात्वा सहस्र किरणं स्तोत्रमेतदुदीर येत्।।२।।
शिरो मे भाष्करः पातु ललाटं मेऽमितद्युतिः।
नेत्रे दिनमणिः पातुश्रवणे वासरेश्वर।।३।।
घ्राणं धर्मघृणिः पातु वदनं वेद वाहनः।
जिह्वां मे मानदः पातु कण्ठं में सुरवन्दितः।।४।।
स्कन्धौ प्रभाकरः पातु वक्ष पातुः जनः प्रियः।
पातु पादौ द्वादशात्मा सर्वाङ्गं सकलेश्वर।।५।।
सूर्य रक्षात्मकं स्तोत्रं लिखित्वाभूर्जपत्रकै।
दधाति यः करे तस्य वशगाः सर्व सिद्धयः।।६।।
सुस्नातो यो जपेत्स्म्यग्योऽधीते स्वस्थमानसः।
स रोग मुक्तो दीर्घायुः सुखं पुष्टिं च विंदति ।।७।।

।। इति याज्ञवल्क्य रचित सूर्यकवच स्तोत्रम् कवच ।।

।। सोमवार व्रत ।।

सोमवार का व्रत करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है व्रती धनधान्य से पूर्ण हो पुत्र स्त्री वाला होत है कुल में कोई दरिद्री नहीं होता। निपुत्री को पुत्र तथा बन्ध्या पुत्र वाली होती है

तथा काक बन्ध्या मृतपुत्रा दुर्भगा और रोगिणी को यह व्रत अवश्य ही करना चाहिए।

एवं कृते व्रते सम्यग लभते पुण्यमक्षयम्।
धनधान्य समायुक्तः पुत्रदारैः समन्वितः।।
न कुल जायते तस्य दरिद्री दुः खितोऽपिवा।
अपुत्रो लभते पुत्रं वन्ध्या पुत्रवती भवेत्।।
काकवन्ध्या च या नारी मृतपुत्रा च दुर्भगा।
कन्याप्रसूस्तया कार्यं रोगिभिश्च विशेषतः।।

(स्कन्द पुराण)

भगवान शिव की प्रसन्नता के लिए सोमवार का व्रत चौदह वर्ष आठ या चार वर्ष तक श्रावण, चैत्र वैशाख या मार्गशीर्ष मास के प्रथम सोमवार से व्रत प्रारम्भ कर इन्हीं मासों के शुक्ल पक्ष के सोमवार को व्रत का उद्यापन करना चाहिए। सोमवार के व्रत में बांस के पात्र में चावल, कपूर, मोती, सफेद वस्त्र, घी से भरा घड़ा दान करना चाहिए।

।। सोमवार व्रतोद्यापनम् ।।

आचार्य लिंगतो भद्र का निर्माण करें उसके ऊपर शिव पार्वती तथा नन्दी की स्वर्ण प्रतिमा बनावें गणपत्यादि देवताओं का पूजन कर संकल्प करें :-

ममात्मनः समस्त पाप क्षय पूर्वकं पुत्र-पौत्र-धन-धान्य-ऐश्वर्यादि प्राप्ति द्वारा श्रीमद् उमा महेश्वराभ्यां प्रीतये आचरित सोमवार व्रतोद्यापनं करिष्ये।

ध्यान :-

ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभि चारुचन्द्रावतंसं।
रत्नाकल्पोज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।।

पद्मासीनं समन्तास्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृतिं वसानं।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरंपञ्चवक्त्रंत्रिनेत्रम्॥

शिव प्रतिष्ठापन :-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात॥

गौरी प्रतिष्ठापन :-

ॐ गौरिर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येक्तपदी द्विपदी साचतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी। बभूवुषी सहस्राक्षरा परमेव्योमन स्वाहा॥

नन्दीश्वर प्रतिष्ठापन :-

ॐ वृषभो नतिग्म शृंगोऽन्तर्यूथेषु रोरु वत। मन्थस इन्द्रशं ह्रदे यते सुनोति भावयुः विश्वः स्मादिन्द्र उत्तरः॥

आवाहन :-

नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यांमुत ते नमः॥

आसन :-

ॐ या ते रुद्र शिव तनूरघोरा ऽ पापकाशिनी।
तयानस्तन्वा शन्तमयागिरि शन्ताभिचाकशीहि॥

पाद्य :-

ॐ यामिषुं गिरिशन्तहस्ते विभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरुमाहिꣳ सीः पुरुष जगत्॥

अर्घ्य :-

ॐ शिवेन वचसात्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्व मिज्जगद यक्ष्म ꣳ सुमना असत्॥

आचमन :-

ॐ अद्यवोच दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वान्‌जम्भयन्त्स सर्वाश्चयातु धान्योऽधराचीः परासुवः॥

स्नान :-

ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमंगलः।
ये चैनꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो ऽवैषाꣳहेड ईमहे॥

पंचामृत स्नान :-

ॐ असो योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयातिनः॥

शुद्धस्नान :-

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥

वस्त्र :-

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रात्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥

यज्ञोपवीत :-

विज्य धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां उत।
अनेशन्नस्य या इषवआभुरस्य निषङ्धिः॥

गन्ध :-

ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज॥

अक्षतः-

ॐ परिते धन्वनो हेतिरिस्मान् वृष्णक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥

पुष्प :-

ॐ अव तत्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्राक्ष शतेषु धे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवोनः सुमनाभव॥

अंग पूजन :-

शिवाय नमः पादौ पूजयामि। शंकराय नमः गुल्फौ पूजयामि।
भवहारिणे नमः जानुनी पूजयामि। शूलपाणये नमः।

कटीं पूजयामि। शंभवे नमः गुह्यं पूजयामि। महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि। विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि। सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वोपूजयामि। स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि। नीलकण्ठाय नमः कंठं पूजयामि। देवाय नमः मुखं पूजयामि। त्रिनेत्राय नमः नेत्रत्रयं पूजयामि। शर्वाय नमः ललाटं पूजयामि। शशि भूषणाय नमः शिरः पूजयामि। देवाधिपाय नमः शवाङ्गं पूजयामि।

धूप :-

नमस्त आयुधाया नातताय धृष्णवे।
उभाभ्या मुत ते नमोबाहुभ्यां तव धन्वने।।

दीप :-

मानो महान्त मुत मानो अर्भकं मान उक्षन्त मुतमान उक्षितम्।
मनोवधीः पितरं मोत मातरं मानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः।।

नैवेद्य :-

ॐ मान स्तोके तनये मान आयुषि मनो गोषुमानो अश्वेषु रीरिषः।।
मानोवीरान् रुद्र भामिनो वधीः र्हविष्मन्तः सदमि त्वा हवामहे।।

प्रार्थना :-

मन्दारमाला कुलितालकायै कपालमालांकित शेखराय।
दिव्याम्बराय च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।

इस प्रकार पूजन कर चन्द्रमा को अर्घ्यादि दें। हवन कार्य प्रारम्भ कर गणपत्यादि देवताआं को आहुति दें त्र्यम्बकं यजामहे मंत्र तथा गौरीर्मिमाय० मंत्र से प्रत्येक को एक सौ आठ आहुति खीर की देकर अन्य आवाहित देवताओं को आहुति दें। पूर्णाहुति पर्यन्त हवन कर कुंभ सहित प्रतिमा आचार्य को देकर प्रार्थना करें:-

शंभो प्रसीद देवेश सर्व लोकेश्वर प्रभो।
तव रूप प्रदानेन पूर्णा सन्तु मनोरथाः।।

व्रत की सम्पूर्ति हेतु आचार्य को सवत्सा गोदान दें यथा शक्ति ब्राह्मणों को खीर भोजन दक्षिणा से प्रसन्न कर आशीर्वाद ग्रहण करें।

।। इति सोमवार व्रतोद्यापनम्।।

सोमवार की आरती

आरती करत जनक कर जोरे। बड़े भाग्य रामजी घर आए मोरे।।
जीत स्वयंवर धनुष चढ़ाये। सब भूपन के गर्व मिटाए।।
तोरि पिनाक किए दुई खण्डा। रघुकुल हर्ष रावण मन शंका।।
आई है लिए संग सहेली। हरिष निरख वरमाला मेली।।
गज मोतियन के चौक पुराए। कनक कलश भरि मंगल गाए।।
कंचन थार कपूर की बाती। सुर नर मुनि जन आये बराती।।
फिरत भांवरी बाजा बाजे। सिया सहित रघुबीर विराजे।।
धनि-धनि राम लखन दोऊ भाई। धनि-धनि दशरथ कौशल्या माई।।
राजा दशरथ जनक विदेही। भरत शत्रुघ्न परम सनेही।।
मिथिलापुर में बजत बधाई। दास मुरारी स्वामी आरती गाई।।

।। मंगलवार व्रत ।।

वैशाख श्रावण या मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष के मंगलवार को जब चन्द्र अनुकूल हो व्रत प्रारम्भ कर वर्ष अथवा बीस वर्ष तक करना चाहिए। मंगलवार के व्रत करने वाले को कभी ग्रह पीड़ा नहीं होती। भूत प्रेत बेताल तथा शाकिनी कभी कष्ट नहीं पहुंचा सकती दारिद्र्य भी नष्ट हो जाता है और सन्तान की वृद्धि भी होती है।

तस्य वै ग्रहपीड़ा च न भवेत्तु कदाचन।
भूतवेताला शाकिन्यो न भवन्ति च हिंसकाः।

दारिद्र्य नश्यते तस्य पुत्रपौत्रेश्च वर्द्धते॥ (पद्म पुराण)

मंगलवार के दिन अरुणोदय में उठकर प्रातः कालीन कार्य कर अपामार्ग के काष्ट से दांतुन कर नदी आदि में यथाविधि स्नान कर सन्ध्यादि क्रिया पूर्ण कर रक्त वस्त्र धारण करें। तथा मंगल पूजन स्वर्ण प्रतिमा में करें। पूजन में यंत्र निर्माण कर यंत्र में मंगल के इक्कीस नाम से पूजन करें।

मंगल की प्रसन्नता के लिए मूंगा, गेहूं, मसूर, रक्त, वृष, गुड़, सुवर्ण और लाल वस्त्र का दान करना चाहिए।

॥ मंगलवार व्रतोद्यापनम् ॥

अद्यैत्यादि० मम ऋणाद्यनुत्तिपूर्वकं धनधान्य पुत्रपौत्राद्यभीष्ट मनोरथ सिद्धि द्वारा श्री भौमदेवता प्रीत्यर्थं भौम व्रतं तत्पूजनं च करिष्ये।

भौम यंत्र निर्माण कर क्रम संख्या 1 से 21 तक भौम के निम्न नामों से पूजन करें :-

१. ॐ मंगलाय नमः **१. ॐ भूमि पुत्राय नमः**
३. ॐ ऋण हंत्रे नमः **४. ॐ धन प्रदाय नमः।**
५. ॐ स्थिराशनाय नमः **६. ॐ महाकायाय नमः।**
७. ॐ सर्वकामविरोधकाय नमः **८. ॐ लोहिताय नमः**
९. ॐ लोहितांगाय नमः **१०. ॐ सामगानां कृपा कराय नमः**
११. ॐ धरात्मजाय नमः **१२. ॐ कुजाय नमः**
१३. ॐ रक्ताय नमः **१४. ॐ भूमि पुत्राय नमः**
१५. ॐ भूमिदाय नमः **१६. ॐ अंगारकाय नमः**
१७. ॐ यमाय नमः **१८. ॐ सर्वरोग प्रहारिणे नमः**
१९. ॐ सृष्टि कर्त्रे नमः **२०. ॐ प्रहर्त्रे नमः**
२१. ॐ सर्वकामफल प्रदाय नमः।

यंत्र का पूजन गन्धाक्षत पुष्पादि से कर देवें।

।। भौम पूजनम् ।।

ध्यान :-

भौम देवेश ते भक्त्या करिष्येव्रतमुत्तमम्।
ऋणव्याधि विनाशाय धन संतान हेतवे।।
रक्तमाल्याम्बर धरः शक्तिशूलगदाधर।
चतुर्भुजोमेष गमो वरदः स्यात् धरणी सुतः।।

आवाहन :-

एह्येहि भगवन् भौम अंगारकमहाप्रभो।
त्वयिसर्वं समायातं त्रैलोक्यं सचराचरम्।।
ॐ अग्निमूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपाꣳ रेता ꣳ सिजिन्वति।।

मंगल का पूजन आसन पाद्य आचमन पंचामृत, शुद्धस्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प से कर अंग पूजन करें।

अंग पूजन :-

मंगलाय नमः पादौ पूजयामि। भूमि पुत्राय नमः गुल्फौ पूजयामि। ऋणहर्त्रे नमः। जंघे पूजयामि। धन प्रदाय नमः जानुनि पूजयामि। स्थिराशनाय नमः उरू पूजयामि। लोहिताय नमः उदरं पूजयामि। लोहिताक्षाय नमः हृदयं पूजयामि। सामगानां कृपाकराय नमः करौ पूजयामि। धरात्मजाय नमः। वाहुंपूजयामि। कुजाय नमः स्कन्धौपूजयामि। भौमाय नमः कण्ठं पूजायामि। भूतिदाय नमः हनुं पूजयामि। भूमिनन्दनाय नमः मुखं पूजयामि। अंगारकाय नमः नासिकै पूजयामि। यमाय नमः कर्णौ पूजयामि। सर्वरोगापहारकाय नमः चक्षुषी पूजयामि। वृष्टिकर्त्रे नमः ललाटं पूजयामि। वृष्टि हर्त्रे नमः मूर्द्धानं पूजयामि।। सर्वकामफल प्रदाय नमः। शिखाम् पूजयामि।

मंगल का धूप दीप नैवेद्य फल आदि से पूजन कर जल भर रक्त चन्दन, रक्त पुष्प लाल अक्षत फल आदि रख घुटनें अवनी होकर अर्घ्यं दें-

भूमिपुत्र महातेजः स्वेदोद्भव पिनाकिनः।
श्रयोऽर्थी त्वां प्रपन्नोऽहं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥
प्रसीद देव देवेश विघ्नहारिन् धरात्मज।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं मम शान्तिप्रदो भव॥
रक्तप्रवाल संकाश जपाकुसुम सन्निभम्।
महीसुत महाबाहो गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

अर्घ्य देकर पूर्वोच्चारित मंगल के 21 नामों का उच्चारण करते हुए इक्कीस परिक्रमा करते हुए इक्कीस बार साष्टांग प्रणाम करें। खादिर अंगार से तीन रेखा बनावे तथा निम्न मंत्रों द्वारा बायें पैर से मार्जन करें -

अंगारक मही पुत्र भगवान् भक्तवत्सल।
त्वां नमस्यामि मे ऽशेषे ऋणमाशु विनाशय॥
ऋणरोगादि दारिद्र्य पापहृद्रपमृत्यवः।
भयक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥
ऋण दुःख विनाशाय पुत्र सन्तान हेतवे।
मार्जयाम्यसिता रेखास्तिस्त्रो जन्मसमुद्भव॥
दुःख दौर्भाग्य नाशाय सुख सन्तान हेतवे।
कृतं रेखात्रयं वामपादेन मार्जयाम्यहम्॥

प्रार्थना :-

ऋण हर्त्रे नमस्तुभ्यं दुःख दारिद्र्य नाशक।
सुख सौभाग्य धनदो भव मे धरणी सुत॥
ग्रहराज नमस्तेऽस्तु सर्वकल्याण कारक।
प्रसादात्तव देवेश सदा कल्याण भाजन॥

देव दानव गन्धर्वयक्षराक्षस पन्नगाः।
प्राप्नुवन्ति शिवं सर्वे सदापूर्ण मनोरथाः॥
प्रसादं कुरु मे भौम सौभाग्यं मंगलप्रद।
बाल कुमारो यस्तु स भौमः प्रार्थितो मया॥
उज्जयिन्यां समुत्पन्न नमो भौम चतुर्भुज।
भरद्वाज कुले जात शूल शक्तिगदाधर॥

भौमदान सामग्री तिल गुड़ मिश्रित इक्कीस लड्डू दक्षिणा सहित ब्राह्मणों को देकर प्रार्थना करें।

मंगलाय नमस्तुभ्यं सर्व मंगलदायक।
वायनेन च सन्तुष्टः कुरुमे त्वं मनोरथान्॥

पूजनोपरान्त हवन कार्य करें गणपत्यादि देवताओं को निम्न मंत्र से 108 आहुति देवें -

ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपा ꣳ रेता ꣳ सिजिन्वति॥ स्वाहा॥

भौम के 21 नामों से प्रत्येक को आठ-आठ आहुति देवें। अन्य आवाहित देवताओं की भी आहुति देकर यज्ञ कार्य पूर्ण कर 21 ब्राह्मणों का पूजन कर उनको गुड़ मिश्रित तिल चूर्ण रक्त वस्त्र दक्षिणा सहित कलश देवें।

प्रार्थना करें :-

मंगलः प्रति गृह्णाति मंगलो वै ददाति च।
मगलस्तारकोभाभ्यां मंगलाय नमो नमः॥

आचार्य को व्रत की सम्पूर्ति हेतु कलश युक्त प्रतिमा रक्त वर्ण गोदान सोपस्कर शैय्या दान देवें। ब्राह्मणों को भोजनादि से प्रसन्न कर आशीर्वाद ग्रहण करें।

॥ इति भौम व्रतोद्यापनम् ॥

मंगलवार के व्रत की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरवर कांपे। रोग दोष जाके निकट न झांके॥
अंजनी पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥
अंजनी पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥
दे बीड़ा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। लाय संजीवन प्राण उबारे॥
पैठि पाताल तोरि जम कारे। अहिरावण की भुजा उखारे॥
बाएं भुजा असुर संहारे। दाहिने भुजा संत जन तारे॥
सुर नर मुनि आरती उतारें। जै जै जै हनुमान उचारें॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई॥
जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै॥

॥ मंगल कवचम् ॥

शिखायां मङ्गल पातु भूमिपुत्रश्च मूर्धनि।
ललाटे ऋण हर्ताच चक्षुषोश्च धनप्रदः॥१॥
स्थिरासनः श्रोत्रयो श्चमहाकायश्च नासिके।
आस्यदन्तोष्ठ जिह्वासु सर्वकर्मावरोधकः॥ २॥
हनौ मे लोहितः पातु लोहिताक्षश्च कण्ठके।
स्कन्धयोरुभयो रक्षेत्सामगानां कृपाकरः॥३॥
धरात्मजो भुजौपातु कुजौ रक्षेत्कर द्वयम्।
भौमो मे हृदयं पातु भूतिदस्तु तथोदरे॥४॥
भूमिनन्दनो नाभौ तु गुह्येत्वङ्गारकोऽवतु।
उरू मम यमो रक्षेज्जान्वो रोगापहारकः॥५॥

जंघयोर्वृष्टिकर्ता च अपहर्ताच गुल्फयोः।
पादांगुष्ठौच गुल्फौच सर्वकामफलप्रदः॥६॥
शक्तिर्मे पूर्वतो रक्षेच्छूलं रक्षेच्च दक्षिणे।
पश्चिमेच धनुः पातु उरते च शरस्तथा॥७॥
ऊर्ध्वं पिण्डाननः पातु अधस्तात्पृथिवी मम्।
एवन्यस्तशरीरोऽसौ चिन्तयेद्भूमि नन्दनम्॥८॥

॥ इति मंगलकवचम ॥

॥ भौम स्तोत्र ॥

ध्यानः-

असृजयरुणवर्णं रक्तमाल्याङ्ग रागं।
कनक कमलमालामालिनं विश्वन्द्यम्।
अतिललित कराभ्यां विभ्रतं शक्तिशूले।
भजतधरणिसूनुं मङ्गलं मङ्गलानाम्॥

ध्यान कर भौम मंत्र अग्निमूर्द्धादिव अष्टोतरशत जपकर भौम गायत्री पाठ करें।

भौम गायत्री :-

अङ्गार काय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि।
तन्नो भौम प्रचोदयात्॥

भौम स्त्रोत पाठः-

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिराशनो महाकाय सर्वकर्मावरोधकः॥१॥
लोहितो लोहिताक्ष श्च सामगानां कृपा करः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥२॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकाम फलप्रदा॥३॥

एतानि कुजनामानि नित्यं य प्रयतः पठेत्।
ऋणंन जायते तस्य सन्तानं वर्द्धते सदा।।४।।
एकविंशतिनामानि पठित्वातु दिनांतके।
रूपवान् धनवानश्चैव जायतेनात्र संशयः।।५।।
एककालं द्विकालं वा यः पठेत्सु समाहितः।
एव कृर्तेन सन्देहो ऋणं हित्वा सुखीभवेत्।।६।।

प्रार्थना :-

धरणी गर्भ संभूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम्।
कुमारं शक्ति हस्तंच मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।७।।

।। इति भौम स्तोत्रम ।।

।। बुधवार व्रत ।।

लक्ष्मी धृति पुष्टि तुष्टि और कान्ति प्राप्ति के लिए बुध वार का व्रत किया जाता है। विशाखा नक्षत्र बुध ग्रहण कर व्रत प्रारम्भ करने से घर में लक्ष्मी की अपार वृद्धि होती है-

येन लक्ष्मीर्धृतितुष्टि पुष्टिः कान्तिश्चजायते।
विशाखासु बुधं ग्राह्यसप्तनक्तान्यथाचरेत्।।

बुध ग्रह के दोष में बुध ग्रह का व्रत अत्यन्त ही फलदायी है। सोने का बुध बनाकर कांसे के वर्तन में हरे वस्त्रों से आच्छादित कर बुध का पूजन किया जाता है।

बुध को प्रातः उठकर स्नानादि से निवृत होकर हरे रंग के वस्त्र पहन बुध का पूजन करना चाहिए। बुध पूजन के लिए हरित वस्त्र कांस्य मूंगदाल, हाथी दांत, सुवर्ण पन्ना, जया, पुष्प और कर्पूर आदि सामग्री लाकर बुध का पूजन करें।

।। बुध व्रतोद्यापनम् ।।

ध्यान :-

बुधं त्वं बोधजनो बोधदः सर्वदानृणाम्।
तत्त्वावबोधं कुरु ते सोम पुत्र नमो नमः।।

आवाहन :-

ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सᳬं सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युतरास्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

बुध का पूजन आसन पाद्य अर्घ्य आचमन स्नान पंचामृत शुद्धस्नान वस्त्र आचमन यज्ञोपवीत गन्ध, अक्षत, पुष्प धूप दीपक नैवेद्य दक्षिणा से पुरुष सूक्त द्वारा पूर्ण कर प्रार्थना करें:-

प्रार्थना :-

प्रियङ्गु कालिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्य सौम्य गुणापेतं तं बुधप्रणमाम्यहम्।।

पूजन के बाद बुध व्रतोद्यापन हेतु हवन कार्य पूर्ववत कर बुध वैदिक मंत्र द्वारा 108 आहुतियां देवें:-

ॐ उद्‌बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते सᳬं सृजेथामयंच। अस्मिन्त्सधस्ते अध्युतरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।स्वाहा।।

यज्ञ कार्य पूर्ण कर बुध की दान सामग्री प्रतिमा सहित आचार्य को दें आशीर्वाद ग्रहण करें।

बुधवार की आरती

आरती युगलकिशोर की कीजै। तन मन न्यौछावर कीजै।।
गौरश्याम मुख निरखन लीजै। हरि का स्वरूप नयन भरि पीजै।।
रवि शशि कोटि बदन की शोभा। ताहि निरिख मेरो मन लोभा।।
ओढ़े नील पीत पट सारी। कुंजबिहारी गिरिवरधारी।।
फूलन की सेज फूलन की माला। रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाला।।

कंचनथार कपूर की बाती। हरि आए निर्मल भई छाती॥
श्री पुरुषोत्तम गिरिवरधारी। आरती करे सकल ब्रज नारी॥
नन्दनन्दन बृजभान किशोरी। परमानन्द स्वामी अविचल जोरी॥

॥ बुध स्तोत्रम् ॥

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः।
प्रियंगु कालिका श्यामः कंजनेत्रो मनोहरः॥१॥
ग्रहोपमो रोहिण्ये नक्षत्रेशो दयाकरः।
गुरुद्धकार्य हन्ता च सौम्यो बुद्धि विवर्धनः॥२॥
चन्द्रात्मजो विष्णु ज्ञानीज्ञो ज्ञानिनायक।
ग्रहपीड़ाहरो दार पुत्रधान्य पशु प्रदः॥३॥
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदो गुणी वत्सलः।
पंचविशतिनामानि बुधस्यै तानियः पठेत्॥४॥
स्मृत्वा बुधं सदातस्य पीडाः सर्वा विनश्यति।
तद्दिनेवा पठेद्यस्तु लभतेस मनोगतिम्॥५॥

॥ इति बुध स्तोत्रम् ॥

॥ बुध कवचम् ॥

बुधस्तु पुस्तक धरः कंकुमस्यसमद्युतिः।
पीताम्बर धरः पातु पीतमाल्यानु लेपनः॥१॥
कटिंच पातुमे सौम्यः शिरोदेश बुधस्तथा।
नेत्रै ज्ञानमयः पातु श्रोत्रे पातु निशाप्रियः॥२॥
घ्राणं गन्धप्रिय पातु जिह्वा विद्याप्रदोमम।
कंठं पातु विधो पुत्रो भुजा पुस्तक भूषणः॥३॥
वक्षः पातु वरांगश्च हृदयं रोहिणी सुतः।
नाभिं पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः॥४॥

जानुनी रौहिण्येय श्च पातु जंघेऽखिलप्रदः।
पादौ मे बोधन पातु पातु सौम्याऽखिलंवपु॥५॥
एताद्धि कवचं दिव्यं सर्वपाप प्रणाशनम्।
सर्वरोग प्रशमनं सर्वदुःख निवारणम्॥६॥
आयुरारोग्य धनदं पुत्रपौत्र प्रवर्धनम्।
यः पठेच्छ्रयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत्॥७॥

॥ इति बुध कवचम् ॥

॥ बृहस्पतिवार व्रत ॥

अनुराधा नक्षत्र युक्त बृहस्पतिवार से व्रत प्रारंभ कर सात मास या सोलह मास व्रत कर उद्यापन करना चाहिए। बृहस्पति व्रत करने से किये सब पाप नष्ट हो जाते हैं। यह व्रत हर प्रकार से कल्याणकारी है-

एतदव्रतं महापुण्यं सर्व पाप हरं शिवम्।
तुष्टि पुष्टि करं नृणां गुरु वैकृत नाशनम्॥

गुरु दोष होने पर गुरुवार का व्रत अत्यन्त फलदायी है। सोने के पात्र में बृहस्पति की स्वर्ण प्रतिमा स्थापित कर पीताम्बर पीत यज्ञोपवीत पादुका छत्र उपानह और कमण्डलु से सुशोभित कर कंकुमलेपन कर धूपदीप फल चन्दन आदि से पूजन करना चाहिए। गुरुवार को स्नानादि से निवृत होकर पीत वस्त्र पहनने चाहिए। गुरु पूजन के लिए अश्व सुवर्ण खाण्ड पुष्पराग हरिद्रा पीतवस्त्र पीलाधान्य नमक पीत पुष्प शक्कर और मोदक आदि से गुरु का पूजन करना चाहिए।

॥ बृहस्पति व्रतोद्यापनम् ॥

ध्यान :-

धर्मशास्त्रार्थ तत्त्वज्ञ ज्ञानविज्ञान पारग।
विबुधार्तिहराचिन्त्य देवाचार्य्य नमोऽस्तुते॥

आवाहन :-

ॐ बृहस्पति अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात् तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ उपयाम गृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिबृर्हस्पतये त्वा॥

गुरु का पूजन आसन पाद्य अर्घ्य आचमन स्नान पंचामृत शुद्धस्नान वस्त्र आचमन यज्ञोपवीत गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य दक्षिणा से पुरुष सूक्त द्वारा पूर्ण कर प्रार्थना करें :-

प्रार्थना :-

देवानांच ऋषीणांच गुरुं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकस्यतंनमामि बृहस्पतिम्॥

गुरु पूजनोपरांत गुरु व्रतोद्यापन हेतु हवन कार्य पूर्ववत् कर गुरु के वैदिक मंत्र द्वारा 108 आहुतियां देवें:-

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु यद्दीदवयच्छवस ऋतप्रजात् तदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम्। उपयाम गृहीतोऽसि बृस्पतये त्वैष ते योनि बृहस्पतये त्वा॥स्वाहा॥

हवन कार्य पूर्ण कर गुरु दान सामग्री प्रतिमा सहित आचार्य को देकर ब्राह्मणों को सन्तुष्ट कर आशीर्वाद ग्रहण करें।

बृहस्पतिवार की आरती

जय जय आरती राम तुम्हारी। राम दयालु भक्तहितकारी॥ टेक॥
जनहित प्रगटे हरिव्रतधारी। जन प्रहलाद प्रतिज्ञा पारी॥
द्रुपदसुता को चीर बढ़ाओ। गज के काज पयादे धायो॥
दस सिर छेदि बीस भुज तोरे। तैंतीसकोटि देव बंदि छोरे॥
छत्र लिए सर लक्ष्मण भ्राता। आरती करत कौशल्या माता॥
शुक शारद नारदमुनि ध्यावैं। भरत शत्रुघन चंवर ढुरावैं॥
राम के चरण गहे महावीरा। ध्रुव प्रहलाद बालिसुर वीरा॥
लंका जीति अवध हरि आए। सब सन्तन मिलि मंगल गाए॥
सीय सहित सिंहासन बैठे रामा। सभी भक्तजन करें प्रणामा।

।। बृहस्पति स्तोत्रम् ।।

बृहस्पति सुराचार्यो दयावाञ्छुभ लक्षणः।
लोकत्रय गुरु श्रीमान् सर्वतः सर्वदो विभुः।।१।।
सर्वेशः सर्वदा तुष्टः सर्वांगः सर्वपूजितः।
अक्रोधनो मुनिश्रेष्ठो नीतिकर्ताजगप्रियः।।२।।
विश्वात्मा विश्वकर्ता च विश्वयोनिरयोनिजः।
भुभुर्वः स्वः पिताचैव भर्ताजीवो महाबलः।।३।।
पंचविशंति नामानि पुण्यानि शुभदानि च।
प्रातरुत्थाय यो नित्यं कीर्तयेत् सुसमाहितः।।४।।
विपरीतोऽपि भगवान् पीतस्तत्र बृहस्पतिः।
नन्दगोपगृहे यच्च विष्णुना परिकीर्तितिम्।।५।।
यः पठेत्तुगुरुस्तोत्रं चिरजीवी न संशय।
गो सहस्रफलं पुण्यं विष्णुर्वचनमब्रवीत्।।६।।
बृहस्पतिः सुराचार्यः सुरासुरसुपूजितः।
अभीष्ट फलदः श्रीमान् शुभ ग्रह नमोऽस्तुते।।७।।

।। इति बृहस्पति स्तोत्रम् ।।

।। बृहस्पति कवचम् ।।

अभिष्ट फलदं देव सर्वज्ञं सुरपूजितम्।
अक्षमालां धरं शान्तं प्रणमामि बृहस्पतिम्।।१।।
बृहस्पतिः शिरः पातु ललाटं पातु मे गुरुः।
कर्णौ सुरगुरुः पातु नेत्रेमेऽभीष्ट दायकः।।२।।
जिह्वां पातु सुराचार्यो नासांमे वेद पारगः।
मुखं मे पातु सर्वज्ञो कण्ठं मे देवता गुरु।।३।।
भुजावांगिरसः पातु करौ पातु शुभ प्रदः।
स्तनौ मे पातु वागीश कुक्षिं मे शुभ लक्षणः।।४।।

नाभिं देव गुरुपातु मध्यं पातु सुखप्रदः।
कटिं पातु जगद्वूर्ध ऊरू में पातु वाक्पतिः।।५।।
जानुजंघे सुराचार्यो पादौ विश्वात्मकस्तथा।
अन्यानि यानि चांगानि रक्षेन्मे सर्वतो गुरु।।६।।
इतेतत्कवचं दिव्यं त्रिसंध्यं यं: पठेन्नरः।
सर्वान्कामान् वाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्।।७।।

।। इति बृहस्पतिकवचकम् सम्पूर्णम्।।

।। शुक्रवार व्रत ।।

शुक्रवार के दिन ही शुभ मुर्हुत में चन्द्र तारा अनुकूल समय में शुक्रवार का व्रत प्रारम्भ करना चाहिए शुक्र बार व्रत करने से नेत्र ज्योति बढ़ती है तथा समस्त पाप क्षय को प्राप्त होते हैं। शुक्र का दोष होने पर अथवा शाकिनी आदि के उपद्रव भूत-वेताल के भय दुःस्वप्न अवस्था आने पर शुक्र व्रत अत्यन्त ही लाभकारी है। शुक्र की स्वर्ण प्रतिमा का पूजन कांस्य वाली थाली में किया जाता है। श्वेत वस्त्र चावल घी हीरा परिमल श्वेत अश्वः श्वेत पुष्प, दूध, दही से शुक्र का पूजन तथा दान किया जाता है।

शुक्रवार को नित्य कर्म आदि कर श्वेत वस्त्र पहन शुक्र का पूजन करना चाहिए। श्रावण शुक्रवार के दिन यदि कोई इस व्रत को करता है तो वह बड़े-बड़े भोगों को प्राप्त कर शिवलोक में निवास करता है-

व्रतं करोति या नारी नरोवापि शुचिव्रतः।
भुक्त्वा भोगांश्च विपुलानन्ते शिवपुरं व्रजेन्।।

इस व्रत के प्रभाव से व्रती के घर सन्तान धन और विद्या की कमी नहीं रहती इसलिए शुक्रवार का व्रत धारण अवश्य करना चाहिए।

।। शुक्रवार व्रतोद्यापनम् ।।

ध्यान :-

मृगालकुन्देन्दुपयोजसुप्रभं पीताम्बरं प्रसृतमक्षमालिनम्।
समस्त शास्त्रार्थ निधिं महांतं ध्यायेत्कविंवांच्छितमर्थ सिद्धये।।

आवाहन:-

अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ॐ शुक्रमन्ध स इन्द्र सेन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु।।

शुक्र का पूजन आसन पाद्य अर्घ्य आचमन स्नान पंचामृत शुद्धस्नान वस्त्र आचमन यज्ञोपवीत गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा फल द्वारा पुरुष सूक्त से पूर्ण कर प्रार्थना करें:-

प्रार्थना :-

हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परम गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

शुक्र का पूजन का शुक्र व्रतोद्यापन हेतु अग्नि स्थापना कर हवन कार्य कर शुक्र के वैदिक मंत्र द्वारा 108 आहुतियां देवें।

ॐ अन्नात् परिस्रुतोरसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानॐशुक्रमन्धस इन्द्रसेन्द्रिय मिदंपयोऽमृतं मधु।।

यज्ञ के अन्य कार्य पूर्ण कर शुक्र की सामग्री शुक्र प्रतिमा सहित आचार्य को देकर आशीष ग्रहण करें।

।। इति शुक्रवार व्रतोद्यापनम् ।।

शुक्रवार की आरती

आरती लक्ष्मण बाल जती की। असुर संहारन प्राणपति की ।।टेक।।
जगमग ज्योति अवधपुरी राजे। शेषाचल पर आप विराजे।।
घंटाताल पखावज बाजै। कोटि देव आरती साजै।।
क्रीटमुकुट कर धनुष विराजै। तीन लोक जाकि शोभा राजै।।

कंचन थार कपूर सुहाई। आरती करत सुमित्रा माई॥
प्रेम मगन होय आरती गावैं। बसि बैकुण्ठ बहुरि नहीं आवैं॥
भक्ति हेतु हरि लाड़ लडावैं। जब घनश्याम परम पद पावैं॥

॥ शुक्रस्तोत्रम् ॥

नमस्ते भार्गवः श्रेष्ठ दैत्य दानव पूजित।
वृष्टिरोधप्रकर्त्रे च वृष्टिकर्त्रे नमो नमः॥१॥
देवयानिपितस्तुभ्यं वेदवेदांग पारग।
परेण तपसा शुद्ध शंकरो लोक सुन्दर॥२॥
प्राप्तोविद्यां जीवनाख्यां तस्मै शुक्रात्मने नमः।
नमस्तस्मै भगवते भृगुपुत्राय वेधसे॥३॥
तारामण्डलमध्यस्थ स्वभासाभासितांवर।
यस्योदये जगत्सर्वं मंगलार्ह भवेदिह॥४॥
अस्तं यास्ते ह्यरिष्टस्यातस्मै मंगल रूपिणे।
त्रिपुरावासिनो दैत्यान् शिववाण प्रपीडियान्॥५॥
विद्यायाऽजीवयच्छुक्रो नमस्ते भृगु नन्दन।
ययातिगुरवे तुभ्यं नमस्ते कविनन्दन॥६॥
बलिराज्य प्रदो जीवस्तस्मै जीवात्मने नमः।
भार्गवाय नमस्तुभ्यं पूर्वगीर्वाण वंदित॥७॥
जीव पुत्राय यो विद्यां प्रदातस्मै नमो नमः।
नमः शुक्राय काध्याय भृगु पुत्राय धीमहि॥८॥
नमः कारण रूपाय नमस्ते कारणात्मने।
स्वराजमिमं पुण्यं भार्गवस्य महात्मनः॥९॥
यः पठेच्छ्रुणयाद्वापि लभते वांछितं फलम्।
पुत्रकामो लभेद! पुत्रान् श्री कामो लभते श्रियम्॥१०॥
राज्यो कामो लभेद् राज्यं स्योकामः स्त्रियमुत्तमम्।
भृगुवारे प्रयत्नेन पठितव्यं समाहितैः॥११॥

अन्यवारे तु होरायां पूजयेद् भृगुनन्दनम्।
रोगार्तोमुच्यते रोगात् भयार्तो मुच्यते भयात्॥१२॥
यद्यत्प्रार्थयते जन्तुस्तत्त प्राप्नोति सर्वदा।
प्रातःकाले प्रकर्तव्या भृगुपूजा प्रयत्नतः॥
सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नुयाच्छिव सन्निधिम् ॥१३॥

॥ शुक्र कवचम् ॥

ॐ शिरोमे भार्गवपातु भालं पातु ग्रहाधिपः।
नेत्रे दैत्यगुरोपातु श्रोत्रे मे चन्दन द्युतिः॥१॥
पातु मे नासिका काव्यो वदनं दैत्यवंदितः।
जिह्वा मे चोशनाः पातु कण्ठं श्रीकण्ठभक्तिमान्॥२॥
भुजौतेजोनिधिः पातु कुक्षिं पातु मनो व्रजः।
नाभिं भृगुसुतः पातुमध्यं पातु महीप्रियः॥३॥
कटिं मे पातु विश्वात्मा ऊरुमे सुरपूजितः।
जानू जाड्याहरः पातु जंघे ज्ञानवतां वरः॥४॥
गुल्फौ गुणनिधिः पातु पातु पादौ बरांवरः।
सर्वाण्यंगानि मे पातु स्वर्णमालां परिष्कृतः॥५॥
य इदं कवचं दिव्यं पठति श्रद्धयान्वितः।
न तस्य जायते पीडा भार्गवस्य प्रसादतः॥६॥

॥ इति शुक्रकवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ शनिवार व्रत ॥

श्रावण के शनिवार के दिन शनि की प्रीति हेतु शनिवार का व्रत प्रारम्भ करना चाहिए। स्त्री या पुरुष कोई भी शनिवार का व्रत करके सब पापों से छूटकर अभिष्ट को प्राप्त करता है। इस व्रत के प्रभाव से ब्राह्मण वेद ज्ञाता क्षत्रिय को राज्य वैश्य को धन तथा शूद्र को सुख की प्राप्ति होती है। इस व्रत करने वाले

कन्या चाहने वाले को कन्या, पुत्र चाहने वाले को पुत्र, काम चाहने वाले को काम, तथा मोक्षार्थी उत्तम गति को प्राप्त होते हैं।

ब्राह्मणो वेद सम्पूर्णः क्षत्रियो राज्यमाप्नुयात्।
वैश्यस्तुलभतेवित्तं शूद्रः सुखमवाप्नुयात्॥
कन्यार्थी लभते कन्या मोक्षार्थी लभते गतिम्।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो ग्रहलोकं स गच्छति॥

जन्म लग्न एवं वर्ष लग्न में यदि शनि दूषित हो तो शनिवार का व्रत करना चाहिए। शनिवार के दिन प्रातः सुगन्धित तेल से स्नान कर नित्यकर्म से निवृत्त हो जहां पीपल का वृक्ष हो अथवा घर पर स्वर्ण निर्मित पीपल के पास सर्वतो भद्र बनाकर गणेशादि देवताओं का पूजन कर लौह शनि का पूजन करें शनिवार व्रत के दिन शनि पूजन के लिए नीलमहिष, कालावस्त्र, लोहा तिल, तेल माष कृष्ण पुष्प सोना आदि सामग्री रख धनुषाकार मण्डल बनाकर लोहे की बनी हुई भैंसे पर चढ़ी हाथों में दण्ड और पाश लिये हुए शनिश्चर की मूर्ति स्थापित कर पूजन करें।

॥ शनिवार व्रतोद्यापनम् ॥

संकल्प :-

गणेशादि देवताओं का पूजन करके संकल्प करें।

अद्यैत्यादि० मम समस्त रोग परिहारार्थं दुःख दौर्भाग्य निरसन पूर्वकं अतुल सुख-पुत्र-पौत्र धन-धान्य आदि अभिवृद्धि द्वारा आचरित श्री शनैश्चर व्रतोद्यापनं करिष्ये।

ध्यान :-

नीलाजनं समाभासं रविपुत्र यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसंभूतं शनिवमावाहयाम्यहम्॥

आवाहनः-

ॐ शं नो देवीरमिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं यो रभि स्रवन्तु नः॥

शनि का पूजन पुरुष सूक्त से करें अथवा नाम मंत्र द्वारा पूजन करें:-

ॐ कृष्णाय नमः आवाहयामि।
ॐ नीलाय नमः आसनं समर्पयामि।
ॐ श्वेत कण्ठाय नमः पाद्यं समर्पयामि।
ॐ नील मयूखाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।
ॐ नीलोत्पलाय नमः आचमनं समर्पयामि।
ॐ नील देहाय नमः स्नानं समर्पयामि।
ॐ कुब्जाय नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि।
ॐ शनैश्चराय नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।
ॐ दीप्यमान जटाधराय नमः वस्त्रं समर्पयामि।
ॐ पुरुष गात्राय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
ॐ स्थूलरोम्णे नमः अलंकारान् समर्पयामि।
ॐ नित्याय नमः गन्धं समर्पयामि।
ॐ नित्यधूर्ताय नमः अक्षतान् समर्पयामि।
ॐ सदातृप्ताय नमः पुष्पं समर्पयामि।
ॐ मन्दाय नमः धूपम् समर्पयामि।
ॐ निस्पृहाय नमः दीपं दर्शयामि।
ॐ तामसाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि।
ॐ नीलोत्पलाय नमः आचमनं समर्पयामि।
ॐ कृष्ण वपुषे नमः करोद्वर्तनम् समर्पयामि।
ॐ दीर्घ देहाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि।
ॐ मन्दगतये नमः दक्षिणां समर्पयामि।
ॐ ज्ञान नेत्राय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

ॐ सूर्य पुत्राय नमः नमस्करोमि।

पूजन कर शनि के दश नाम से प्रार्थना करनी चाहिए।

कोणस्थ पिङ्गलो बभ्रु कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्लादेन संस्तुतः।।
एतानि शनि नामानि जपेदश्वत्थ सन्निधौ।
शनैश्चर कृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति।।
नमः कृष्णाय नीलाय शिति कण्ठ निभाय च।
नमः पुरुष गात्राय स्थूलरोम्णे नमो नमः।।

पीपल पूजन :-

मूलतो ब्रह्म रूपायमध्यतो विष्णु रूपिणे।
अग्रतः शिव रूपाय अश्वत्थाय नमो नमः।।

अश्वत्थ का पूजन पुरुष सूक्त से कर सात प्रदक्षिणा करे।

ध्यान देने योग्य बात है कि पीपल वृक्ष की पूजा स्पर्श शनिवार को ही होता है। अन्यवार का स्पर्श करने से मनुष्य दरिद्री होता है-

अश्वत्थपूजास्पर्शेन कर्तव्या शनिवासरे।
अन्यवारेऽश्वत्थसङ्गाद्दरिद्रो जायते नरः।।

(सनत्कुमार संहिता)

अग्नि स्थापित कर हवन कार्य प्रारम्भ कर आवाहित देवताओं को आहुति देकर शनि मंत्र से 108 आहुतियां देवें :-

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपोभवन्तु पीतये।
शं यो रभि स्रवन्तु नः।।

अन्य देवताओं को आहुति देकर शनि के दान, द्रव्य नील महिष काला वस्त्र, लोहा, तिल तेल माष कृष्ण पुष्प सोना आचार्य को देकर सात ब्राह्मणों को तिल मिश्रित उड़द भोजन से सन्तुष्ट कर आशीष ग्रहण करें।

।। इति शनिवार व्रतोद्यापनम् ।।

शनिवार की आरती

आरती कीजै नरसिंह कुंवर की।
वेद विमल यश गाऊँ मेरे प्रभुजी।।
पहली आरती प्रहलाद उबारे।
हिरणाकुश नख उदर विदारे।।
दूसरी आरती वामन सेवा।
बलि के द्वारे पधारे हरि देवा।।
तीसरी आरती ब्रह्म पधारे।
सहसबाहु के भुजा उखारे।।
चौथी आरती असुर संहारे।
भक्त विभीषण लंक पधारे।।
तुलसी को पत्र कंठ हीरा।
हरषि-निरखि गावे दास कबीरा।।

पीड़ा दूर करने के लिए शनि के दस नाम

कोणस्थ पिङ्गलो बभ्रु कृष्णौरौद्रौऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चर मन्दः पिप्लादेन संस्तुतः।।
एतानि दशनामाति जपदेश्वत्थ सन्निद्यौ।
शनैश्चर कृतापीडा न कदाचिद्भविष्यति।।

कोणस्थ, पिंगल, बभ्रु, कृष्ण, रौद्र, अन्तक, यम, सौरि, शनैश्चर, मन्द पिप्पलाद संस्तुत शनि देव के इन नामों को पीपल के पास जपें उसे कभी भी शनैश्चर की पीड़ा न होगी।

।। शनैश्चर स्तोत्रम् ।।

ग्रहराज सूर्य पुत्र दशरथकृत इस स्तोत्र के पाठ से प्रसन्न होते हैं। पाठ करने वाले की पीड़ा शनिदेव हर लेते हैं। जन्म, लग्न, वर्ष लग्न तथा साढ़े साती या जब शनि विपरीत हो तो अवश्य इस स्तोत्र का पाठ करना लाभकारी सिद्ध होता है।

दशरथ उवाच :-

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठ निभाय च।
नमः पुरुष गात्राय स्थूलरोम्णे नमो नमः॥१॥
नमो नीलमणी ग्रीव नीलोत्पल निभाय च।
नमो नित्यं क्षुधार्ताय ह्यतृप्ताय नमो नमः॥२॥
नमः कालाग्नि रूपाय कृतान्ताय नमो नमः।
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय करालि ने॥३॥
नमस्ते सर्व भक्षाय कलिमुख नमोऽस्तुते।
सूर्य पुत्र नमस्तेऽस्तु काश्यपाय नमो नमः॥४॥
नमो मन्दगते तुभ्यं कृष्ण वर्ण नमोऽस्तुते।
तपसा दग्ध देहाय नित्यं योग रताय च॥५॥
ज्ञान नेत्र नमस्तेस्तु कश्यपात्मज सूनवे।
तुष्टो ददासि राज्यं च रुष्टो हरसि तत् क्षणात्॥६॥
देवासुर मनुष्याश्च पशुपक्षि महोरगाः।
त्वया विलोकताः सर्वे दैन्यमाशु व्रजन्ति ते॥७॥
शक्रादयः सुराः सर्वे मुनयः सप्त तारकाः।
स्थान भ्रष्टा भवन्त्येते त्वया दृष्टिविलोकिताः॥८॥
देशाश्च नगर ग्रामा द्वीपाश्चैव द्रुमास्तथा।
त्वया विलो किताश्चैव विनाशं यान्ति मूलतः॥९॥
प्रसादं कुरु मे सौरे वरार्थं त्वामुपागतः।
एवं स्तुतास्तदा सौरिर्ग्रहराज महाबलः॥१०॥
अब्रवीच्च शुभं वाक्यं हृष्ट रोमा स भास्करिः।

शनिरुवाचः-

तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र स्तवेनानेन सुव्रत॥११
दास्यामि ते वरं भद्रं निश्चयाद्रघुवंशज॥

दशरथ उवाच :-

अद्य प्रभृति पिंगाक्षं पीडाकार्या न ते मम॥१२॥
जगत्रये त्वयानाथ पीडिते दुःखिते जनः॥
तस्मा जगदत्रयं देव रक्षणीयं त्वयानघ॥१३॥

शनिरुवाच :-

ग्रहाणामहयेको हिमिदधीना ग्रहाः सदा।
स्तवेन तव तुष्टोऽहं पीडानच करोम्यहम्॥१४॥

॥ इति शनैश्चर स्तोत्रम ॥

दशरथ उवाच :-

कोणोंऽन्तको रौद्र यमोऽथ वभ्रुः कृष्णः शनिः पिंगल मन्दसौरिः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय ॥१॥
सुरासुराः किंपुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्व विद्याधर पन्नगाश्च।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥२॥
नरानरेन्द्रा पशवो मृगेन्द्रा वन्या श्च ये कीट पतंग भृंगाः।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥३॥
देशा श्च दुर्गाणि वनानियत्र सेनानिवेशाः पुरपत्तनानि।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थि तेन तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥४॥
तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानेर्लोहेन नीलाम्बर दानतो वा।
प्रीणाति मंत्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥५॥
प्रयागकूले यमुना तटे वा सरस्वती पुण्य जले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मैनमः श्री रविनन्दनाय॥६॥
अन्य प्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे सनरः सुखी स्यात्।
गृहाद्गतो योन पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥७॥
स्रष्टास्वयं भूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकि।
एकस्त्रिधा ऋग्यजुःसाममूर्तिस्तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥८॥
शन्यष्टकंयः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रै पशुबान्धवैश्च।
पठेतु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदंते॥९॥

॥ इति दशरोक्त शनिस्तोत्रम ॥

।। शनि कवचकम् ।।

ब्रह्मोवाच :-

श्रृणुध्वंमृषयः सर्वे शनिपीडाहरं महत्।
कवचं शनि राजस्य सौरेरिदमनुत्तमम्।।१।।
कवचं देवतावासं व्रजपंजर संज्ञकम्।
शनैश्चर प्रीतिकरं सर्व सौभाग्य दायकम।।२।।
ॐ श्री शनैश्वरः पातु भालं मे सूर्य नन्दनम्।
नत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णो यमानुजः।।३।।
नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भाष्कर सदा।
स्निग्धकण्ठश्च मे कण्ठं भुजोपातु महाभुजः।।४।।
स्कधौ पातु शनिश्चैव करौपातु शुभ प्रदः।
वक्षः पातु यमः भ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा।।५।।
नाभिं ग्रहपतिः पातु मंदः पातुकटिं तथा।
ऊरु यमांतक पातु यमो जानु युगं तथा।।६।।
पादौ मंदगतिः पातु सर्वाङ्गं पातु पिप्पलः।
अऽगोपाऽगानि सर्वाणि रक्षन्मे सूर्यनन्दनः।।७।।
इतेतत्कवचं दिव्यं पठेत्सूर्य सुतस्य यः।
न तस्य जायते पीड़ा प्रीतो भवति सूर्यजः।।८।।
व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा।
कलत्रस्थो गतो वाऽपि सुप्रीतस्थु सदा शनिः।।९।।
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्म द्वितीयगे।
कवचं पठतो नित्यं न पीडा जायते क्वचित्।।१०।।
इतेतत्कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मिता पुरा।
द्वादशाष्टमजन्मस्थदोषान्नाशयते सदा।।
जन्मलग्नस्थितान्दोषन्सर्वान्नाशयत प्रभुः।।११।।

।। इति शनैश्चर कवचम् ।।

।। यज्ञ कुण्ड पूजा ।।

यजमान यज्ञ कुण्ड के पश्चिम भाग में बैठकर प्राणायाम कर तिल जल हाथ में लेकर संकल्प करें-

पूर्वोक्त गुण विशेषण विशिष्ठायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक यज्ञ (ग्रहमख) व्रतोद्यापन कर्मणि कुण्ड पूजनम्, मेखला कण्ठ पूजनम्, नाभि पूजनम्, अग्निस्थापनमहं करिष्ये।

यज्ञ कुण्ड गोबर से लीपकर फिर पञ्चगव्य से यज्ञ कुण्ड का प्रोक्षण करे-

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिवमातरः।। तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः।।

दाहिने हाथ से यज्ञ कुण्ड का स्पर्श कर आवाहन करें।

आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्म विनिर्मितम्।
शरीरं यच्च ते दिव्यं अग्निधिष्ठानमद्‌भुतम्।।

यज्ञ सिद्धि हेतु हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करे-

ये च कुण्डे स्थिता देवा कुण्डाङ्गे याश्च देवता।
ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञ सिद्धिं मुदान्विता।।
हे कुण्ड तव रूपं तु रचितं विश्वकर्मणाः।
अस्माकं वाच्छितां सिद्धिं यज्ञ सिद्धि ददस्व च।।

कुण्ड के मध्य में विश्वकर्मा की पूजा करे-

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रंमकृणोरवध्यम्। तस्मैः विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।। विश्वकर्मणे नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्य च समर्पयामि।

पूजन कर प्रार्थना करें।

अज्ञानाद् ज्ञानतो वापि दोषा ये खननोद्‌भवाः।
नाशाय त्वखिलांस्तांस्तु विश्वकर्मन् नमोऽस्तु ते।।

मेखला की पूजा के क्रम में चार अंगुल ऊँची चौड़ी ऊपर की मेखला को श्वेत अक्षतों से अलंकृत कर विष्णु भगवान की पूजा करे-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्र मे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पाꣳ सुरे स्वाहा॥ विष्णवे नमः गंधाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि॥

मध्य की मेखला तीन अंगुल ऊँची व चौड़ी रक्त वर्ण के अक्षतों से अलंकृत कर ब्रह्मा की पूजा करे-

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरुस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽ आवः। सवुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः॥ ब्रह्मणे नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि॥

सबसे नीचे की मेखला दो अंगुल ऊंची व दो अंगुल चौड़ी कृष्ण वर्ण के अक्षतों से अलंकृत कर शिव का पूजन करे-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिवबन्ध-नान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ रुद्राय नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि॥

गौरी पूजन हेतु एक सुपारी को मौली बांधकर पूजन करें-

ॐ अम्बे ऽ अम्बिके ऽ अम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम्॥ गौर्ये नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।

कुण्ड योनि पूजन निम्न मंत्र से करे-

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि मा त्वा हिँ सीन्मा माहि ꣳ सीः। कुण्ड योन्ये नमः। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि॥

प्रार्थयेत्-

सेवन्ते महतीं योनिं सिद्धाः देवर्षि मानवा।
चतुरशीति लक्षाणि पन्नागाद्याः सरिसृपाः॥
पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि।
योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्ति हेतुका॥
मनोभवयुता देवी रतिसौख्य प्रदायिनी।
मोहयित्री सुराणां च जगद्धात्रि नमोऽस्तुते॥

यज्ञ कुण्ड में नीले रंग के चावलों से सजाकर कण्ठ में रुद्र का पूजन करे-

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा ऽ अधः क्षमाचराः तेषा ङ्ं सहस्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि॥ कण्ठे रुद्राय नमः॥ गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना :-

जीवनं सर्व जन्तूनां स्रगादिस्थानमुत्तमम्।
उत्तमांगस्य चाधारं कण्ठं पूजयाम्यहम्॥

नाभि पूजन :-

ॐ नाभिर्मे चितं विज्ञानं पायुर्मेऽपचति र्भसत्। आनन्द नन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः॥ नाभ्यै नमः नाभि का पूजन गन्ध अक्षतपुष्प धूप दीपक नैवेद्य से कर देवें।

यज्ञकुण्ड के नैर्ऋत्य कोण में वास्तुदेव का आवाहन करे-

विशन्तु भूतलेनागाः लोकपालाश्च सर्वतः।
कुण्डे नैर्ऋत्य तिष्ठन्तु आयुर्वलकराः सदा॥

वास्तु का पूजन मंत्र :-

ॐ वास्तोस्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥

वास्तुपुरुषाय नमः गंधाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना :-

पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञरक्षादि हेतवे।
त्वां विनानार्चनं सिद्धेद्यज्ञादानादिषु क्वचित्॥

यज्ञकुण्ड की चारों दिशाओं में चारों वेदों का पूजन करे-
ॐ ऋग्वेदं स्थापयेद् पूर्वे यजुर्वेदञ्च दक्षिणे। पश्चिमे सामवेदं च उत्तरे च अथर्वणम्॥ चतुर्वेदेभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।

ईशान में रुद्र कलश स्थापन कर पूजन करे-

ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि। रुद्रकलश देवताभ्यो नमः॥ पूजन कर लेवें।

॥ अथ पंच भू संस्कार ॥

पहले यज्ञ मण्डप को कुशा से साफ कर देवें। फिर एक हाथ लम्बा कुशा लेकर उससे यज्ञकुण्ड में बुहरा देवें-
हस्तमात्र परिमितां चतुरस्रां भूमिं कुशैः परिसमूह्य तानैशान्यां परित्यज्य॥ कुशा को ईशान में छोड़कर गोमयेनोपलिप्य। यज्ञकुण्ड को गोबर से लीप देवें।

स्रुव दाहिने हाथ में लेकर श्रुव के मूल से पश्चिम से पूर्व की तरफ अंगूठा तर्जनी (प्रादेश मात्र) लम्बाई की तीन रेखा खीचें-
स्रुव मूलेन प्राङ्मुखं प्रादेशमात्रं उत्तरोत्तर क्रमेण त्रिरुल्लिख्य॥

रेखाओं से अनामिका अंगुष्ठा से कुछ मिट्टी उठाकर ईशान कोण में फेंक दें-

उल्लेखन क्रमेण अनामिका अंगुष्ठाभ्यां मृद्मुद्धृत्य ऐशान्यां दिशि स्थापयेत्।

यज्ञ कुण्ड में जल के छींटे देवें-

ततः उदकेन अभ्युक्षणम्।।

ये पाँचों भू संस्कार जहाँ अग्नि स्थापन हो वहां करने चाहिये।

।। अथ अग्निस्थापनम् ।।

वामहस्तानामिकया भूमि स्पृशन् ताम्रपात्रेण (कांस्यपात्रेण वा) आहृतमग्निं स्वाभिमुखं निदध्यात्। तद्रक्षार्थकिंचिन्नियुज्य आनीताग्निपात्रे अक्षतादि प्रक्षेपः।।

बायें हाथ की अनामिका से भूमि का स्पर्श करें। तांबे या कांसी के पात्र में अग्नि मंगाकर सामने रखें। अग्निरक्षार्थ किसी को नियुक्त कर यज्ञकुण्ड में अग्नि डालकर अग्निवाले पात्र में अक्षातादि डाल देवें।

योनि मार्ग से अग्नि को यज्ञ कुण्ड में स्वाभिमुख स्थापन करते हुए यह मंत्र बोलें-

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवाँ 2 ऽ आ सादयादिह।। ततोऽग्नि प्रदक्षिणा कृत्य पुष्प चन्दन ताम्बूल पूगीफल द्रव्य वस्त्राण्यादाय अग्नेर्दक्षिणतो वास्त्रतरणं कल्पयित्वा ब्राह्मणं पाद प्रक्षालन गन्ध माल्यादिभिसम्पूज्य।।

पुनः अग्नि की परिक्रमा कर दक्षिण में ब्रह्मा को वरण कर पूजन कर लेवें-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्याऽ उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ततः प्रणीतापात्रं वारण काष्ठमयं द्वादशांगुलौच्यं चतुरंगुल मध्य खातं पद्माकृतिं पुरतो निधाय जलेनापूर्य

कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुख मवलोक्य अग्नेरुतरतः कुशोपरि निदध्यात्।

यजमान प्रणीतापात्र यज्ञीय काष्ट का बना हुआ बारह अंगुल प्रमाण ऊँचा एवं चार अंगुल गहरा (पद्माकृती) जल से भरकर कुशाओं से ढककर ब्रह्मा का मुख देखकर (या ब्रह्मा को दिखाकर) अग्नि के उत्तर की ओर कुशा पर रख देवे।

ततः बर्हिषां परिस्तरणम्। बर्हिर्नाम्नामेकाशीति दर्भदलानां अथवा यावल्लब्धानां चतुर्भागं कृत्वा यथा एकेन दर्भेण शून्य हस्तो न भवति।

यहां 81 दर्भ दल या जितनें उपलब्ध हो उनके चार भाग करे एक कुशा हाथ में रहे जिससे हाथ खाली न रहे।

प्रथम भागमादाय अग्नेयादीशानान्तम्।

पहले भाग को अग्नि कोण से ईशान कोण तक रखें।

द्वितीय भागमादाय ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्॥

दूसरे भाग को ब्रह्मा से अग्नि कोण तक रखें।

तृतीय भागमादाय नैर्ऋत्याद् वायव्यान्तम्॥

तीसरें भाग की नैर्ऋत्य से वायव्य तक रखे।

चतुर्थभागमादाय अग्नितः प्रणीता पर्यन्तम्॥

चतुर्थ भाग लेकर अग्नि से प्रणीता तक अग्रभाग पूर्व की ओर रखते हुए बिछा दें।

॥ अथ पात्रसादनम् ॥

ततो अग्नेरुतरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थ कुशत्रयं पवित्र करणार्थं साग्रमनन्तगर्भकुशपत्र द्वयं, प्रोक्षणी पात्रं आज्यस्थाली, चरुस्थाली, सम्मार्जनकुशापञ्च, उपयमनकुशाः सप्त, समिधस्तिस्त्रः प्रादेशमात्रःस्त्रुवखादिर, आज्यं षट्पञ्चाशदुत्तरशतद्वय मुष्ट्यवछिन्न तण्डुल पूर्णपात्रं दक्षिणा (सहित) पवित्रच्छेदन कुशानां पूर्व पूर्वक्रमेण एतान्यासादनीयानि॥

इसके बाद अग्नि कुण्ड के पश्चिम दिशा अथवा उत्तर की ओर से निम्न सामग्रियाँ रखे-

पवित्र तोड़ने की तीन कुशा, पवित्र करने की दो कुशा, प्रोक्षणी पात्र, घी का पात्र, चरु पात्र, समार्जन की 5 कुशा, उपयमन की 7 कुशा प्रादेश मात्र लम्बी 3 समिधा, खैर का स्रुवा, चावलों से भरा हुआ दो सौ छप्पन मुष्टि प्रमाण का पूर्ण पात्र एवं दक्षिणादि रख देवें।

अथ त्रिभिः पवित्रच्छेदन कुशै द्वै पवित्रे छित्वा सपवित्र करेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणी पात्रे निधाय (पश्चात्) प्रोक्षणी पात्रं वामहस्ते धृत्वा दक्षिण हस्तानामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रं गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम्॥

अब तीन पवित्र छेदन कुशाओं से दो पवित्रियों को (तीन आंटे देकर) काटकर तीन को त्याग देवे और दो को फिर दायें हाथ में रखकर इसी कुशा से प्रणीता का जल तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डाले, फिर प्रोक्षणी पात्र को बांये हाथ में लेकर दाहिने हाथ के अनामिका अंगुष्ठ से पवित्र पकड़कर प्रोक्षणी के जल को तीन बार ऊपर उछाले।

ततः प्रोक्षणी पात्रं आकाशस्थ प्रणीतोदकेनापूरयेत्। भूमौ पतति चेतदा प्रायश्चितं गोदानम्॥

फिर प्रोक्षणी पात्र को प्रणीता के जल से भर लेवें, किन्तु जल को पृथ्वी पर न गिरने दें। यदि गिर जाय तो गोदान प्रायश्चित करे।

ततः प्रोक्षणी जलेनयथासादितवस्त्वनुरुपं सेचनम्।

इसके बाद प्रोक्षणी के जल से सब सामग्री पर छीटें देवे।

ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निदध्यात्॥

अब अग्नि व प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र में रख देवें।

आज्यास्थाल्यामाज्यनिर्वापः। आज्यस्थाली में घी भरे। **चरूपात्रे चरु प्रक्षेपः।** चरु पात्र में चरु बना लें।

आज्यऽविश्रयणम्। घी को गर्म कर देवें।

ततो ज्वलतृणंमादाय आजस्योपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः।। एक तृण जला हुआ लेकर प्रदक्षिणा क्रम से घी के ऊपर घुमाकर अग्नि में डाल देवे।

ततो दक्षिण पाणिनां श्रुवमादायाधोमुखं मग्नौ त्रिस्तापियित्वा वामहस्ते कृत्वा सम्मार्जनकुशानाम ग्रेरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः श्रुवमूर्ध्वमुखं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः पूर्ववत्प्रताप्य दक्षिणतो निधाय।।

दाहिने हाथ में श्रुव लेकर श्रुव का मुंह अग्नि में तीन बार तपाकर वामहस्त में रखकर पांच सम्मार्जन कुशा के अग्रभाग से श्रुव के अग्रभाग को मध्य से मध्य को अधोभाग से श्रुव के अधोभाग को साफ कर पुनः श्रुव को तीन बार तपा लेवे। श्रुव का आवाहन कर श्रुव पर मौली बांध लेवें-

आवाह्वयाम्यहं देवं स्त्रुवं शेवधिमुत्तमम्।
स्वाहाकार स्वधाकारवषट्कार समन्वितम्।।

श्रुव पूजन कर के दाहिनी तरफ रख देवें।

ततः आज्योत्तारणम् अवेक्षणम् अपद्रव्य निरसनं च।

फिर घी उतार कर देखें कोई खराब चीज पड़ी हो तो उसे निकाल देवे।

ततः उत्थाय उपयमनकुशानादाय वामहस्ते धृत्वा अग्नि पर्युक्षणं कृत्वा उत्तिष्ठन् मनसा प्रजापतिं धात्वा तूष्णोमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्त्रः क्षिपेत्।।

इसके बाद उठकर सात उपयमन कुशा को बायें हाथ में रख तथा तीनों समिधा (प्रादेशमात्र) लेकर घी में भिगोकर ब्रह्मा जी का मन में ध्यान कर चुपचाप उनको (समिधा) अग्नि में छोड़ दें।

ततः उपविश्य सपवित्र प्रोक्षण्युदकेन अग्निं पर्युक्ष्यपवित्रे

प्रणीता पात्रे निधाय पातित दक्षिण जानुः कुशेन ब्रह्मणाऽन्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ स्त्रुवेण आज्याहुतिं जुहुयात्।।

फिर बैठकर पवित्र से प्रोक्षणी के जल को अग्नि के चारों तरफ छिड़क दें। पवित्र को प्रणितापात्र में रख दें फिर दाहिनी जंघा को नवाकर ब्रह्मा को कुशा से स्पर्श कर (ब्रह्मा से यजमान तक मौली रखकर) श्रुव से अग्नि में घी की आहुति दें।

आहुति चतुष्टये स्त्रुवावशिष्ट घृतस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः। अग्नेयथादैवतं चतुर्थ्यन्तं स्वाहान्तं नममेति त्याग च कुर्यात्।।

प्रथम चार आहुतियों में श्रुव के शेष घी को प्रोक्षणी पात्र में त्याग देवे। देवता के नाम के आगे चतुर्थी विभक्ति लगाकर 'स्वाहा' व 'न मम' से प्रोक्षणी में शेष घी का त्याग करें।

।। अथ घृताहुतिः ।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये, इदं न मम।
ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय, इदं न मम।
ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये, इदं न मम।
ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय, इदं न मम।

बिना अन्वारब्धमेकाहुतिः। (ब्रह्माजी से मौली हटाकर एक आहुति देवें।)

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये, इदं न मम।

(महाव्याहृतिहोमः)

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये, इदं न मम।
ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे, इदं न मम।
ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय, इदं न मम।
एतामहाव्याहृतयः।।

ॐ यथा वाण प्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।
तद्वद्देवोपघातानां शान्तिर्भवति वारिका।।

शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु यत्पापं रोगम्, अकल्याणम् तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।। पढ़कर कर आचार्य यजमान के सिर के ऊपर जल के छींटे देवें।

।। अथ अग्नि पूजनम् ।।

ध्यानम् :-

ॐ चत्वारि श्रृङ्गात्रयो ऽ अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो ऽ अस्य त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां२ऽ आविवेश।। ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने वैश्वानर शांण्डिल्य गोत्र साण्डिला सित देवलेति त्रिपुरान्वित भूमिमातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङ.मुख मम संमुखो भवः। अग्नि को प्रतिष्ठापित कर अग्निजिह्वा

पूजन करे :-

ॐ कनकायै नमः। ॐ रक्तायै नमः। ॐ कृष्णायै नमः। ॐ उद्‌गारिण्यै नमः। ॐ उत्तरमुखे सुप्रभायै नमः। ॐ बहुरूपायै नमः। ॐ अतिरिक्तायै नमः। अग्नये नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यंदक्षिणां च समर्पयामि।।

।। अग्नि प्रार्थना ।।

अग्नि प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुतासनम्।
हिरण्यवर्णममलं समृद्धं विश्वतोमुखम्।।
त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तार्चिरमित द्युते।
आगच्छ भगवन् अग्ने यज्ञेऽस्मिन् सन्निधौभव।।

॥ हवन संकल्प ॥

हवन हेतु यव आदि सामग्री तथा जल लेकर संकल्प करे- **विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तेक देशे गंगा यमुनयोर्मध्ये (अथवा अमुकतीरे) बौद्धावतारे अमुक नाम संवत्सरे श्री सूर्ये अमुकायने अमुक ऋतौ महामांगल्य प्रदेमासोत्तमे मासे अमुकायने अमुककरणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते श्री सूर्ये अमुकाराशिस्थिते देव गुरौ शेषेषु यथायथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण गण विशेषणविशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्त) ऽहं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा श्री यज्ञपुरुष प्रीत्यर्थं सर्वपापक्षयपूर्वक-दीर्घायुर्विपुल धनधान्यपुत्रपौत्राद्यवच्छिन्न सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मि कीर्तिलाभ सदाभीष्ट सिद्ध्यर्थं अमुक व्रतोद्यापन कर्मणि ग्रह होम अधिदेवता प्रत्याधि देवता पञ्चलोकपाल देवता दशदिक्पाल देवता अमुक प्रधान देवता सहितानां च प्रीतये ब्राह्मण द्वारा यव तिल धान्याज्य शर्करादि द्रव्यैस्तत्त देवता मंत्रैर्यक्ष्ये।**

॥ अथ सर्वप्रायश्चितसंज्ञक पंचवारुणहोमः ॥

ॐ त्वन्नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठोवह्नितमः$\mathring{\text{}}$शोशुचानो विश्वा द्वेषा $\mathring{\text{}}$सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्॥
ॐ स्वाहा॥ इदमग्निवरुणाभ्यां न मम॥१॥
ॐ त्वं नो ऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ।

अव यक्ष्व नो वरुण ँ रराणो वीहि मृडीक ँ सुहवो न ऽएधि॥
ॐ स्वाहा॥ इदंमग्निवरुणाभ्यांनमम॥२॥
ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्चसत्वमित्वमयाऽ असि।
अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ स्वाहा॥ इदमग्नये न मम॥३॥
ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितताः महान्तः।
तेभिर्नो अद्यसवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्योमरुद्भ्यः स्वर्केभ्य स्वाहा॥४॥
ॐ उदुतम वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ँ श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽ अदितये स्याम स्वाहा।
इदं वरुणायादितये न ममः॥५॥ अत्रोदकस्पर्शः॥

इति प्रयाश्चित (पंचवारुणी) होमः॥

॥ ततोगणपति प्रीत्यर्थ होमः ॥

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे। प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे। निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे। वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासिगर्भ धम्॥ॐ स्वाहा॥ वरुणाय नमः स्वाहा॥ ॐ कार देवताभ्योनमः स्वाहा॥ श्रियैनमः स्वाहाः॥ अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहा॥ षोडश-मातृकाभ्यो नमः स्वाहा॥

।। अथ नवग्रहाणां होमः ।।

ग्रहों का होम ग्रह समिधा को घी में भिगोकर करे–

(अर्कम्) ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ स्वाहा॥1॥

(पलाशम्) ॐ इमं देवा ऽ असपत्न ॐ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय। इममुख्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽ एष वोऽमी राजा सोमो ऽ स्माकं ब्राह्मणाना ॐ राजा॥ ॐ स्वाहा॥२॥

(खदिरम्) ॐ अग्नि मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम्। अपा ॐ रेता ॐ सि जिन्वति॥ ॐ स्वाहा॥३॥ (अपामार्गम्)

ॐ उद् बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्ठापूर्ते स ॐ सृजे थामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽ अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ स्वाहा॥४॥ (अश्वत्थम्)

ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्योऽ- अर्हाद्द्युमद्वि भाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात् तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ स्वाहा॥५॥ (उदुम्बरम्)

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ॐ शुक्रमन्धस ऽ इन्द्र स्येन्द्रिय मिदं पयोऽ मृतं मधु॥ ॐ स्वाहा॥६॥ (शमीम्)

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शय्योरभि स्त्रवन्तुनः॥ ॐ स्वाहा॥७॥ (दूर्वाम्)

ॐ कयानश्चित्रऽ- आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ स्वाहा॥८॥ (दर्भम्)

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ ॐ स्वाहा॥९॥

।। अथ नवग्रहाधिदेवतानां होमः ।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। ॐ स्वाहा।।१।।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम। इष्णन्निषाणां मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मइषाण।। ॐ स्वाहा।।२।।

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य वाहूऽ उपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन्।। ॐ स्वाहा।।३।।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। ॐ स्वाहा।।४।।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः सवुध्न्याउपमाअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमशतश्चव्विवः।। ॐ स्वाहा।।५।।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवेहवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ स्वाहा।।६।।

ॐ असि यमोऽस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि।। ॐ स्वाहा।।७।।

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि।
समापोऽअद्भि रग्मतसमोषधीभिरोषधीः।। ॐ स्वाहा।।८।।

ॐ इन्धानास्त्वा शत ँ हिमाद्युमन्त ँ समिधीमहि। वयस्वन्तो वयस्कृत ँ सहस्वन्तः सहस्कृतम्। अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासो ऽ अदाभ्यम्। चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।। ॐ स्वाहा।।९।।

।। इतिनवग्रहाधिदेवतानां होमः ।।

।। अथ नवग्रह प्रत्यधिदेवतानां होमः ।।

ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे।
देवां२ऽ आसादयादिह।।ॐ अग्नये स्वाहा।।१।।

ॐ अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तिष्वश्वा भवत वाजिनः। देवीरापो यो वऽऊर्मिः प्रतूर्तिः ककुन्मान् वाजसास्तेनायं वाजꣳसेत्।।
ॐ अद्भ्यः स्वाहा।।२।।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छानः शर्म सप्रथाः।। ॐ पृथ्व्यै स्वाहा।।३।।
ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढ़मस्य पा ँ सुरे स्वाहा।। ॐ विष्णवे स्वाहा।।४।।
ॐ सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमंपिव वृत्रहा शूर विद्वान्।
जहि शत्रूँ २ ऽरप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः।। ॐ इन्द्राय स्वाहा।।५।।
ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः। पूषासिघर्मायदीष्व।। ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा।।६।।
ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽ अस्तु व्वय ँ स्याम पतयो रयीणाम्।। ॐ प्रजापतये स्वाहा।।७।।
ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवि मनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा।।८।।
ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्येन ऽआवः।
स वुध्न्याऽउपमाऽ अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विव्वः।।
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।९।।

।। अथ पंचलोकपाल देवता होमः ।।

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासिगर्भधम्।। ॐ गणपतये स्वाहा।।१।।
ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके नमानयतिकश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।। ॐ दुर्गायै स्वाहा।।२।।
ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीरूपयाहि यज्ञम्।।
वायो ऽ अस्मिन्त्सवने मादयस्य यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः। ॐ वायवे स्वाहा।।३।।
ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरि क्षस्य हविरसि स्वाहा।
दिशः प्रदिश ऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः।। ॐ आकाशाय स्वाहा।।४।।
ॐ यवांकशा मधुमत्यश्विनासूनृतावती तया यज्ञम्मिमिक्षताम्।।
ॐ अश्विभ्याम् स्वाहा।।५।।

।। इति पंचलोकपाल होमः ।।

।। अथ दश दिक्पालानां होमः ।।

ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ इन्द्राय स्वाहा।।१।।

ॐ त्वन्नोऽ अग्ने तव देवपायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेष ँ रक्षमाणस्तव व्रते।। ॐ अग्नये स्वाहा।।२।।

ॐ यमायत्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। ॐ यमाय स्वाहा।।३।।

ॐ असुन्वन्तमयजमान मिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। ॐ निर्ऋतये स्वाहा।।४।।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ स मा न आयुः प्रमोषीः।। ॐ वरुणाय स्वाहा।।५।।

ॐ आ नो नियुद्भि शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरूप याहि यज्ञम्। वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ वायये स्वाहा।।६।।

ॐ वय ँ सोमव्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।। ॐ कुवेराय स्वाहा।।७।।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ॐ ईशानाय स्वाहा।।८।।

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः श ँ सते स्तुवते धायि पज्र ऽ इन्द्रजेष्ठा ऽ अस्माँ२ ऽ अवन्तु देवाः।। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।९।।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।। ॐ अनन्ताय स्वाहा।।१०।।

।। इति दशदिक्पाल होमः ।।

।। सर्वतोभद्र देवता हवनम् ।।

१. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा
२. ॐ सोमाय स्वाहा।
३. ॐ ईशानाय स्वाहा।
४. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
५. ॐ अग्नये स्वाहा
६. ॐ यमाय स्वाहा।
७. ॐ नैर्ऋते स्वाहा
८. ॐ वरुणाय नमः।
९. ॐ वायवे स्वाहा
१०. ॐ अष्टवसुभ्यः स्वाहा।
११. ॐ एकादश रुद्रेभ्यो स्वाहा
१२. द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा।
१३. अश्विभ्या स्वाहा।
१४. ॐ विश्वेदेवेभ्यः स्वाहा।
१५. ॐ पितृभ्यस्वाहा
१६. ॐ यक्षेभ्य स्वाहा।
१७. ॐ भूतनागेभ्य स्वाहा।
१८. ॐ सर्पेभ्य स्वाहा।
१९. ॐ गन्धर्वेभ्यः स्वाहा।
२०. ॐ अप्सरोभ्य स्वाहा।
२१. ॐ स्कन्दाय स्वाहा।
२२. नन्दीश्वराय स्वाहा।
२३. शूलमहाकालाभ्यां स्वाहा।
२४. ॐ प्रजापतिभ्य स्वाहा।
२५. ॐ दुर्गायैनमः।
२६. ॐ विष्णवे स्वाहा।
२७. ॐ पितृभ्य स्वाहा।
२८. ॐ मृत्युरोगेभ्य स्वाहा।
२९. ॐ गणपतये स्वाहा।
३०. ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा।
३१. ॐ पृथिव्यै स्वाहा।
३२. ॐ अदभ्यः स्वाहा।
३३. ॐ सरिदभ्यः स्वाहा।
३४. ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा,
३५. ॐ मेरवे स्वाहा
३६. ॐ गदायै स्वाहा।
३७. ॐ त्रिशूलाये स्वाहा।
३८. ॐ वज्राय स्वाहा।
३९. ॐ शक्तये स्वाहा।
४०. ॐ दण्डाय स्वाहा,
४१. ॐ खड्गाय स्वाहा।
४२. ॐ पाशाय स्वाहा।
४३. ॐ अंकुशाय स्वाहा
४४ ॐ गोतमाय स्वाहा।
४५. ॐ भारद्वाजाय स्वाहा।
४६. ॐ विश्वामित्राय स्वाहा।
४७. ॐ कश्यपाय स्वाहा।
४८. ॐ जमदग्नये स्वाहा।

४९. ॐ वशिष्ठाय स्वाहा। ५०. ॐ अत्रये स्वाहा
५१. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा। ५२. ॐ एन्द्र्यै स्वाहा।
५३. ॐ कौमार्ये स्वाहा। ५४. ॐ ब्राह्मयै स्वाहा।
५५. ॐ चामुण्डायै स्वाहा ५६. ॐ वैष्णव्ये स्वाहा।

॥ इति सर्वतो भद्र होमः ॥

॥ एकलिंगतोभद्र धवनम् ॥

१. ॐ असितांग भैरवाय स्वाहा। २. ॐ रुरु भैरवाय स्वाहा।
३. ॐ चण्ड भैरवाय स्वाहा। ४. ॐ क्रोध भैरवायनमः।
५. ॐ उन्मत भैरवाय स्वाहा। ६. ॐ कपाल भैरवायस्वाहा।
७. ॐ भीषण भैरवाय स्वाहा। ८. ॐ संहारभैरवाय स्वाहा।
९. ॐ भवायस्वाहा। १०. ॐ शर्वार्य स्वाहा।
११. ॐ पशुपतये स्वाहा। १२. ॐ ईशानाय स्वाहा।
१३. ॐ रुद्राय स्वाहा। १४. ॐ उग्राय स्वाहा।
१५. ॐ भीमाय स्वाहा। १६. ॐ महते स्वाहा।
१७. ॐ अनन्ताय स्वाहा। १८. ॐ वासुकये स्वाहा।
१९. ॐ तक्षकाय स्वाहा। २०. ॐ कुलिशाय नम।
२१. ॐ कर्कोटकाय स्वाहा। २२. ॐ शंखपालाय स्वाहा।
२३. ॐ कम्बलाय स्वाहा। २४. ॐ अश्वतराय स्वाहा।
२५. ॐ शूलाय स्वाहा। २६. ॐ चन्द्रमौलिनेनमः।
२७. ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। २८. ॐ वृषभध्वजाय स्वाहा।
२९. ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा। ३०. ॐ शक्तिधराय स्वाहा।
३१. ॐ महेश्वराय स्वाहा। ३२. ॐ शूलपाणये स्वाहा।

॥ इति एक लिंगतोभद्र होमः ॥

।। पुरुष सूक्त हवनम् ।।

विशेष आहुति - जिस देवता या ग्रह का व्रतोद्यापन करना हो उस देवता को उसके मंत्र से खीर आदि की १०८ आहुति देकर फिर सूक्तों का हवन करना चाहिए।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपाँसुरे स्वाहा।। ॐ विष्णवेस्वाहा।। ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। सभूमिँ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशागुंलम्।।१।।

ॐ स्वाहा।। पुरुषऽएवेदँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्व स्येशानो यदन्नेनाति रोहति।।२।। ॐ स्वाहा।।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।३।।ॐ स्वाहा।।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वङ व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि।।४।। ॐ स्वाहा।।

ततोविराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चादभूमिमथोपुरः।।५।। ॐ स्वाहा।।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।६।। ॐ स्वाहा।।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे छन्दाँ सिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।७।।

ॐ स्वाहा।। तस्मादश्वाऽ- अजायन्त ये के चोभयादतः।। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा ज्जाताऽअजावयः।।८।। ॐ स्वाहा।।

तंयज्ञं वर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेनदेवाऽअयजन्त-साध्याऽऋषयश्च ये।।९।। ॐ स्वाहा।।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरुपादाऽउच्येते।।१०।। ॐ स्वाहा।।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् वाहूराजन्यः कृतः। उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँ शूद्रोऽअजायतः।।११।। ॐ स्वाहा।।

चन्द्रमां मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्रद्वायुश्च प्राणश्च

मुखादग्निरजायत॥१२॥ ॐ स्वाहा॥
नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रातथा लोका2ऽअकल्पयन्॥१३॥ ॐ स्वाहा॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥१४॥ ॐ स्वाहा॥
ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअवधनन् पुरुषं पशुम् ॥१५॥ ॐ स्वाहा॥
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥१६॥ ॐ स्वाहा॥
॥ इति पुरुष सूक्त हवनम् ॥

॥ अथ रुद्र सूक्त हवनम् ॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ ॐ स्वाहा॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः। वाहुभ्यामुत ते नमः॥१॥ ॐ स्वाहा॥
या ते रुद्र शिवा तनूरधोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥२॥ ॐ स्वाहा॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ँ सीः पुरुषं जगत्॥३॥ ॐ स्वाहा॥
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ँ सुमनाऽअसत्॥४॥ ॐ स्वाहा॥
अद्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भ्य-न्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव॥५॥ ॐ स्वाहा॥
असौयस्ताम्रोऽअरुणऽउत वभ्रुः सुमंगलः। ये चैन ँ रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषा ँ हेडऽईमहे॥६॥ ॐ स्वाहा॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपाऽअदृश्रन्न-दृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥७॥ ॐ स्वाहा॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽअस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥८॥ ॐ स्वाहा॥

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमु- भयोरात्र्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्तऽइषवःऽपरा ता भगवो वप॥९॥ ॐ स्वाहा॥ f

वज्यं धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो वाणवाँ२ऽउत। अनेशन्नस्य याऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः॥१०॥ ॐ स्वाहा॥

या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते वभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वत-स्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥११॥ ॐ स्वाहा॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथोयऽ इषुधिस्तवारेऽअस्मन्निधेहि तम्॥१२॥ ॐ स्वाहा॥

अवतत्य धनुष्टव ँ सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥१३॥ ॐ स्वाहा॥

नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे उभाभ्यांमुतते नमो वाहुभ्यां तव धन्वने॥१४॥ ॐ स्वाहा॥

मानो महान्तमुत मा नोऽअर्भकं मा नऽउक्षन्तमुत मा न ऽ उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥१५॥ ॐ स्वाहा॥

मा नस्तोके तनये मा न ऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो ऽ अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥१६॥ ॐ स्वाहा॥

॥ इति रुद्र सूक्त हवनम् ॥

॥ अथ श्री सूक्त हवनम् ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म ऽ इषाण सर्वलोकं मऽइषाण॥ ॐ स्वाहा॥ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१॥ ॐ स्वाहा॥

तांम ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥ ॐ स्वाहा॥

अश्वपूर्णारथमध्यां हस्तिनादप्रवोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये। श्रीर्मा देवी जुषताम्॥३॥ ॐ स्वाहा॥

कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।४।। ॐ स्वाहा।।
चन्द्रां प्रभांसा यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्। तां पद्मनेमीं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।५।। ॐ स्वाहा।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्या अलक्ष्मीः।।६।। ॐ स्वाहा।।
उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। ७।। ॐ स्वाहा।
क्षुत्पिपासामलां जैष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।८।। ॐ स्वाहा।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्ठां करीषिणीम्। इश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।९।। ॐ स्वाहा।।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।। ॐ स्वाहा।।
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भ्रम कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।। ॐ स्वाहा।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि चदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।। ॐ स्वाहा।।
आर्द्रांपुष्करिणीं पुष्टिं पिगंला पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१३।। ॐ स्वाहा।।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टीं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१४।। ॐ स्वाहा।।
ताम्य आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्याऽ२ वान्विन्देय पुरुषानहम्।।१५।। ॐ स्वाहा।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।। ॐ स्वाहा।।

।। इति श्री सूक्त हवनम् ।।

॥ अथ अग्निपूजनम् ॥

पूर्णाहुत्या मृडनाम अग्नये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। अग्नि का पूजन कर नौ आहुति घी की दें।

ततः ब्रह्मणान्वारन्धः स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न ममः। ॐ भुव स्वाहा इदं वायवे न ममः। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न ममः।

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य० इदमग्नि वरुणाभ्या०।
ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो० इदमग्नि वरुणाभ्या०।
ॐ आयाश्चाग्नेस्यनभिश० इदमग्नये न ममः।
ॐ येते शतं वरुण ये सहस्रं० इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुदभ्यः स्वर्केभ्यश्च न०।
ॐ उदुतमं वरुणं० इदं वरुणायादित्यायादितये न०।

॥ अथ बलिदानम् ॥

जलाक्षतान्यादाय-ॐ तत्सदद्य अमुकगोत्रः अमुक शर्म्मा वर्म्मा गुप्तो हं कृतस्य अमुक व्रतोद्यापन कर्मणः सांगता-सिद्धर्थ आवाहितदेवताभ्यो बलिदानञ्च करिष्ये। ततः दधि माष तण्डुल पत्रेषु संस्थाप्य तत्समीपे दीपञ्च संस्थाप्य-ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्य साङ्गेभ्य सपरिवारेभ्य सायुधेभ्य सशक्तिका अधिदेवता- प्रत्याधिदेवतागणपत्या-दिपञ्चलोकपाल सहिताः इमं बलिं गृहीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेम कर्तारः शान्तिकर्तारः तुष्टिकर्तारः पुष्टिकर्तारो वरदो भव। अनेन बलिदानेन सूर्यादि ग्रहाः प्रीयन्ताम् नमम॥ नवग्रह वेदी पर बलिदान दे देवें।

।। क्षेत्रपाल बलिदानम् ।।

एकस्मिन् पात्रे आहार चतुर्गुणं द्विगुणं वा माषभक्तदध्योदनं जलपात्रं च निधाय हरिद्रा कुंकुम सिन्दूर कज्जलयुतं चतुर्मुख दीपं कृत्वा क्षेत्रपालाय नमः सम्पूज्य। प्रार्थयेत्-नमोवै क्षेत्रपालत्वं भूतप्रेतगणैः सह। पूजांवलिं गृहाणेदं सौम्यो भवतु सर्वदा।। ततो हस्ते साक्षतजलमादाय-क्षेत्रपाल महावाहो महावलपराक्रम। क्षेत्रणां रक्षणार्थाय वलिनय नमोस्तुते।। क्षेत्रपालाय सांगाय भूतप्रेत पिशाचडाकिनी शाकिनी वेतालादि सपरिवारयुताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं चतुर्मुखं दीपदधिभाषभक्तवलिं समर्पयामि। इति जलमृत्सृज्य, प्रार्थयेत्- भो भो क्षेत्रपाल क्षेत्रं रक्ष वलिं भक्ष मम सकुदुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता शान्ति कर्त्ता पुष्टिकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता वरदो भव।। अनेन वलिदानेन श्री क्षेत्रपाल देवता प्रीयताम् न मम।

।। अथ पूर्णाहुति होम ।।

श्रुवा के ऊपर नारियल रखकर संकल्प कर- फिर उसे अग्नि में डाले **ॐ अद्येत्यादि० देशकालौ संकीर्त्य अमुक व्रतोद्यापन कर्माणि पूर्णतासिद्धये पूर्णाहुतिहोममहं करिष्ये। घृतपूरितनारिकेलोपरि सूत्रवेष्टितं सम्पूज्य। पूर्णाहुत्यै नमः इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य श्रुवपात्रे संस्थाप्य पूर्णाहुतिं जुहुयात् ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।। कवि ँ सम्राजमतिथिञ्ज- नानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।। ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्ज ँ शतक्रतो स्वाहा।। नारिकेल-**

अग्नौप्रक्षिपेत्। ततः घृत धारांदद्यात् ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकाम धुक्षः स्वाहा। घृत धारा अग्नि में डाले। ततः त्र्यायुष करणम्- ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्।। त्र्यायुष निकाल लेवे। पूर्णापात्रदानम्- ॐ अद्यैत्यादिकृतै अमुक व्रतोद्यापन कर्मण इदं तण्डुलपूरितं पूर्णपात्रं सदक्षिणां प्रजापति दैवतं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोचन कृत्वा प्रणीतोदकेने यजमान- शिरस्यभिषिच्य-ॐ सुमित्रिया न ऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।। अथ वर्हि होमः। ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वा गातुमित मनसस्पतऽइमं देव यज्ञ ँ स्वाहा वातेधः स्वाहा।।

।। देवता अग्नि विसर्जनम् ।।

यांतु देवगणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजिता मया।
इष्टकाम प्रसीद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।
ॐ उतिष्ठ ब्रह्मणस्पतेदेवयन्त स्त्वेमहे।
उपप्रयन्तुमरुतः सुदानवऽइन्द्रप्राशूर्भवासच।।
गच्छ गच्छ सुर श्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुतासन।
ॐ यज्ञयज्ञंगच्छयज्ञपतिंगच्छस्वायोनिंगच्छ स्वाहा।।
एषतेयज्ञोयज्ञपतेसहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तंजुषस्व स्वाहा।।
जपच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिद्रं व्रत कर्मणि।
सर्व भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः।।

यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतांयाति सद्योवन्दे तमच्युतम्॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मराणा देव तद् विष्णु सम्पूर्णास्यादिति श्रुति॥

॥ इति देव अग्निविसर्जनम् ॥

॥ शैय्या दान ॥

काष्ठ की शैय्या बनाकर उसके ऊपर गद्दा बिछाकर सुन्दर चद्दर से सजाकर पुष्पों से अलंकृत कर तकिया रजाई पहनने के वस्त्र भोजन बनाने के वर्तन, पहनने के जूते, छाता, दीपक, जलपात्र आदि रख उसके ऊपर स्वर्ण प्रतिमा रख शैय्या के पास उत्तर या पूर्व मुख बैठकर ब्राह्मण पूजन करें। तत्पश्चात गणेश स्मरण कर शैय्या के ऊपर लक्ष्मी नारायण पूजन हेतु संकल्प करें।

संकल्प :

अद्यैत्यादि० अमुकगोत्रोत्पन्नो व्रतोद्यापन सांगता सिद्धये श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं लक्ष्मीनारायण पूजनं शय्या पूजनं च करिष्ये।

संकल्प कर भगवान लक्ष्मी नारायण का पूजन करें-**ॐ सोपकरण शय्यायै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि। पुनः लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः।**

स्वर्ण प्रतिमा में लक्ष्मी नारायण का पूजन पुरुष सूक्त से कर शय्या दान संकल्प करें :-

अद्यैत्यादि अमुक व्रतोद्यापन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं इमां शय्यां सोपस्करां लक्ष्मी नारायण प्रतिमा युतां अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे। ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

तिल जल युक्त अक्षत ब्राह्मण को देवें ब्राह्मण स्वस्ति कहे।

दक्षिणा दान :-

अद्यैत्यादि कृतैतत् सोपकरण शय्यादान कर्मण: प्रतिष्ठार्थं इदं हिरण्यं अमुक गोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणा त्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे। ब्राह्मण दक्षिणा लेकर "स्वस्ति" कह शय्या का स्पर्श करें।

व्रती प्रार्थना करे-

ॐ यथा न कृष्ण शयनं शून्यं सागर जातया।
शय्याममाप्य शून्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि।।

।। इति शय्यादानम् ।।

।। अथ गोदान विधि ।।

यजमान सपपत्नीक पूर्व मुख कर आसन के ऊपर बैठकर ब्राह्मण का पूजन करे-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमत: सुरुचो वेनऽआव:।
सबुध्न्या उपमा ऽअस्य विष्ठा: सतश्च योनिमसतश्यच विव:।।

गन्ध अक्षतादि से पूजन कर, यजमान हाथ में वरण सामग्री लेकर संकल्प करे - **ॐ विष्णु: ३ अद्येहं अमुकगोत्रोऽ मुकराशि सपत्नीक को ऽहम् श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल वाप्तये सकल कामना सिद्धये च कृतैतद् श्री यज्ञ पुरुष प्रीतये गो पूजनं तथा ब्राह्मण वरणं च करिष्ये।** संकल्प कर गो का आवाहन करें-

आवाहनम :-

ॐ इरावती धेनुमती हि भूत ँ सूय वसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसि विष्णवे वेते दाध्यर्थ पृथिवी मभितो मयूखै: स्वाहा।।

आवाहयाम्यहं देवीं गां त्वां त्रैलेक्य मातरम्। यस्याः स्मरण मात्रेण सर्व पापै प्रमुच्यते।। गन्ध अक्षत पुष्प लेकर देवताओं का आवाहन करें- ॐ सवत्सा गवे नमः।। श्रृंग मूलयोः ब्रह्म विष्णुभ्यां नमः।। श्रृङ्गाग्रे सर्व तीर्थेभ्यो नमः।। शिरोमध्ये रुद्राय नमः।। नाशावंशे षण्मुखाय नमः।। कर्णयो अश्विभ्यां नमः।। नेत्रयो शशि भाष्कराभ्यां नमः।। दन्तेषु वायवे नमः।। जिह्वायां वरुणाय नमः।। हुँ कारे सरस्वत्यै नमः।। गण्डयो मास पक्षाभ्यां नमः।। ओष्ठयोः सन्ध्या द्वयाय नमः।। जंघयो धर्माय नमः।। खुरमध्ये गन्धर्वेभ्यो नमः।। पृष्ठे एकादश रुद्रेभ्यो नमः।। सर्व सन्धिषु वसुभ्यो नमः।। श्रोण्यो पितृगणेभ्यो नमः।। अधोगात्रेषु द्वादशादित्येभ्यो नमः। गोमूत्रे गङ्गायै नमः।। गोमये यमुनायै नमः।। क्षीरे सरस्वत्यै नमः।। दध्नि नर्मदायै नमः।। घृते वह्नये नमः।। रोमेषु कोटिदेवभ्यो नमः।। उदरे पृथिव्यै नमः।। स्तनेषु चतुः सागरेभ्यो नमः।।

पाद्यम :- सौरभेयि सर्वहिते पवित्रे पापनाशिनि।
प्रतिगृह्णमया दत्तं पाद्यं त्रैलोक्य वन्दिते।।

अर्घ्यम् :- देहस्था या च रुद्राण्याः शंकरस्य सदाप्रिये।
धेनु रुपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु।।

आचमनीयम् :- या लक्ष्मी सर्व भूतेषु या च देवेष्व वस्थिता।
धेनु रुपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु।।

स्नानम् :- सर्व रूपमये मातः सर्व देव नमस्कृते।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं मयार्पितम्।।

वस्त्रम् :- आच्छादनं मया दतं सम्यक शुद्धंच निर्मलम्।
सुरभिर्वस्त्र प्रदानेन प्रीयातां परमेश्वरी।।

चन्दनम्:- सर्वदेव प्रियंदेवि चन्दनं कुकुंमान्वितम्।
कर्पूरादि समायुक्त गोर्गन्धः प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षतम् :- अक्षतं निर्मलं देवि रक्त चन्दन मिश्रितान्।
गृहाण परमा प्रीत्या गोस्त्वं त्र्यैलोक्यवन्दिताः।।

आभूषणम् :-

स्वर्ण श्रृङ्ग, रौप्य, खुराणि ताम्रपृष्टा, गल भूषणार्थं घण्टाम्, दोहनार्थं कांस्य पात्रं समर्पयामि।।

गौ की शोभा के लिए सोने की सींग, चांदी के खुर, ताम्बे की पीठ, घण्टा, दूध दोहने के लिए कास्य पात्र आदि आभूषण समर्पण कर दें।

पुष्पमाला :-

पुष्पमाला तथा जाति पाटला चम्पकानि च।
पुष्पाणि गृह धेनो त्वं सर्व पाप प्रणाशिनि।।

धूपम् :-

आनन्द कृत सर्व लोकं देवानां च सदाप्रिये।
गोस्त्वं पाहि जगन्माता धूपोऽयं प्रति गृह्यताम्।।

दीपम् :-

साज्यं सद्वर्तिकायुक्तं वह्निनायोजिता मया।
दीपं गृहाण देवेशि त्र्यैलोक्यतिमिरापहम्।।

गोग्रासम् :-

सुरभिस्त्वं जगन्माता नित्यं विष्णुपदेस्थिता।
गोग्रांसं च मया दतं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

।। गोदान संकल्प ।।

श्री पुराण पुरुषोतमस्य तत्सत् पृथिव्यां श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य जम्बूद्वीपे भारतखंडे भारतवर्षे अमुक क्षेत्रे श्री भागीरथ्याः अमुकदिग्विभागे अद्ये ब्राह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमस्य कलियुगस्य प्रथम चर्णे बौद्धावतारेऽमुकनाम्नि संवत्सरेऽयने ऋतौ मासे पक्षे तिथौ वारे नक्षत्रे योगे करणे अमुक गोत्रो ऽमुकोऽहं मम श्रुति स्मृति पुराणोक्तफलावाप्तये ज्ञाताऽज्ञात अनेक जन्मार्जित कायिक वाचिक मानसिक कर्मजन्य पाप क्षयार्थं दुःस्वप्न ग्रहबाधा शान्तिपूर्वकं धन धान्य आयुरारोग्य वृद्ध्यर्थं अमुक व्रतोद्यापने कर्मणी इमां सुपूजितांऽलंकृताम् सवत्सां गां अमुक गोत्रायऽमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

ब्राह्मण को संकल्प देकर यजमान गाय की परिक्रमा कर लेवे।।

।। इति गाय दान ।।

।। अथ आशीर्वाद मंत्रः ।।

ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु।। पयः पृथिव्यां पय ऽओषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम।। विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता वृहस्पतिर्द्देवतेन्द्रोदेवता वरुणो देवता। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः

शान्तिर्विश्वेदेवा: शान्तिब्रह्म शान्ति: सर्वँ शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सामाशान्तिरेधि॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि पराशुव। यदभद्रंतन्नऽआसुव॥ श्री वर्चस्वमायुष्यमारोग्य-माविधत्पवमानम्महीयते। धान्यं धनं पशु बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायु:॥

मन्त्रार्था सफला: सन्तु पूर्णा: सन्तु मनोरथा:। शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्रणां उदयस्तव॥

प्रधान कलश से जल के छीटे देकर ब्राह्मण श्री फल पुष्प आदि यजमान को देवें।

॥ इति आशीर्वाद मंत्र: ॥

॥ इति पं० शिवस्वरूप "याज्ञिक"
संगृहित व्रतोद्यापन रहस्यम् सम्पूर्णम् ॥

 पुस्तकें डाक अथवा कोरियर से मंगायें।

कर्मसिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता

बड़ा बाजार, हरिद्वार फोन-01334-225619

अध्यात्म रामायण-उत्तर रामायण	200	मुहूर्त कल्पद्रुम	150
कृत्तिवास रामायण	750	वेदांग ज्योतिषम्	200
कृत्तिवास रामायण	400	हस्त संजीवन	50
रामावतार चरित	200	नास्त्रेदाम की विचित्र भविष्यवाणियां	50
कम्ब रामायण	1500	अंक विद्या रहस्य	50
श्रीराम विजय	500	हस्तरेखाएं बोलती हैं	50
भानुभक्त रामायण	200	अंकों में छिपा भविष्य	50
गिरधर रामायण	500	भाग्य त्रिवेणी	50
माधव कन्दली रामायण	350	आपकी राशि भविष्य की झांकी	50
कारबि रामायण	100	हस्त परीक्षा	25
रामचरित मानस	300	अंक चमत्कार	25
बैदेहीश बिलास रामायण	350	स्वप्न और शकुन	25
बिलंका रामायण	300	ज्योतिष सीखिये	25
बिलंका रामायण	150	जन्मपत्री स्वयं बनाईये	25
बिचित्र रामायण	300	उलझे प्रश्न सुलझे उत्तर	50
बिचित्र रामायण	150	जातकालंकार भा.टी.	50
जगमोहन रामायण	1500	प्रसव चिंतामणि	50
चन्द्ररामायाण	300	महामृत्युन्जय	50
मानस भारती	300	दाम्पत्य सुख	80
अद्‌भुत रामायण	100	नष्ट जातकम्	80
बाल्मीकि रामायण	1200	भाव मंजरी	80
योगवासिष्ठ	500	फलित विकास भा.टी.	80
यजुर्वेद	550	लघु पाराशरी	50
सामवेद	550	गोचर विचार	50
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता	150	चुने हुए ज्योतिष योग	50
आदि श्री गुरूग्रन्थ साहिब	1800	दशाफल रहस्य	50
श्री गुरुग्रन्थ साहिब हिन्दी टीका सहित	1200	दैवज्ञ वल्लभा	50
जपुजी सुखमनी साहिब	50	प्रश्न ज्ञान	50
वारांज्ञान रत्नावली	275	प्रश्न विद्या	50
कवित्त- सबैये	200	नक्षत्रफल दर्पण	50
कुर्आन शरीफ	350	केरलीय ज्योतिष	50
हरि विजय	300	फलित सूत्र	50
द होली बाइबिल (पुराना विधान)	300	वर्षफल विचार	50
द होली बाइबिल (नया विधान)	300	सर्वार्थ चिन्तामणि भा.टी.	300
मुखाकृति विज्ञान	100	जातक तत्वम्	150
ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री के महत्वपूर्ण सूत्र	150	जातक भूषणम्	200
हस्तरेखाओं का गहन अध्ययन	150	सौन्दर्य लहरी	150
जातक सत्याचार्य	80	रत्न प्रदीप	100
आगम और तन्त्र	100	उत्तर कालामृत	100
तिल-रहस्य एवं हाव-भाव विचार	50	पूर्व कालामृत	100
हस्त रेखाओं द्वारा रोग निर्णय	100	हाथ का अंगूठा	100

सम्पूर्ण पूजन रहस्य भाषा टीका

-ले० शिव स्वरूप 'याज्ञिक'

इस पुस्तक में संध्या पाठ सभी देवी-देवताओं के पूजन, शांति पाठ, संकल्प मंत्र, स्वस्तिवाचन, कलश पूजन, नान्दी मुख श्राद्ध, षोडश मातृका पूजन, नवग्रह पूजन, यज्ञ निर्माण पूजन, विष्णु पूजन, शिव पूजन, दुर्गा न्यास विधान पूजन, सर्वतोभद्र देवता स्थापना, अग्नि स्थापना, वारुणी हवन, रुद्र सूक्त, श्री सूक्त, गोदान आशीर्वाद मंत्र, महा मृत्युंजय जप पूजन, संकट नाशक गणेश स्त्रोत, नवनाग स्त्रोत, शनि स्त्रोत, श्रीराम स्तवन बहुत अच्छे ढंग से दी गयी है। प्रत्येक ब्राह्मण प्रत्येक व्यक्ति के घर मे रखने योग्य उपयोगी पुस्तक आज ही खरीदें। मू०- ४०/-

कर्मकाण्ड षोडश संस्कार रहस्य भा.टी.

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में जीवन में होने वाले सोहल संस्कार-गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोनयन, जातकर्म, षष्ठि महोत्सव, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्रासन, केशाधिवास, चूड़ाकर्म कर्णवेध, विद्यारम्भ, समावर्तन, वाग्दान, षोडश स्तंभ पूजन, विवाह संस्कार आदि को भली प्रकार लिखकर साथ में हिन्दी भाषा का भी प्रयोग कर पुस्तक साधारण विद्वान के लिए भी सरल बन गई है। पुस्तक में गणपत्यादि पंचाग देवताओं के पूजन के साथ संस्कार के मुहूर्तो का भी उल्लेख है। पूजन सामग्री भी हर संस्कार की पुस्तक में लिख दी है जिससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई। विद्यार्थियों, साधारण ब्राह्मणों के लिये तो यह पुस्तक वरदान स्वरूप है। अवश्य ही इस पुस्तक को पास रखने से साधारण विद्वान श्रेष्ठ विद्वान बन जाता है। इसलिए इस पुस्तक को अवश्य मंगाये। मूल्य ८०/-रु०

पितृकर्म समुच्चय अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम् भाषा टीका

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

मनुष्य की मृत्यु के बाद होने वाले अन्तिम संस्कार करने के लिये परम उपयोगी पुस्तक में मृत्यु समय करने योग्य कर्म पिण्ड दान, अस्थि संचय, दश गात्र तथा उनके संकल्प, एकादशाह के पिण्डदान, शैयादान, गोदान, अश्वत्थ पूजन, द्वादशाह के दिन पिण्डदान, शैयादान, मासिक कुंभ पिण्ड दान, गोदान, पितृ तर्पण, तीर्थ श्राद्ध आदि विषयों को दिया गया है। साधारण ब्राह्मण भी इस पुस्तक से सम्पूर्ण पितृकर्म कर सकता है। मूल्य ४० रु०।

गढ़वाल दर्शन

इस पुस्तक में हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून, मसूरी, नैनीताल केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री, यमनोत्री यात्रा की सम्पूर्ण जानकारी महात्म्य और पौराणिक कथायें व आध्यात्मिक महिमा का बड़े सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है तथा साथ ही हेमकुण्ड साहिब की यात्रा, फूलों की घाटी, उत्तराखण्ड के मुख्य दर्शनीय स्थल, कैलाश मानसरोवर यात्रा और प्रमुख स्थानों की दूरियां व ऊँचाईयां भी दी गयी हैं। यह पुस्तक अंग्रेजी में भी उपलब्ध है। प्रत्येक का मूल्य- ३२/- रुपये। मंगवाकर अवश्य पढ़ें।

भारत दर्शन चारों धाम सप्तपुरी यात्रा

इस पुस्तक में भारत के प्रसिद्ध चारों धाम श्री बद्रीनाथ जी, जगन्नाथ जी तथा रामेश्वर धाम सातों पुरियों पूरा विवरण विस्तार से तो दिया ही है साथ में भारत के सारे तीर्थस्थलों, दर्शनीय स्थलों तथा भारत के प्रसिद्ध नगरों का पूरा विवरण भी दिया है जिसे पढ़कर आप घर बैठे ही भारत के दर्शन कर सकते हैं। मूल्य केवल ४० रुपये है।

हिन्दुओं के व्रत व त्यौहार

हिन्दू धर्म में व्रत और त्यौहारों का बड़ा महत्व है। इसी कारण जितने व्रत और पर्व भारतवर्ष में मनाये जाते हैं, शायद ही अन्य किसी और देश में मनाये जाते हों! लेकिन क्या हम इन व्रत और त्यौहारों से भली भांति परिचित हैं? प्रस्तुत पुस्तक में इसी उद्देश्य को पूरा करने के साथ-साथ इसमें परिचय के अतिरिक्त त्यौहारों के विधि-विधान और सम्बन्धित कहानियाँ तथा चित्र भी दिए गये हैं। इसीलिए यह पुस्तक परिवार के लिए सम्भालकर रखने योग्य है। मूल्य-३१/-रुपये

चाणक्य नीति भा.टी. (ज्वालाप्रसाद शास्त्री)

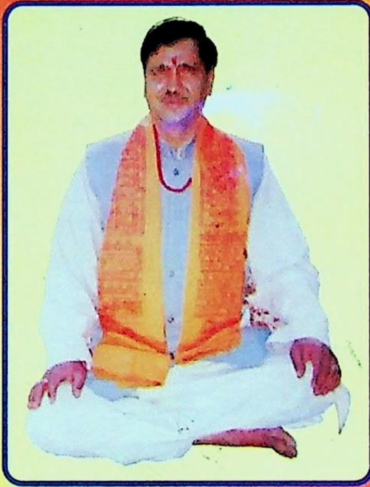
चाणक्य को कौन नहीं जानता, प्रसिद्ध आचार्य चाणक्य प्राचीन पुस्तक भाषा टीका सहित पढ़ने योग्य हैं चाणक्य का जीवन चरित्र भी इस पुस्तक में दिया है। प्रत्येक श्लोक का अर्थ सरल हिन्दी भाषा में दिया है। मूल्य- 20/-

भगवान शंकर 21 अवतार और 12 ज्योतिर्लिंग की कथा   मूल्य 20/-

कर्मसिंह अमर सिंह, बड़ा बाजार, हरिद्वार

श्री गणपति अथर्व शीर्ष भा.टी.	6
श्री राम रक्षा स्तोत्र भाषा टीका	6
श्रीकनकधारा स्तोत्र, लक्ष्मीस्तोत्र भा.टी.	6
चर्पट मंजरी स्तोत्र भा.टीं.	6
श्री गंगा लहरी भा.टी.	6
श्री नारायण कवच भाषा टीका	6
श्री अमोघ शिव कवच भा.टी.	6
अन्नपूर्णा स्तोत्र, अन्नपूर्णा कवच भा.टी.	6
गोरखनाथ चालीसा जाहरवीर चालीसा	10
सूर्य चालीसा सूर्य उपासना सहित	10
सरस्वती चालीसा सरस्वती कवच	10
भैरव चालीसा व बटुक भैरव चालीसा	10
श्री हनुमान सहस्त्रनाम भा.टी.	20
श्री गंगा सहसस्त्रनाम भा.टी.	20
श्री दुर्गा सहस्त्रनाम एवं अन्य स्तोत्र	20
श्री शिव सहस्त्रनाम भाषा टीका	15
श्री गोपाल सहस्त्रनाम भाषा टीका	20
श्री विष्णु सहस्त्रानाम भाषा टीका	15
श्री श्री गोपाल सहस्त्रनामावली	10
श्री शिव सहस्त्रनामावली	10
श्री विष्णु सहस्त्रनामावली	10
रुद्राष्टध्यायी	25
मानसागरी-भा.टी. सहित	100
भृगु संहिता-फलित प्रकाश	150
ताजिक नीलकंठी भा.टी.	100
जातकामरण भा.टी.	100
वृहद पाराशर होराशास्त्र भा.टी.	200
विश्वकर्मा प्रकाश भा.टी.	75
लग्नचन्द्रिका भाषा टीका	40
भारतीय ज्योतिष लाल किताब	120
भारतीय ज्योतिष नेमीचन्द शास्त्री	240
भद्रबाहु संहिता (नेमीचंद शास्त्री)	200
अरुण संहिता लाल किताब (चण्डीगढ़)	500
लाल किताब कष्ट निवारण	144
भारतीय ज्योतिष लाल किताब	153
कर्मविपाक संहिता भाषा टीका	75
श्री वेंकटेश्वर शताब्दिपंचाग 100 साला	600

वृहद होरा चक्र भाषा टीका	30
मुहुर्त चिन्तामणि भा.टी.	60
वृहद हस्तरेखा शास्त्र नारायण श्रीमाली	88
भारतीय ज्योतिष नारायण श्रीमाली	45
अंक ज्योतिष नारायण श्रीमाली	45
अंक दीपिका नारायण श्रीमाली	40
वर्षफल चन्द्रिका नारायण श्रीमाली	40
ज्योतिष योग चन्द्रिका नारायण श्रीमाली	40
कुण्डली दर्पण नारायण श्रीमाली	40
फलित ज्योतिष नारायण श्रीमाली	40
जन्म पत्री रचना श्रीमाली	45
नास्त्रेदमस की विचित्र भविष्यवाणियां	50
अंक विद्या रहस्य	50
हस्त रेखाएं बोलती हैं-कीरो	50
अंकों में छिपा भविष्य-कीरो	50
भाग्य त्रिवेणी-कीरो	50
हस्त संजीवन-कीरो	50
आपकी राशि भविष्य की झांकी	50
हस्त परीक्षा-कीरो	25
जन्मपत्री स्वयं बनाइये	25
अंक चमत्कार-कीरो	25
ज्योतिष सीखिए-कीरो	25
बिना तोड़-फोड़ वास्तुशास्त्र	75
सम्पूर्ण वास्तु शास्त्र	75
वास्तु दोष निवारण	75
पचास वर्षीय पंचाग-देवीदयाल	640
दस वर्षीय पंचाग देवींदयाल •	160
ज्योतिष्ज्ञ तत्त्व (गणित खण्ड)	65
ज्योतिष तत्व फलित-I''	250
ज्योतिष तत्व फलित-II''	250
वर्षफल चन्द्रीका	60
तंत्र मंत्र यंत्र	60
उलझे प्रश्न सुलझे उत्तर	50
फलित विकास	80
जातकलंकार भा.टी.	50
भाव मंजरी - लघु पराशरी	50
प्रसव चिंतामणि	50
नष्ट जातकम	50



पं० शिव स्वरूप "याज्ञिक"

पं० शिव स्वरूप "याज्ञिक"
की अन्य प्रचलित पुस्तकें

- सम्पूर्ण अन्त्येष्टी कर्म रहस्यम् भाषा टीका
- सम्पूर्ण षोडश संस्कार रहस्यम् भाषा टीका
- सम्पूर्ण ग्रह नक्षत्र शान्ति भाषा टीका
- संध्योपासना विधि तर्पण विधि सहित
- सम्पूर्ण पूजन रहस्यम् भाषा टीका
- अदित्य हृदय स्त्रोतम् भाषा टीका
- सम्पूर्ण हवन रहस्यम् भाषा टीका
- दुर्गा अर्चन रहस्यम् भाषा टीका
- शिव अर्चन पद्धति भाषा टीका
- नरसिंह रहस्यम् भाषा टीका
- सम्पूर्ण कवच संग्रह
- कात्यायनी शान्ति

कर्म सिंह अमर सिंह

पुस्तक विक्रेता, हरिद्वार-249401

✆ 01334-225619